सुविचार
हम संसार को गलत पढ़ते हैं और कहते हैं कि वह हमें धोखा देता है।
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi

Ranchi ● Sunday, 05 November 2023 ● Year : 01 ● Issue : 287 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

जान्हवी कपूर ने जूनियर स्टार देवरा...
12

SHARE

सेंसेक्स	:	64,363.78
निफ्टी	:	19,230.60

SARAFA

सोना	:	5,810
चांदी	:	78.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

गाजा की मस्जिदों पर इजराइली हमला
1250 बच्चे समेत 2200 लोग मलबे में दबे

दो हिस्सों में बंटा गाजा, यूएन बोला- एक भी जगह सुरक्षित नहीं बची

जंग का 29वां दिन

AGENCY TEL AVIV : इजराइल-हमास जंग का शनिवार को 29वां दिन था। यूएन का कहना है कि गाजा में कोई भी जगह सुरक्षित नहीं बची है। वहीं, अलजजीरा के मुताबिक, गाजा की हेल्थ मिनिस्ट्री का कहना है कि लगातार हो रही इजराइली बमबारी के कारण यहां 2,200 लोग मलबे में दबे हैं। इनमें 1,250 बच्चे हैं। सेना मस्जिदों पर भी हमला कर रही है। इस बीच तुर्किये ने अपने राजदूत को इजराइल से वापस बुला लिया है। वहीं, अल-अक्सा रेडियो के मुताबिक इजराइल ने हमास चीफ इस्माइल हानिए के घर पर हमला किया है। इस घर में उसका परिवार रहता था लेकिन हमले के वक्त वे वहां थे या नहीं इस बात की जानकारी फिलहाल नहीं मिल सकी है। इधर, सेना ने कहा है कि गाजा अब 2 हिस्सों में बंट गया है। साउथ गाजा में हम मानवीय सहायता पहुंचा रहे हैं। वहां अगर कोई हमास लड़ाका पहुंच रहा है तो उसे मार गिराया जा रहा है। वहीं नॉर्थ गाजा में जंग तेज हो चुकी है। वहां फिलिस्तीनियों की जान को खतरा है। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक इजराइल ने 31 अक्टूबर को गाजा के सबसे बड़े रिफ्यूजी कैंप जबालिया पर 907 किलो के बम दागे थे। एनवाईटी ने घटना से जुड़े फोटो और वीडियो को एनालाइज किया। इस हमले में करीब 195 लोग मारे गए थे। वहीं, अमेरिकी सरकार ने इजराइल से जबालिया कैंप, यूएन स्कूल, अस्पतालों पर किए गए हमले को लेकर जवाब मांगा है।

इजराइल और पश्चिमी देशों को बड़ा झटका देने की जरूरत : हिजबुल्लाह

इजराइल-हमास जंग शुरू होने के बाद लेबनान में हिजबुल्लाह लीडर हसन नसरल्लाह ने शुक्रवार को पहली बार लोगों को संबोधित किया। नसरल्लाह ने कहा- इजराइल और पश्चिमी देशों में मौजूद उसके समर्थकों को बड़ा झटका देने की जरूरत है, ताकि वो हिल जाएं। यह झटका इतना बड़ा होना चाहिए कि कब्जा करने वाले यहूदियों के वॉशिंगटन और लंदन में मौजूद समर्थकों को झकझोरा जा सके। नसरल्लाह ने आगे कहा- अमेरिका और इजराइल जैसी ताकतें कभी हमें दबा नहीं सकतीं। हमास के 7 अक्टूबर के हमले ने इजराइल को दहला दिया। वो इसे हमेशा याद रखेगा।शहीद होने वाले लड़ाकों, बच्चों, पुरुष और महिलाओं को बधाई। वो इस जहान को छोड़कर ऊपर वाले के पास पहुंच गए हैं, और वहां किसी अमेरिका की सल्तनत नहीं है। नसरल्लाह ने कहा कि गाजा में इजराइल के हाथों मरने वालों को जन्नत नसीब हुई है। वो उस जगह पर हैं, जहां कोई इजराइली ऑपरेशन नहीं चल रहा है। अमेरिका, यूएन और कई देश इजराइल से मांग कर रहे हैं कि वो गाजा में फ्यूल भेजने की मंजूरी दे, लेकिन नेतन्याहू ने साफ कर दिया कि इजराइल का ऐसा कोई इरादा नहीं है। उन्होंने कहा- हम गाजा में फ्यूल नहीं जाने देंगे।

बच्चों के अस्पताल पर भी बमबारी

शुक्रवार देर रात इजराइल ने अल-शिफा अस्पताल के पास एम्बुलेंस पर हमला किया। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, इस हमले में 13 लोगों की मौत हुई है। इजराइली सेना ने कहा है कि हमास के लड़ाके इस एम्बुलेंस का इस्तेमाल कर रहे थे। इसके जरिए वो उत्तरी गाजा से निकलने की फिराक में हैं। दूसरी तरफ, व्हाइट हाउस ने दावा किया है कि हमास गाजा से निकल रहे विदेशी नागरिकों की सूची में अपने लड़ाकों का भी नाम जोड़ रहा है। इसके जरिए वो उन्हें मिस्र भेजने की कोशिश कर रहा है। वहीं, अलजजीरा ने दावा किया है कि इजराइल ने बच्चों के अस्पताल अल नासर पर बमबारी की है। इसमें कई लोगों के मारे जाने की खबर है। शुक्रवार को इजराइल में फंसे गाजा के हजारों कर्मचारियों को घर जाने की इजाजत मिल गई। दरअसल, इजराइल में करीब 17 हजार फिलिस्तीनियों को काम करने की अनुमति मिली हुई है। इनमें से 3300 फिलिस्तीनी जंग के बीच फंस गए थे। इन्हें बमबारी के बीच शुक्रवार रात साउथ गाजा पहुंचाया गया। इजराइली हमलों के बीच गाजा के खान यूनिस में एक फिलिस्तीनी न्यूज चैनल के संवाददाता मोहम्मद अबु हताब की मौत हो गई। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, इस हमले में पत्रकार के परिवार के 11 सदस्यों ने भी जान गंवाई।

इजराइली सेना ने गाजा शहर को चारों तरफ से घेरा

इजराइली सेना ने दावा किया कि उसने गाजा शहर को चारों तरफ से घेर लिया है और अब हमास के लड़ाकों से सीधी लड़ाई हो रही है। आईडीएफ के प्रवक्ता ने कहा- हमारे सैनिक हथियारों और एयरक्राफ्ट्स के जरिए हमास की कमांड सेंटर, लॉन्चिंग पोजिशन, सुरंगों और दूसरे ठिकानों पर हमला कर रहे हैं। आईडीएफ ने कहा- हम हमास को खत्म करने की जंग में हैं। इस समय सीजफायर पर विचार भी नहीं किया जा रहा है। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, गुरुवार को इजराइली सेना ने करीब 150 हमास लड़ाकों को मार गिराया। हमास से लड़ाई में आईडीएफ के करीब 23 सैनिकों ने अपनी जान गंवा दी। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा- हमारे दुश्मन और हिजबुल्लाह बहुत अच्छे से समझ लें कि अगर उसने कोई भी हरकत की तो उसे इसकी वो कीमत चुकाना होगी जिसके वो कल्पना भी नहीं कर सकता। नेतन्याहू ने अमेरिका की उस मांग को भी ठुकरा दिया, जिसमें उसने मानवीय सहायता के लिए कुछ समय तक सीजफायर की अपील की थी। नेतन्याहू ने कहा- यूएस के विदेश मंत्री ब्लिंकन से मेरी बात हुई है। मैंने उन्हें बता दिया है कि जब तक तमाम बंधक रिहा नहीं किए जाते, हम सीजफायर के बारे में सोच भी नहीं सकते। इजराइल-हमास जंग के बीच अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन शुक्रवार को तीसरी बार तेल अवीव पहुंचे। यहां उन्होंने इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात की। बीबीसी के मुताबिक, इस दौरान फिलिस्तीनियों की सुरक्षा पर चर्चा हुई। बीबीसी के मुताबिक, अमेरिका और इजराइल सीजफायर के लिए राजी नहीं है। उनका मानना है कि सीजफायर से हमास को हमास पुनः संगठित होने और हथियार जमा करने का समय मिल जाएगा। हालांकि अब अमेरिका मानवीय लिहाजे से जंग को रोकने पर चर्चा कर रहा है। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा- हमारे दुश्मन और हिजबुल्लाह बहुत अच्छे से समझ लें कि अगर उसने कोई भी हरकत की तो उसे इसकी वो कीमत चुकाना होगी जिसके वो कल्पना भी नहीं कर सकता।

BRIEF NEWS

शनिवार को डेंगू के 74 संदिग्ध मरीज मिले

RANCHI : शनिवार को राज्य भर में डेंगू के 74 संदिग्ध मरीज मिले हैं। जांच के बाद 18 में डेंगू की पुष्टि हुई है। इनमें सबसे ज्यादा 10 मरीज चतरा जिले में मिले हैं। वहीं देवघर में एक, धनबाद में छह और हजारीबाग में एक मरीज मिला है। वहीं चिकनगुनिया के भी आठ संदिग्ध मरीज मिले हैं। हालांकि जांच के बाद किसी में भी इसकी पुष्टि नहीं हुई है।

नौसेना का चेतक हेलीकॉप्टर रनवे पर क्रैश, एक की मौत

KERALA : केरल के कोच्चि में शनिवार को नौसेना वायु स्टेशन क्हर गरुड़ के रनवे पर चेतक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। रिपोर्ट के मुताबिक, यह हादसा रूटीन ट्रेनिंग ड्रिल के दौरान हुआ। सूत्रों ने बताया कि दुर्घटना के वक्त हेलिकॉप्टर में 2 क्रू मेंबर्स सवार थे। बताया जा रहा है कि एक्सीडेंट की चपेट में आने से एक शख्स की मौत हो गई। इंडियन नेवी की ओर से बयान जारी करके घटना के बारे में जानकारी दी गई है। इसमें बताया गया कि दुर्घटना के कारणों की जांच के लिए बोर्ड ऑफ इंक्वायरी के गठन को लेकर ऑर्डर जारी हुआ है। गौरतलब है कि भारतीय नौसेना ने बीते बुधवार को बंगाल की खाड़ी में ब्रह्मोस मिसाइल का सफल परीक्षण किया था।

अंबानी को धमकाने वाले 2 आरोपी गिरफ्तार

MUMBAI : मुकेश अंबानी को धमकी भरे ई-मेल भेजने के आरोप में पुलिस ने दो युवकों को गिरफ्तार किया है। एजेंसी के मुताबिक, एक शख्स को तेलंगाना से गिरफ्तार किया गया है। आरोपी की पहचान 19 साल के गणेश रमेश वनपारधी के रूप में हुई है। उसे गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया और 8 नवंबर तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। वहीं, दूसरे आरोपी को मुंबई क्राइम ब्रांच ने गुजरात के गांधीनगर से अरेस्ट किया है, जिसका नाम शादाब खान है। फिलहाल पुलिस शादाब से मामले में पूछताछ कर रही है। मुकेश अंबानी को 27 अक्टूबर से 1 नवंबर तक जान से मारने की धमकी भरे पांच ई-मेल भेजे गए थे। इसमें 400 करोड़ रुपए की मांग की गई थी। पुलिस ने बताया कि ये धमकियां दो अलग-अलग मेल आईडी से की गई थीं।

विस चुनाव का सियासी संग्राम

कांग्रेस की प्राथमिकता, अपना खजाना भरना : पीएम मोदी

DURG : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को छत्तीसगढ़ के दुर्ग में एक चुनावी जनसभा में कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की प्राथमिकता भ्रष्टाचार में लिप्त होकर अपना खजाना भरना है। मोदी ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि राजनीतिक दल गरीबों को बांटने की नई-नई साजिशें रच रहे हैं। वह जातिवाद का जहर फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि मोदी के लिए देश में सबसे बड़ी जाति गरीब है और मोदी उनके सेवक हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने गरीब को धोखे के सिवाय कभी कुछ नहीं दिया। कांग्रेस गरीब की कभी कद्र नहीं करती। उसे गरीब का दुख-दर्द कभी समझ नहीं आता। इसलिए जब तक कांग्रेस केंद्र सरकार में रही, वो गरीबों के हक का पैसा लूटकर खाती रही, अपने नेताओं की तिजोरी में भरती रही। उन्होंने कहा, कांग्रेस नहीं चाहती कि गरीबों का कल्याण हो, वह नहीं चाहती कि उनकी स्थिति सुधरे। कथित महादेव सट्टेबाजी ऐप घोटाले को लेकर प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार ने तो महादेव के नाम को भी नहीं छोड़ा है। दो दिन पहले ही रायपुर में बहुत बड़ी कार्रवाई हुई है, रुपयों का बहुत बड़ा ढेर मिला है।

आदिवासी का मतलब इस देश के पहले हकदार : राहुल गांधी

JAGDALPUR : राहुल गांधी शनिवार को छत्तीसगढ़ के जगदलपुर पहुंचे। यहां उन्होंने लालबाग मैदान में सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि बीजेपी के नेता अपने भाषण में आदिवासियों को वनवासी करते हैं। आदिवासियों के लिए बीजेपी ने नया शब्द निकाला है। आदिवासी और वनवासी शब्द में जमीन आसमान का फर्क है। कुछ समय पहले बीजेपी के एक नेता ने एक आदिवासी युवक से अभद्रता की थी। उसका एक वीडियो भी आया। उसी नेता ने वीडियो वायरल किया था। अब आप बीजेपी की विचारधारा के बारे में सोचिए। वे यह आदिवासियों को दिखाना चाहते हैं कि उनकी जगह क्या है। इसलिए वनवासी शब्द निकाला गया है। रायगढ़ के खरसिया में भी राहुल गांधी ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने नंदकुमार पटेल को याद किया। राहुल गांधी ने कहा, उनके हथियारों को पकड़ा जाएगा। उनके साथ अन्याय हुआ। अब उनके बेटे चुनाव लड़ रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा, आदिवासी शब्द एक क्रांतिकारी शब्द है। इस शब्द में काफी गहराई है। इसमें आपकी सच्चाई है। आदिवासी का मतलब है इस देश के पहले और असली मालिक। इस देश की जमीन,जंगल, जमीन एक दिन आपका हुआ करता था। अब उसे हाथों से छीन लिया गया है।

छापेमारी से पहले पीपी व अमित ने पुलिस के एक अधिकारी के साथ जेल में की थी मीटिंग
ईडी के हाथ लगा ऑडियो क्लिप, सीसीटीवी भी खंगाल रही एजेंसी

CRIME REPORTER RANCHI : रांची पुलिस के एक अधिकारी ने जेल में रेड पड़ने से पहले मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपी प्रेम प्रकाश और अमित अग्रवाल से मुलाकात की थी। सूत्रों के मुताबिक, ईडी के अधिकारियों के खिलाफ साजिश रचने के लिए रांची पुलिस के एक बड़े पुलिस अधिकारी से मदद मांगी गयी थी। इस बातचीत से संबंधित एक ऑडियो भी ईडी के हाथ लगी है। ऑडियो क्लिप की जांच के बाद ईडी जल्द इस बड़ी साजिश का पदार्फाश कर सकती है। वहीं ईडी रांची के होटवार स्थित बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में लगे सीसीटीवी की फुटेज भी खंगाल रही है, ताकि इस बात की जानकारी मिल सके कि रांची पुलिस के किस अधिकारी ने प्रेम प्रकाश व अमित अग्रवाल से मुलाकात की। ईडी के अधिकारीयों के खिलाफ जेल की सलाखों के पीछे से रची जा रही इस साजिश को ईडी ने बड़ी गंभीरता से लिया है और इस पूरे प्रकरण की जानकारी केंद्र सरकार को भी दी गयी है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, झारखंड में लैंड स्कैम, बालू के अवैध कारोबार, शराब टेंडर में हुए कथित घोटाले और अवैध खनन जैसे करोडों रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग की जांच कर रही केंद्रीय एजेंसी ईडी के अधिकारियों को फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश रची जा रही थी। ईडी के एक अफसर को धुर्वा थाना द्वारा एसटी-एससी केस में आरोपी बनाने के बाद एक बार फिर नये सिरे से एक गंभीर आरोप में फंसाने की साजिश जेल से रची जा रही थी।

ईडी अफसरों की बढ़ाई गई सुरक्षा

जमीन, बालू, शराब और अवैध खनन जैसे घोटाले की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों की सुरक्षा बढ़ा दी गयी है। ईडी के अधिकारियों को नुकसान पहुंचाने और झूठे केस में फंसाने की साजिश रची गयी थी। ईडी अफसरों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सीआईएसएफ को दी गई है। इस संबंध में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक पत्र भी राज्य पुलिस को भेजा है, जिसमें ईडी अफसरों की सुरक्षा को लेकर निर्देश दिया गया है। ईडी की जांच में कई चौंकाने वाले खुलासे हो रहे हैं। बताया जा रहा है कि ईडी के अफसरों को न सिर्फ राज्य के बड़े अफसरों के साथ मिलकर फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश रची गई थी, बल्कि ईडी के दो अफसरों को तो नुकसान पहुंचाने के लिए आरोपितों ने झारखंड के एक गैंगस्टर से भी संपर्क साध लिया था। रांची जेल में बंद गैंगस्टर के एक गुर्गे से इसे लेकर आरोपियों ने बैठकर प्लानिंग भी की थी।

भारत ने कोरिया को दी मात, झारखंड की सलीमा टेटे ने दागा गोल

महिला हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी : आज फाइनल मुकाबला
INDIA V/S JAPAN

PHOTON NEWS RANCHI : राजधानी रांची में झारखंड महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी के दूसरे सेमीफाइनल में भारत ने कोरिया को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। लीग में अपराजेय भारत ने विजयी अभियान जारी रखते हुए शनिवार को मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रो टर्फ स्टेडियम में खेले गए पहले सेमीफाइनल में कोरिया को 2-0 से मात देकर फाइनल में जगह बनाई। रविवार को खिताब के लिए भारत का मुकाबला जापान से होगा।

मुकाबले में पहला गोल पहले क्वार्टर के 11वें मिनट में आया। भारत की सलीमा टेटे ने कोरिया के डिफेंस को भेदकर शानदार फील्ड गोल किया। मुकाबले के 19वें मिनट में भारत ने एक और गोल कर कोरिया के मनोबल को तोड़ दिया। वैष्णवी विट्ठल फाल्के ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया। पहले हाफ में भारत के 2-0 की लीड लेने के बाद दूसरे हाफ में दोनों टीम गोल करने में असमर्थ रहीं। इस मैच में भारत को 6 पेनाल्टी कॉर्नर मिले, वहीं कोरिया को 3 पेनाल्टी कॉर्नर मिले।

चाइना को हराकर जापान फाइनल में

झारखंड वूमेंस एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में चाइना को हराकर जापान ने फाइनल में प्रवेश कर लिया। मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रो टर्फ स्टेडियम में शनिवार को खेले गए पहले सेमीफाइनल में चाइना का मुकाबला जापान से हुआ। जिसमें जापान ने 2-1 से मुकाबले को जीतकर फाइनल में जगह बनाई। मुकाबले का पहला गोल चाइना ने 11 वें मिनट में किया। चाइना की टार्यटियन लुओ ने जापान के डिफेंस को भेदकर पहला फील्ड गोल किया। पहले हॉफ में लिया लीड चाइना के पास ज्यादा देर तक नहीं रहा और जापान की काना उरता ने 34 वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर को फील्ड गोल में तब्दील कर स्कोर को 1-1 पर बराबरी कर दिया। मुकाबले के 44वें मिनट में मियु सुजुकी ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर 2-1 की लीड ली और जापान ने मुकाबले में जीत दर्ज की।

डिफेंडिंग चैंपियन इंग्लैंड वर्ल्ड कप से बाहर, ऑस्ट्रेलिया ने 33 रन से हराया

AHMEDABAD : डिफेंडिंग चैंपियन इंग्लैंड इस बार के वनडे वर्ल्ड कप से बाहर हो चुका है। टीम को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया ने 33 रन से हराया। 7 मैचों में 6 हार के बाद इंग्लैंड टूर्नामेंट से बाहर होने वाली दूसरी टीम बनी। उनसे पहले बांग्लादेश भी एलिमिनेट हो चुका है। टॉस हारकर पहले बैटिंग करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने 286 रन बनाए। मार्नस लाबुशेन ने सबसे ज्यादा 71 रन बनाए। टारगेट का पीछा करते हुए इंग्लैंड की टीम 48.1 ओवर में 253 रन पर ऑलआउट हो गई। बेन स्टोक्स ने 64 और डेविड मलान ने 50 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। ऑस्ट्रेलिया से एडम जम्पा ने 3 विकेट लिए, जबकि इंग्लैंड से क्रिस वोक्स ने 4 विकेट झटके। 7 मैचों में 2 पॉइंट्स लेकर इंग्लैंड टूर्नामेंट से बाहर हो चुका है। अब उनके 2 मैच नीदरलैंड और पाकिस्तान से बाकी हैं।

घरेलू विवाद में महिला तीन बच्चों के साथ तालाब में कूदी
तीन की मौत, एक बच्चा सुरक्षित

CRIME REPORTER PLAMU : जिले के हैदरनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत करीमनडीह गांव के पसियाडीह टोला निवासी जवाहिर राम की पत्नी निर्मला देवी (30) ने घरेलू विवाद में तीन बच्चों के साथ मोकहर कला के समीप पोखरा में कूदकर आत्महत्या कर ली। ग्रामीणों ने सभी को पोखरा से बाहर निकाला। उन्हें तत्काल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैदरनगर लाया गया। चिकित्सक डॉ. मंजूर आलम ने महिला निर्मला देवी, उसकी आठ वर्षीय पुत्री लाडली कुमारी और छह वर्षीय पुत्र करण कुमार को मृत घोषित कर दिया जबकि चार वर्षीय पुत्र गुड्डू कुमार की स्थिति खतरे से बाहर है। गुड्डू कुमार का प्राथमिक उपचार कर छोड़ दिया गया है। घटना के संबंध में ग्रामीणों ने बताया कि निर्मला देवी का पति जवाहिर राम दो दिन पूर्व मजदूरी करने सिकंदराबाद के लिए निकला है। महिला के साथ परिवार के लोगों से लड़ाई-झगड़ा हो रहा था। शनिवार की सुबह करीब आठ बजे महिला निर्मला देवी तीनों बच्चों को लेकर घर से मोकहर कला गांव की ओर निकली थी। उसने बच्चों को पोखरा में डाल कर खुद भी कूद गई। अंत में जिस बच्चे को फेंकी उसे ग्रामीणों ने तत्काल निकाल लिया, जिससे उसकी जान बच गई।

कला-साहित्य

खूबसूरती की अद्भुत मिशाल

गरतांग गली

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले की नेलांग घाटी में स्थित यह वही लकड़ी का पुल है जो कभी तिब्बत ट्रैक का हिस्सा हुआ करता था, जिसका निर्माण पेशावर से आए पठानों ने 150 साल पहले किया था ताकि भारत-तिब्बत व्यापार को एक नया आयाम मिल सके लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां बनी कि इसे 1962 की भारत-चीन लड़ाई के बाद बंद करना पड़ गया।आजादी से पहले तिब्बत के साथ व्यापार के लिए नेलांग वैली होते हुए यह तिब्बत ट्रैक बनाया गया था और गरतांग गली का यह ट्रैक भैरोंघाटी के नजदीक खड़ी चट्टान वाले हिस्से में लोहे की रॉड गाड़कर, उसके ऊपर लकड़ी बिछाकर तैयार किया गया था। इसी रास्ते से ऊन, चमड़े से बने कपड़े और नमक लेकर तिब्बत से उत्तरकाशी के बाड़ाहाट पहुंचाए जाते थे।

घुमक्कड़ की पाती

संजय शेफर्ड
नई दिल्ली

हरसिल यात्रा के दौरान भैरवघाटी पहुंचकर ऐतिहासिक गरतांग गली की सीढ़ियों का दीदार करना किसी जन्नत से कम नहीं लगा। हालांकि यह तीन किमी का ट्रैक काफी कठिन है पर रास्तों की खूबसूरती ऐसी की मानों जन्नत में जा रहे हो। संकरे रास्ते, ऊंचे-ऊंचे पेड़ और शांत पहाड़ पर तेज हवाओं का शोर। फिर तरकरीबन तीन से चार घंटे की कठिन चढ़ाई के बाद आता है एक खूबसूरत सा पुल जिसे गरतांग गली के नाम से जाना जाता है।

आपको बता दूं कि उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले की नेलांग घाटी में स्थित यह वही लकड़ी का पुल है जो कभी तिब्बत ट्रैक का हिस्सा हुआ करता था, जिसका निर्माण पेशावर से आए पठानों ने 150 साल पहले किया था ताकि भारत-तिब्बत व्यापार को एक नया आयाम मिल सके लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां बनी कि इसे 1962 की भारत-चीन लड़ाई के बाद बंद करना पड़ गया।

आजादी से पहले तिब्बत के साथ व्यापार के लिए नेलांग वैली होते हुए यह तिब्बत ट्रैक बनाया गया था और गरतांग गली का यह ट्रैक भैरोंघाटी के नजदीक खड़ी चट्टान वाले हिस्से में लोहे की रॉड गाड़कर, उसके ऊपर लकड़ी बिछाकर तैयार किया गया था। इसी रास्ते से ऊन, चमड़े से बने कपड़े और नमक लेकर तिब्बत से उत्तरकाशी के बाड़ाहाट पहुंचाए जाते थे।

इस पुल के बंद हो जाने से लोगों की आवाजाही और यह पूरा रास्ता ही पूरी तरह से बंद हो गया था। इस पुल से नेलांग घाटी का रोमांचक दृश्य दिखाई देता है। जिसकी वहज से कई यात्रियों का सपना रहता है कि इस जगह की खूबसूरती को देख सकें। लेकिन नेलांग घाटी सामरिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र है। जिसकी वजह से सदियों से भारत-तिब्बत व्यापार के गवाह रहे इस पुल को 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद बने हालात को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने उत्तरकाशी के इनर लाइन क्षेत्र में पर्यटकों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया था। यहां स्थित जो गांव थे उन्हें हरसिल के नजदीक बगोरी गांव में बसा दिया गया था। यहां के ग्रामीणों को एक निश्चित प्रक्रिया पूरी करने के बाद साल में एक ही बार पूजा अर्चना के लिए इजाजत दी जाती रही है। पर पर्यटकों के लिए यह जगह पूरी तरह से बंद कर दी गई थी।

एक लंबे समय बाद साल 2015 में देश भर के पर्यटकों को नेलांग घाटी तक जाने के लिए गृह मंत्रालय की ओर से इजाजत दी गई थी , देश भर के पर्यटकों ने भ्रमण शुरू किया जिसका बहुत ही सकारात्मक परिणाम रहा। पर्यटन को इस क्षेत्र में काफी बढ़ावा मिला और गंगोत्री धाम आने वाले यात्रियों को एक और खूबसूरत गंतव्य मिल गया।

इस जगह के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए गरतांग गली की सीढ़ियों का पुनर्निर्माण कार्य भी शुरू किया गया जिसे इसी साल जुलाई माह में पूरा किया गया है। सरकार का मानना है कि इससे पर्यटन को गति मिलेगी। 1962 के बाद अब करीब 59 सालों बाद दोबारा पर्यटकों के लिए यह खोल दिया गया है और देश भर के पर्यटकों की आवाजाही भी शुरू हो गई है।

गरतांग गली की लगभग 150 मीटर लंबी सीढ़ियां अब अपने एक नए रंग में नजर आने लगी हैं और लोग इस जगह की खूबसूरती का दीदार भी करने लगे हैं। 11 हजार फीट की ऊंचाई पर बनी ये सीढ़ियां इंजीनियरिंग का नायाब नमूना हैं।

गरतांग गली की भौगोलिक स्थिति की बात करें तो यह भैरव घाटी से नेलांग को जोड़ने वाले पैदल मार्ग पर जाड़ गंगा की घाटी में मौजूद है। नेलांग घाटी जिसे उत्तराखंड का लद्दाख कहा जाता है चीन सीमा से लगी है। इसी सीमा पर भारत की सुमला, मंडी, नीला पानी, त्रिपानी, पीडीए और जादूंग अंतिम चौकियां हैं।

इस जगह पर यदि आप जाना चाहते हैं तो पहले उत्तरकाशी पहुंचना होगा और फिर हरसिल होते हुए भैरवघाटी की यात्रा करनी होगी। मुझे यह जगह अच्छी लगी और इस घाटी में महीनों तक रहा। हिमालय की तलहटी में बसा हरसिल प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ ही सेब की पैदावार के लिए पहचाना जाता है। यह जगह जितनी शांत है उससे भी कहीं ज्यादा सुन्दर। भागीरथी नदी इस जगह से होकर बहती है जिससे हरसिल की सुंदरता और भी निखर जाती है। इस जगह पर आकर कोई भी सैलानी मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता है।

मैं भी पहली बार यहां के नदी, पहाड़ और झरने को बरबस देखता रह गया था। यह जगह अपनी खूबसूरती में हर किसी को बांध लेती है और आप एक बार बंध गए तो यहां बिताये पल को कभी नहीं भूल पाएंगे।

हरसिल की खास बात यह है कि यह सुन्दर होने के साथ-साथ लोगों की पहुंच में है। इस जगह पर पहुंचने के लिए आपको सबसे पहले ऋषिकेश पहुंचना होता है, फिर उत्तरकाशी, इसके बाद आपको हरसिल जाने के लिए गाड़ी लेनी होती है। यहां से गंगोत्री की दूरी महज तीस किमी रह जाती है। हरसिल से गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान की दूरी भी करीब सत्तर किमी पड़ती है।

यह ट्रेकर्स की पहली पसंद है, देश भर के लोग इस जगह पर ट्रेकिंग के लिए आते हैं और इसी जगह पर रुकते हैं। हिमालय पर्वत के बीच बसे हरसिल में 7 झीले हैं जिसके बारे में बहुत कम लोगों को पता है। वैसे हरसिल एक छोटी सी जगह है पर यहां की खूबसूरती इसे बहुत बड़ा बना देती है। पूरी घाटी प्राकृतिक सौंदर्य से भरी हुई है, भागीरथी नदी का शान्त और अविरल धारा सैलानियों को रोमांच से भर देता है।

इस घाटी में नदी, नाले के रूप में बहुत सारे जलस्त्रोत हैं जो आपका मन मोह लेंगे। छोटे-बड़े तमाम झरने आपके स्वागत के लिए तैयार दिखाई देते हैं। इस घाटी में आपको देवदार के पेड़ों की भरपूर छटा देखने को मिलेगी। ठहरने की सुविधा के लिहाज से सुंदर होम स्टे, हरसिल कॉटेज, हरसिल चार धाम केम्प, शिव परिवार रिसोर्ट, हिमालय होटल जैसे कुछ अच्छे विकल्प मौजूद हैं।

कविता

प्रियंका कुमारी
जमशेदपुर

उजाड़े तूने कितने घर ओ साकी

शासन सत्ता और परिवार,
एक बात पूछती हूं साकी!
सब जला खाक कर रहा,
क्या रहेगा भी कुछ बाकी?

कहीं तड़पता मांग सिंदूर,
कहीं बिलखता गोद है।
एक बात पूछती हूं साकी,
घर जला, तूं मना रहा क्यों मोद है?

क्या सरकार ने नेम बनाई,
गली-गली में मदिरालय।
करता मदिरापान और
जलाता गृह का सुखालय।।

नंगा नाच करता है जग में,
दोषी, साकी या मदिरापान है?
किसको कहूं बर्दाश्त करो,
दफ्न करो इस लत को जहां शमशान है।

सींचा जिस बाग को माली ने,
रक्त और घने श्रमवारि से।
एक बात पूछती हूं साकी,
क्या मिला तुझे जीवन बलजोरि से?

सहा है उस मां ने नव माह की
कसक व अतुलनीय पीड़ा को।
मद का प्याला थमा दिया कर में,
क्या लाज न आई, करते ऐसी क्रीड़ा को?

रचते न ऐसी क्रीड़ा और न
करते मद्य बाजार ओ साकी,
कितने जीवन बस जाते,
कितने अनिष्ट से रह जाते बाकी।

लगे तूझे उस मां की बद्दुआ,
जिसकी पीड़ा तूं गया भूल।
नाजो से पाला था तुझको
उसके हृदय में दे दिया शूल।

खण्ड-खण्ड कर डाला,
घर-घर खिलते प्रेम को।
एक बात पूछती हूं साकी,
क्या समझा न कभी कुटुंब प्रेम को?

वो नासमझ था, आ गया तेरे,
'वारुणी' घनी व्यापार में।
तूने लूट लिया सब उसका,
निज स्वार्थ के आचार में।।

शासन सत्ता और परिवार,
एक बात पूछती हूं साकी!
सब जला खाक कर रहा,
क्या रहेगा भी कुछ बाकी?

पक्षी ■ पुराण

जंगल का जादू तिल-तिल

राहुल सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, विश्व भारती, शांतिनिकेतन।

BLUE CAPPED ROCK THRUSH

जंगल को बाहर से देखना और भीतर से देखना दो जुदा चीजें हैं। बाहर से शायद ही कभी पक्षियों की मौजूदगी और विविधता को देखा और महसूस किया जा सकता है। उसके लिए आपको जंगल के भीतर उतरना और पैठना दोनों पड़ता है। और तब जाकर जंगल का जादू तिल-तिल कर खुलना शुरू होता है। जंगल को जब आप आब्जर्व करना शुरू करते हैं तो पहला भाव विस्मय का होता है, फिर आनंद की तरंगें एक-एक करके मन में उमगती हैं। एक हर्ष मिश्रित आश्चर्य आपको अपनी गिरफ्त में लेता चलता है। आप उसमें डूबते-उतराते रहते हैं। पंछियों की सोहबत में होना आपकी ध्यान और एकाग्रता को बढ़ाता है। जब इस ध्यान की आदत आपको पड़ जाती है तो जंगल फिर वही नहीं रह जाता है। आप जब उसकी निस्तब्धता में एक हल्के से खटके सुन और देख रहे होते हैं तो ऐसा भी होता है कि पेड़ से गिरता पत्ता, उड़ती तितली और शाखों पर किसी पखेरु की हल्की सी हरकत सब आपको एकबारगी दिखने लगते हैं। एक साथ आपकी कई इंद्रियाँ जाग्रत हो जाती हैं। आँखे वह देखने लगती हैं जिसकी ओर अमूमन आपका कभी खयाल नहीं गया हो, कान इतनी बारीक ध्वनियों को सुनने लगते हैं कि घर के सीलिंग फैन की आवाज आपको शोर लगने लगे। जंगल एक साथ निस्तब्धता और शोर को अपनी कोख में समेटे रहता है। यह आपके अभ्यास पर निर्भर करता है कि आप क्या देख और सुन पाते हैं?

जंगल बाहर से देखने पर सोया हुआ सा लगता है पर भीतर से वह हरदम जगा हुआ रहता है, रात के वक्त भी। वहाँ इतनी गतिविधियाँ एक साथ चलती रहती हैं कि बहुत सूक्ष्मता से देखने पर उसके ब्यौरे हैरान करने वाले होते हैं। पारिस्थितिकी-चक्र को समझने की दृष्टि से जंगल से बेहतर कोई दूसरी जगह नहीं है। जंगल आप उगा नहीं सकते हैं। पेड़ों के समूह को जंगल नहीं कहते हैं। जंगल प्रकृति, पारिस्थितिकी, जलवायु, परिवेश और ऋतुओं के साहचर्य से पनपता है, सदियाँ लगती हैं, उसे एक रुपाकार लेने में। एक जंगल हर मौसम में अपनी रंगत बदलता है। उसका लैंडस्केप बदलता है। घास, झाडियाँ, लतायें उसका अभिन्न अंग होती हैं। नामालूम सी लगनेवाली वनस्पतियों की अहमियत हम कभी समझ नहीं सकते, अगर अलग-अलग मौसमों में आपको जंगल में जाने का अनुभव ना हो। हर बदलते मौसम के साथ जंगल में पक्षियों की कुछ नयी किस्में नजर आने लगती हैं। एक नियत समय बिता कर इनमें से कई वापस अपने मूल स्थान को लौट जाते हैं। सदाबहार पक्षियों की अपनी दुनिया है। लेकिन एक पक्षी प्रेमी अलग-अलग मौसमों में अलग-अलग पक्षियों को देखने की लालसा में ना जाने कितनी दफा जंगल जाता है। जंगल कभी निराश नहीं करता है। हर यात्रा में कुछ ना कुछ सौगात देता रहता है। पक्षियों के मामले में अब भी झारखंड के जंगलों में काफी कुछ अनदेखा बचा है। सुखद यह है कि कोरोना के दौरान वक्त गुजारने के लिए कुछ लोगों ने कैमरों के साथ जंगल की राह पकड़ी। बर्ड फोटोग्राफर की अब एक पूरी जमात राँची, धनबाद, बोकारो, जमशेदपुर, जामताड़ा, दुमका, देवघर समेत कई जिलों में मौजूद है। इनके आब्जर्वेशन और साइटिंग ने झारखंड को पक्षियों के मामले में इ-बर्ड जैसी साईट पर एक सम्मानजनक स्थिति तक पहुँचाने की दिशा में अच्छी शुरूआत की है।

जंगल के स्थायी परिन्दों की तुलना में प्रवासी परिन्दों को देखना खासा रोमांचक होता है। साल के किसी खास महीने में ही कुछ पक्षियों को देख सकने का सुयोग बनता है। उन महीनों को छोड़ कर आप जंगल में उन्हें तलाशने की कोशिश करेंगे तो सर पटक कर रह जायेंगे। पर उनके होने का कोई सूत्र-संकेत आपको नहीं मिलेगा। जंगल में पक्षियों को देखने का मेरा पसंदीदा महीना फरवरी-मार्च का है। सर्दियों में आये फ्लाईकैचर भी मौजूद रहते हैं और कई किस्म के थ्रश (कस्तूरी) भी मौजूद रहते हैं। पतझड़ पक्षियों से ओट छिन लेता है। उनका उड़ना आपको दिखता है, उनका उड़ कर बैठना भी आपको दिखता है। साल के अन्य महीनों में जब पत्ते पूरे रहते हैं तो पक्षियों को ढूंढ पाना खासा चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसे वक्त में आँख से ज्यादा कानों से देखना होता है। कान पर आँख से ज्यादा भरोसा करना होता है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि पक्षियों की आवाज की कितनी सच्ची पहचान आपको है। अगर आवाज की परख है आपको तो लाख छिपे होने पर भी आप उसे ढूंढने में कामयाब रहेंगे। नहीं तो होने के बावजूद उनको देख सकना तकरीबन मुश्किल होता है। पैराडाईज फ्लाईकैचर, नाईटजार, तीतर-बटेर आदि उन पक्षियों में से है, जिन्हें देखने में आपको जतन करना पड़ सकता है, पर वे आपको देखते रहते हैं। कई बार आप उन्हें उड़ने के बाद ही देख पाते हैं। एक जंगल के भीतर भी कई अलग किस्म के हैबिटेट होते हैं। मतलब कोई पक्षी उस जंगल में होकर भी एक खास हिस्से में ही आपको दिखेगा। बे बैक्ड श्राईक, स्माल मिनीवेट, फुलवेत्ता, रेड स्टार्ट, व्हाईट रम्प्ड शमा इनमें खास हैं। आपको जान कर हैरत हो सकती है लेकिन सात से ज्यादा किस्म के कुकू आपको झारखंड के जंगलों में आसानी से वसंत ऋतु में दिख सकते हैं। वसंत के आस-पास जंगल कुछ ज्यादा ही वायब्रेंट हो उठता है।

जंगल में बर्ड फोटोग्राफी आसान काम नहीं है। इसके अपने खतरे हैं। सबसे बड़ा खतरा सांपों का होता है। पक्षियों की तलाश में किसी भी बर्ड फोटोग्राफर की आँखें ज्यादातर ऊपर रहती हैं। हर दफा जमीन देख कर आगे बढ़ना संभव नहीं रहता है। ऐसे में आपके पास सुरक्षा के लिए गम बूट जरुर होना चाहिए। साथ ही विषैले साँपों की थोड़ी जानकारी जरुरी होती है। पक्षियों के अंडे और चूजों के लिए कई बार सांपों की मौजूदगी भी घोंसलों के आस-पास होती है। पर अच्छी बात यह है कि सांपों की दुनिया में मानवीय मौतों के लिए जिम्मेदार ह्यबिग-4ह्न में से तीन की मौजूदगी ही झारखंड में दर्ज है। उसमें भी रसेल वाईपर पूरे झारखंड में पाया नहीं जाता है। किंग कोबरा यहाँ पाया नहीं जाता है। नाग और करैत यह दोनों बचते हैं। तो करैत दिन की बजाय रात में ज्यादा सक्रिय रहता है। तो असल खतरा नाग या गेंहुवन का होता है। इनके अलावा ज्यादातर साँप विषैले नहीं होते हैं। इस जानकारी और साँपों की पहचान के अभाव में साँप बेवजह मारे जाते हैं।

जंगल के बारे में जो एक बात याद रखने की है वह यह कि वह वन्यजीवों का घर है, न कि हमारी तफरीह का ठिकाना। तो जंगल में होना जंगल का हिस्सा होना है। अपनी मौजूदगी को जंगल के परिवेश में घुला मिला लेने में ही जंगल का जादू तिल-तिल खुलता है। यही वजह है के फोटोग्राफर्स की वेशभूषा छद्मावरण वाली होती है, जिससे उनकी मौजूदगी से अन्य वन्यजीवों का जीवन प्रभावित न हो। हमेशा एक भरोसे लायक दूरी बनाये रखना चाहिए। बर्ड फोटोग्राफी का एक बुनियादी नियम है कि सोशल साइट्स और अन्य जगहों पर घोंसलों-अंडों वाली तस्वीरें साझा करने की मनाही है। एक विलक्षण फोटो की

चित्र प्रदर्शनी

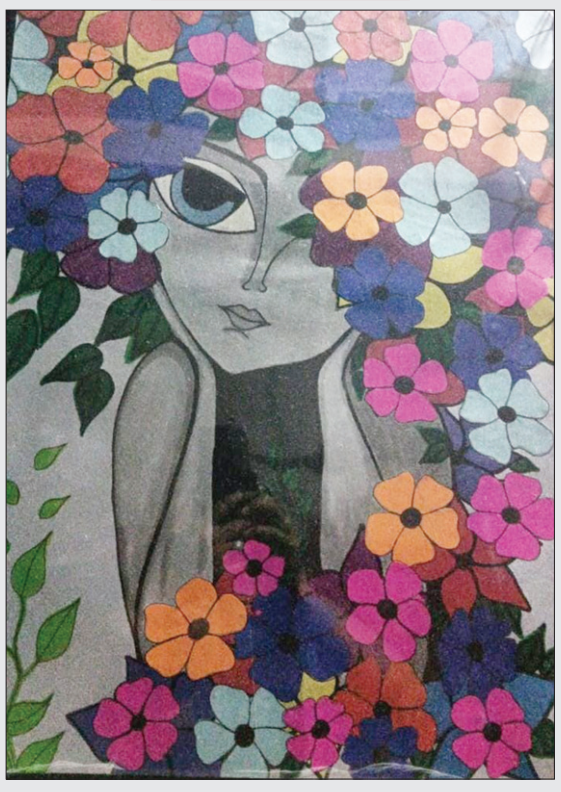

पूजा कुमारी
जमशेदपुर

1. हमें अपना फीडबैक, सुझाव या टिप्पणियां देने के लिए दिए गए बार कोड को स्कैन करें या मेल करें।
2. आप हमें अपनी रचनाएं, कविता या आलेख भी भेज सकते हैं। जिसे हम अपने आने वाले अंक पर प्रकाशित करेंगे।

SCAN ME

Email- thephotonnewsjharkhand@gmail.com

BRIEF NEWS

राजद की समीक्षा बैठक धनबाद में आज

RANCHI : राजद का समीक्षा बैठक पांच नवम्बर को धनबाद जिले में होगी। समीक्षा बैठक में मुख्य रूप से राष्ट्रीय जनता दल के मुख्य प्रवक्ता और धनबाद जिला प्रभारी डॉ मनोज कुमार और प्रदेश उपाध्यक्ष मंजू साह मौजूद रहेंगे। राजद के मुख्य प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार ने शनिवार को कहा कि जिला और महानगर के सभी पदाधिकारियों के साथ बैठक होगी।

भारतीय मजदूर संघ की आम सभा में कमेटी का हुआ गठन

RANCHI : भारतीय मजदूर संघ की शनिवार को सीसीएल दरभंगा हाउस रांची में एक आम सभा का आयोजन किया गया। इस आम सभा में सीसीएल के 70 रिटायर्ड कर्मचारी शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश अध्यक्ष सत्यनारायण सिंह ने किया। आमसभा के दौरान सर्वसम्मति से सीसीएल स्तर के एक कमेटी का गठन किया गया। यह कमेटी रिटायर कर्मचारियों के समस्या का समाधान करने के लिए बनाई गई है। मंच का संचालन सीसीएल से रिटायर्ड कर्मचारी सत्येंद्र नारायण शर्मा ने किया। मौके पर विशेष रूप से अखिल भारतीय उपाध्यक्ष बिहारी शर्मा, क्षेत्र संगठन मंत्री धर्मदास शुक्ला, प्रदेश संगठन मंत्री बृजेश कुमार सहित अन्य शामिल थे।

डोरंडा के नए थाना प्रभारी ने संभाला पदभार

RANCHI : रांची के डोरंडा के नए थाना प्रभारी आनंद किशोर प्रसाद ने शनिवार को पदभार ग्रहण किया। प्रसाद ने कहा कि क्षेत्र में लॉ एंड ऑर्डर बनाए रखने, अपराधी घटनाओं पर लगाम लगाने और लोगों से बेहतर संबंध स्थापित करना उनकी प्राथमिकता होगी।

एशियाई मास्टर एथलेटिक्स प्रतियोगिता आठ से

RANCHI : एशियाई मास्टर एथलेटिक्स प्रतियोगिता आठ से 12 नवम्बर तक फिलिपींस में होने वाला है। इसमें झारखंड से भारतीय टीम में आठ खिलाड़ियों का चयन किया गया है।सभी खिलाड़ी पांच नवम्बर को हावड़ा हटिया से कोलकाता के लिए रवाना होंगे। चयन किये गए खिलाड़ियों में लक्ष्मण राम, राजकुमार वाल्मीकि, संजय कुमार, अशोक कुमार महतो, दशरथ महतो, त्रिलोचन, ललिता और प्रभा लकड़ा शामिल है। झारखंड मास्टर एथलेटिक्स के सचिव लक्ष्मण राम ने शनिवार को बताया कि खिलाड़ियों का चयन भारतीय टीम में हुआ है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को झारखंड मास्टर एथलेटिक एसोसिएशन के तरफ से शुभकामनाएं दी है।

सुदेश महतो से मिला विश्वकर्मा युवा सुरक्षा मंच का प्रतिनिधिमंडल

RANCHI : समाजसेवी गदाधर महतो, प्रखण्ड उपाध्यक्ष सह प्रभारी (आजसू) कांके प्रखंड जोगिंदर उरांव, छात्र क्लब ग्रुप एवं विश्वकर्मा युवा सुरक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा ने शनिवार को आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो एवं केंद्रीय प्रवक्ता डॉ. देवशरण भगत से उनके कांके रोड स्थित आवास में मुलाकात की। साथ ही उन्हें प्रकाश का महापर्व दीपावली एवं आस्था का महापर्व छठ पूजा की बधाई दी और छठ पूजा में आने के लिए न्योता भी दिया।

कांग्रेस के जिलाध्यक्षों और विधानसभा प्रभारियों की बैठक आज

RANCHI : रांची के धुर्वा स्थित पुराना विधानसभा में प्रदेश कांग्रेस की ओर से पांच नवम्बर को जिलाध्यक्षों और विधानसभा प्रभारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी है। इस संबंध में प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महासचिव सह प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने शनिवार को बताया कि बैठक में आगामी लोकसभा चुनाव के तैयारी की समीक्षा करते हुए संगठन की पूर्णता एवं अन्य सांगठनिक तैयारी विषयक समयबद्ध कार्य निर्देश प्रदान जायेगी।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

HC : मेडिकल कॉलेज में सहायक प्राध्यापक नियुक्ति मामले में सुनवाई

जेपीएससी की प्रेस रिलीज पर रोक

हाई कोर्ट ने मेडिकल कॉलेज में सहायक प्राध्यापक नियुक्ति मामले में जेपीएससी के प्रेस रिलीज पर लगाई रोक

रांची, 4 नवंबर (हि.स.)। झारखंड हाई कोर्ट में मेडिकल कॉलेज में सहायक प्राध्यापक की नियुक्ति को लेकर झारखंड चिकित्सा शिक्षा सेवा नियमावली 2018 की संशोधित नियमावली 2021 को चुनौती देने वाली मनीष मुंडा एवं अन्य की याचिका की सुनवाई शनिवार को हुई। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने जेपीएससी द्वारा जारी प्रेस रिलीज पर रोक लगा दी।

जेपीएससी ने प्रेस रिलीज कर बताया था कि झारखंड स्वास्थ्य सेवा में कार्यरत चिकित्सा पदाधिकारी से ही इन पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन मांगा गया था। याचिकाकर्ता का कहना था कि जेपीएससी की प्रेस रिलीज नियुक्ति प्रक्रिया के बीच में जारी की गई है। मामले की सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट ने जेपीएससी के इस प्रेस रिलीज पर रोक लगा दी। कोर्ट ने निर्देश दिया है की याचिकाकर्ता यदि विज्ञापन के सारे अर्हता को पूरा करता है और क्वालीफाई करता है तो उसकी उसे नियुक्ति के लिए कंसीडर किया जाए। कोर्ट ने मामले में राज्य सरकार और जेपीएससी से छह सप्ताह में जवाब मांगा है। मामले के अगली सुनवाई नौ जनवरी को होगी।

जेपीएससी ने झारखंड चिकित्सा महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के 110 पदों के लिए विज्ञापन संख्या 6/ 2022 निकला था। याचिकाकर्ता ने याचिका में कहा था कि विज्ञापन में झारखंड स्वास्थ्य सेवा में कार्यरत चिकित्सा पदाधिकारी को नियुक्ति में प्राथमिकता देने की बात कही गई है। याचिकाकर्ता ने संशोधित नियमावली 2021 का हवाला देते हुए कहा कि यह नियमावली संविधान के आर्टिकल 16 के खिलाफ है। नियमावली के कारण कई अभ्यर्थी नियुक्ति से बाहर हो गए।

याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता अमृतांश वत्स ने कोर्ट को बताया कि नियमावली से अप्रत्यक्ष रूप से स्थानीय एवं सरकारी नौकरी वालों को अप्रत्यक्ष रूप से आरक्षण दिया गया है, जो संविधान के विरुद्ध है। यह पद वर्ग दो का है। इसमें देश के सभी नागरिक नियुक्ति प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं।

कोकदोरो गांव में हो रहा अंजुमन इस्लामिया चुनाव

कौम की सेवा के साथ उठाना है शिक्षा का स्तर : सुल्तान आदिल

PHOTON NEWS RANCHI :

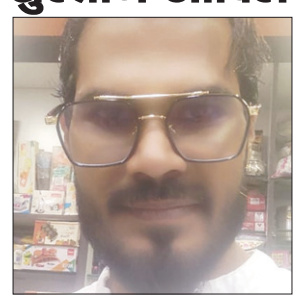

रांची के कांके प्रखंड स्थित कोकदोरो गांव में अंजुमन इस्लामिया का चुनाव हो रहा है। इस अंजुमन इस्लामिया चुनाव पर पूरे गांव वालों की नजरें टिकी है। क्योंकि इस गांव में पूरे प्रजातांत्रिक ढंग से चुनाव का आयोजन होता है। चुनाव का दिन गांव वालों के लिए महापर्व के जैसा है। चुनाव की प्रक्रिया भी नामांकन फॉर्म भरने से लेकर चुनाव चिन्ह का वितरण और मत पेटी में विधिवत मत डालने की प्रथा बन गई है। इस वजह से यहां का चुनाव बेहद रुचिकर होता है। चुनकर आने के बाद भी उम्मीदवार उत्साहित होते हैं और पूरे उत्साह के साथ अपने वादों के मुताबिक अपने निर्धारित कार्यकाल में काम भी करते हैं। इसी कड़ी में मस्जिद-ए-अली अंजुमन इस्लामिया चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज है। सदर पद के लिए सुल्तान आदिल और ईदुल अंसारी आमने-सामने हैं। हालांकि सेक्रेटरी पद पर शमीम अंसारी और फारूक अंसारी उम्मीदवार हैं। इस चुनाव में हर उम्मीदवार अपने-अपने ढंग से अपने मतदाताओं को लुभाने में जुटे हैं।

ऑनलाइन बैंक लेनदेन के समय सतर्क रहने की आवश्यकता : ट्रैफिक एसपी

PHOTON NEWS RANCHI :

कार्यक्रम में उपस्थित ट्रैफिक एसपी कुमार गौरव व अन्य। ● फोटोन न्यूज

एनटीपीसी कोयला खनन मुख्यालय रांची में 30 अक्टूबर से पांच नवंबर तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाया जा रहा है। इस वर्ष केंद्रीय सतर्कता आयोग की ओर से चुना गया विषय भ्रष्टाचार को ना कहें, राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध हों है। सतर्कता जागरुकता सप्ताह के तहत शनिवार को सतर्कता जागरूकता पर सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मौके पर ट्रैफिक एसपी कुमार गौरव ने कहा कि आजकल प्रचलित साइबर अपराध के विभिन्न पहलुओं और प्रकारों के बारे में बात की और कहा कि किसी की मेहनत की कमाई को बचाने के लिए ऑनलाइन बैंक लेनदेन करते समय व्यक्तियों द्वारा सतर्क और सतर्क रहने की आवश्यकता है।

प्रतिभागियों के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने ऐसे अपराधों के निवारण के लिए विभिन्न सहायता प्लेटफार्मों को साझा किया। उन्होंने वित्तीय लेनदेन के दौरान जालसाजी से बचने के लिए व्यक्तिगत विवरण साझा करने में सावधानी बरतने की याद दिलाई। इस अवसर का लाभ उठाते हुए प्रतिभागियों ने अपने प्रश्न पूछे, जिनका एसपी, यातायात द्वारा उपयुक्त उत्तर दिया गया।

इस सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कर्मचारियों के लिए समूह चर्चा, और स्कूली बच्चों के लिए भाषण आदि शामिल हैं। सतर्कता जागरूकता पर प्रचार करने के लिए, प्रमुख स्थानों पर बैनर और पोस्टर प्रदर्शित किए जाएंगे।

फायरिंग मामले के आरोपियों ने किया सरेंडर, भेजे गए जेल

RANCHI : रांची के हरमू रोड के किशोरगंज चौक के पास फायरिंग मामले के सभी आरोपितों ने प्रभारी मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी के के मिश्र की अदालत में शनिवार को सरेंडर कर दिया। सरेंडर करने वालों आरोपितों में विकास कुमार उर्फ बोथा, विक्की जायसवाल, अरविंद कुमार जायसवाल उर्फ विक्की, आयुष भूमिहार, रितिक कुमार उर्फ अक्की और मंटू उर्फ सन्नी मेहता शामिल हैं। अदालत ने सभी आरोपितों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। उल्लेखनीय है कि कोतवाली थाना क्षेत्र के किशोरगंज चौक के पास बीते 24 अक्टूबर की सुबह करीब चार बजे यह घटना हुई थी। अपराधियों ने मेला घूम कर आ रहे दिनेश सिंह को गोली मार दी थी। दिनेश सिंह के पेट में गोली लगी थी। घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी फरार हो गये थे।

सोहराय पर्व का गोट बोंगा 12 को, आदिवासी बहुल क्षेत्रों के घरों में रंग-रोगन का कार्य शुरू

PHOTON NEWS RANCHI :

घरों में रंग-रोगन करती महिलाएं। ● फोटोन न्यूज

बाहा बोंगा के बाद आदिवासी समाज की सबसे बड़ी और पवित्र पूजा गोट बोंगा यानी सोहराय पर्व 12 नवंबर से शुरू होगा। यह पर्व पांच दिनों तक चलेगा। कार्तिक अमावस्या के दिन सामूहिक रूप से विभिन्न गांव के नायके बाबा (पुजारी) द्वारा अपने-अपने गांव में गोट बोंगा कर इस पर्व की शुरूआत की जाती है । गोट बोंगा में मुर्गे की बलि चढ़ाई जाती है। इसके बाद गांव के लोगों द्वारा प्रसाद के रूप में सोड़े ग्रहण किया जाता है।

जमशेदपुर शहर के ग्रामीण इलाकों करनडीह, सारजमदा, तालसा, शंकरपुर, रानीडीह, मातलाडीह, काचा, परसुडीह, पोंडेहासा, छोलागोड़ा आदि ग्रामीण इलाकों में अभी से ही सोहराय पर्व की तैयारियां चल रही है। गांव के पुरुष बाजारों से आवश्यक सामग्री खरीदने में लगे हुए हैं, वहीं महिलाएं अपने-अपने घरों की दीवारों में लिपाई पुताई व रंगाई के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की कलाकृति बनाने में व्यस्त है। सुंदर और आकर्षक कलाकृति बनाने में आदिवासी समाज की महिलाओं को महारत हासिल है जिनमें उनकी छोटी-छोटी बच्चियों भी उनका हाथ बटांते दिख जाते हैं।

सारजमदा पुड़सी पिंडा के मुद्दू माझी बाबा लेदेम मुर्मू ने कहा कि फसल की अच्छी पैदावार होने के बाद सभी किसान सोहराय पर्व के माध्यम से अपने-अपने गाय और बैलों की पूजा करते हैं लेकिन इस बार इंद्र देवता की कृपा से बारिश का खतरा बना हुआ है। महिला तथा पुरुष सभी साफ सुथरे और नए पारंपरिक

एग्री स्मार्ट विलेज के रूप में किया गया कांके प्रखंड के मरवा गांव का चयन

योजना के तहत किसानों बीज वितरित करते अतिथि। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI :

रांची जिला में कांके प्रखंड के मरवा गांव का चयन 'एग्री स्मार्ट विलेज' के रूप में किया गया है। इसी कड़ी में शनिवार को मरवा गांव में बिरसा फसल विस्तार योजना के तहत दर्जनों किसानों के बीच सरसों एवं चना बीज का वितरण निःशुल्क किया गया। मौके पर अतिथि के रूप में कांके प्रखंड प्रमुख सोमनाथ मुंडा, उप प्रमुख अंजय बैठा के हाथों किसानों को बीज का वितरण किया गया।

इस दौरान प्रखण्ड प्रमुख सोमनाथ मुंडा ने कहा कि किसान अन्नदाता होते है। हमारे लिए गर्व की बात है कि, हमारे प्रखंड के मरवा को पूरा रांची जिला में एग्रो स्मार्ट विलेज के रूप में चयन किया गया है। मैं भी किसान हूं। इसीलिए किसानों का दुख दर्द को अच्छी से समझ सकता हूं। आप लोग अच्छे से खेती कर इस गांव का नाम पूरे राज्य में रोशन करें। वही उप प्रमुख अजय बैठा ने कहा कि आज किसान दिन रात खेतों में मेहनत करते हैं। लेकिन उनके फसल का सही मूल्य नहीं मिल पाता। मैं सरकार से मांग करता हूं कि किसानों के लिए कोल्ड स्टोरेज का भी स्थापना करें, ताकि अपनी सब्जियों को वह ज्यादा दिन तक सुरक्षित रख सके। बीटीएम ने चना एवं सरसों बीज लगाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कांके विधायक समरीलाल, जीप सदस्य सुषमा देवी, विधायक प्रतिनिधि गोपाल महतो, मुखिया लाला महली, रूपणी देवी, बीएओ नंदेश्वर दास, हरिहर महतो, अब्दुल सत्तार, सफीउल्लाह अंसारी, क्रांति देवी, अंजनी देवी, संजू देवी मौजूद थे।

सत्ता में रहकर सट्टा कारोबार चलाना छत्तीसगढ़ कांग्रेस की हकीकत : प्रदीप

PHOTON NEWS RANCHI :

मीडिया को जानकारी देते प्रदेश महामंत्री डॉ प्रदीप वर्मा। ● फोटोन न्यूज

भाजपा प्रदेश मुख्यालय में शनिवार को छत्तीसगढ़ में चल रही भ्रष्ट बघेल सरकार में हुए महादेव बेटिंग ऐप स्कैंडल पर प्रदेश भाजपा ने कांग्रेस पार्टी को कटघरे में खड़ा किया। प्रदेश महामंत्री डॉ प्रदीप वर्मा ने पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा शुरू से कहती आई है कि महादेव बेटिंग ऐप स्कैंडल को बघेल सरकार का संरक्षण और समर्थन प्राप्त था और यही कारण था कि इसकी आज तक जांच नहीं हुई।

वर्मा ने कहा कि ईडी की जांच से यह खुलासा हो गया है कि कांग्रेस की बघेल सरकार का साइड बिजनेस ही बेटिंग था। भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ के विकास को बेटिंग पर डाल दिया। उन्होंने कहा कि भूपेश बघेल ने सत्ता में रहकर सट्टा का बड़ा खेल खेला। सत्ता में रहते हुए सट्टा कारोबार में रहना यह कांग्रेस की हकीकत है। कांग्रेस पार्टी बड़े पैमाने पर वोट को खरीदने के लिए अवैध राशि का दुरुपयोग कर रही। कांग्रेस का लोकतंत्र को कलंकित करने का पुराना इतिहास रहा है।

उन्होंने कहा कि ईडी की जांच में भूपेश बघेल के खिलाफ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। ईडी जांच में यह बात सामने आई कि बेटिंग ऐप के प्रमोटर्स ने भूपेश बघेल को अबतक 508 करोड़. रुपये के भुगतान किए हैं। ईडी ने कांग्रेस पार्टी के चुनावी खर्च के लिए बड़ी मात्रा में नकदी पहुंचाने के लिए खास तौर पर संयुक्त अरब अमीरात से भेजे गए एक कैश कुरियर असीम दास को डिटेन किया है।

ईडी ने असीम दास की कार और आवास से 5.39 करोड़ रुपये की नकद राशि बरामद की। इस संबंध में गिरफ्तार असीम दास ने स्वीकार किया कि जब्त की गई राशि महादेव ऐप के प्रमोटरों के द्वारा छत्तीसगढ़ में होने वाले विधानसभा चुनाव खर्चों के लिए एक राजनेता बघेल को देने की व्यवस्था की गई थी। उन्होंने कहा कि इस सट्टेबाजी सिंडिकेट के प्रमोटर्स विदेश में बैठे हैं और अपने दोस्तों, सहयोगियों की मदद से देशभर में हजारों पैनल चला रहे हैं। ये खासकर छत्तीसगढ़ से हैं और उन्होंने इससे हजारों करोड़ रुपये कमाए हैं।

भाजपा ने कांग्रेस को कटघरे में खड़ा करते हुए सवाल पूछे कि क्या यह सत्य है कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस नेताओं को शुभम सोनी के माध्यम से असीम दास पैसा पहुंचाते थे? क्या यह सत्य है कि असीम दास को एक वाइस मैसेज के माध्यम से ये आदेश दिया गया कि वो रायपुर जाएं और भूपेश बघेल को चुनाव खर्च के लिए पैसा दें? क्या यह सत्य है कि 2 नवंबर को होटल टाइटन में असीम दास से पैसे बरामद हुए हैं? क्या यह सत्य है कि अलग अलग बैंक खातों से 15 करोड़ रुपये प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत फ्रीज किया गया है? क्या ये सत्य है कि असीम दास नमक एक व्यक्ति से 5.30 करोड़ रुपये से ज्यादा राशि बरामद हुई है?

उन्होंने कहा कि असीम दास से ईडी की हुई पूछताछ और उसके पास से बरामद फोन की फोरेंसिक जांच से महादेव नेटवर्क के उच्च पदस्थ आरोपितों में से एक शुभम सोनी, चंद्रभूषण वर्मा द्वारा भेजे गए ईमेल की जांच से भी चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। वर्मा ने कहा कि ईडी ने पहले ही कहा था कि महादेव ऐप के जरिए एकत्र धनराशि रिश्वत के रूप में छत्तीसगढ़ में नेताओं और नौकरशाहों के बीच बांटी गई थी। ईडी इस संबंध में पहले भी ऑनलाइन सट्टेबाजी और भुगतान के तरीकों की जानकारी के लिए कई मशहूर हस्तियों और बॉलीवुड अभिनेताओं को पूछताछ के लिए बुलाया था।

कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी और सनातन की विरोधी : बाबूलाल मरांडी

RANCHI : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने शनिवार को छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में धमतरी जिलांतर्गत सिहुवा विधानसभा क्षेत्र में नगरी और घुड़ावाल की जनसभा को संबोधित किया। मरांडी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी भ्रष्टाचार की जननी, पोषक और संरक्षक है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी लगातार तुष्टिकरण में डूबती जा रही। कांग्रेस के नेता सोनिया गांधी,,राहुल गांधी कभी भी भारत माता की जय नही बोल सकते। कांग्रेस पार्टी तुष्टिकरण में सनातन के विरोध पर उतर चुकी है। ये राम के अस्तित्व को नकारने वाले लोग हैं। जनता इनके चरित्र को समझ चुकी है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार विकास को समर्पित है। विकास की पर्याय है। जब-जब प्रदेश में भाजपा की सरकार रही विकास योजनाएं तेजी से धरातल पर उतरी हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार गांव, गरीब, किसान, दलित, पिछड़ा, महिला सभी के विकास के लिए समर्पित है।

DSPMU के सभागार में जनजातियों के संवैधानिक और कानूनी अधिकार पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

पेसा और वनाधिकार कानून आदिवासी अस्तित्व का पोषकः हर्ष चौहान

PHOTON NEWS RANCHI :

भारत माता की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की शुरुआव करते अतिथि। ● फोटोन न्यूज

राजधानी के डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के सभागार में जनजातियों के संवैधानिक और कानूनी अधिकार, पेसा एवं वनाधिकार कानून विषय पर शनिवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। वनवासी कल्याण केंद्र, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, आई क्यू एसी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ जगलाल पाहन की ओर से जनजाति पारंपरिक पूजा विधि से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के पूर्व अध्यक्ष हर्ष चौहान ने पेसा और वनाधिकार को आदिवासी अस्तित्व का पोषक बताया। उन्होंने कहा कि समाज के विकास और परंपरा के संरक्षण में जनजाति समाज की बड़ी भूमिका है। समाज की अपेक्षा और आवश्यकता का संविधान के आलोक पूरा किया जाना सभी के हित में हैं। उन्होंने कहा कि प्रभावी पेसा और वनाधिकार के बिना जनजातीय विकास अधूरा है।

पूर्व सांसद पद्म भूषण कड़िया मुंडा ने कहा कि हमारे जनजाति समाज में कोई धर्म गुरु नहीं होता लेकिन जो खुद ईसाई है वह आदिवासियों का सरना धर्म गुरु बन बैठा है, जिसका कुछ पढ़े लिखे लोग समर्थन भी कर रहे हैं। सरना पूजा स्थल, गिरजा या मंदिर के नाम पर कोई धर्म कोड मिल सकता है क्या? सरना धर्म कोड का मांग करने वाले लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। ऐसे विषय 2024 में स्वतः ही खत्म हो जाएंगे। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि अब जनजाति समाज को अपने आस पास सभी षड्यंत्रों और चुनौतियों को समझना चाहिए। पेसा और वनाधिकार कानून हमारी संस्कृति को मजबूत करने के साधन हैं। हमें स्वाभिमान के साथ संविधान के प्रावधानों का सदुपयोग कर आगे बढ़ना है।

पद्मश्री जमुना टुडू ने कहा कि आदिवासी महिलाएं आगे आएं। स्थापित नियमों और कानूनों को समझे। उन्होंने कहा कि महिलाएं वन संरक्षण में बड़ी भूमिका निभा सकती हैं। विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि भारत सदैव परम्परा आधारित विकास का समर्थक रहा है। उन्होंने अविलंब पेसा और वनाधिकार को युद्ध स्तर पर क्रियान्वयन करने की आवश्यकता बतायी। संगोष्ठी को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य, लेखक लक्ष्मण राज सिंह, डॉ राजकिशोर हांसदा, पिंकी खोया, गिरीश कुबेर और सिद्धनाथ सिंह ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राज्यसभा सांसद महेश पोद्दार, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दिनेश उरांव, पूर्व विधायक शंकर उरांव, डॉ सुखी उरांव, मेघा उरांव, संदीप उरांव, सोमा उरांव लाला उरांव, कैलाश उरांव, सुशील मरांडी सुलेमान शंकर मुर्मू लोकेंद्र टुडू, रमेश बाबू, बिंदेश्वर साहू, देवाशीष मिश्र, ओम प्रकाश अग्रवाल, रिझू कच्छप और बड़ी संख्या में जनजाति समाज के प्रतिभागी उपस्थित थे।

आदिवासी युवा विकास फुटबॉल टूर्नामेंट का फाइनल मैच आज

चौथे दिन के मैच में उपस्थित अतिथि व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI :

कांके प्रखंड के मन्हा मैदान में आदिवासी युवा विकास फुटबॉल टूर्नामेंट के बैनर तले चल रहे पांच दिवसीय फुटबाल टूर्नामेंट को चौथे दिन के मैच का उद्घाटन कांके प्रखंड प्रमुख सोमनाथ मुंडा और भाजपा नेता इमरान खान ने किया। मौके पर पहुंचे मुख्य अतिथि सोमनाथ मुंडा और विशिष्ट अतिथि इमरान खान ने फुटबॉल पर किक मारकर और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर मैच का शुरूआत किया।

मौके पर मौजूद सोमनाथ मुंडा ने कहा कि खिलाड़ियों के साथ मैं हर समय खड़ा हूं। मुझसे जो भी मदद हो पाएगा मैं इनके साथ हूं। आज ग्रामीण क्षेत्र से निकले खिलाड़ी पूरे राज्य और देश मे अपना जलवा बिखेर रहे है। हमारे कांके से भी महिला फुटबॉल खिलाड़ी देश के लिए खेल रही है। टूर्नामेंट समिति के अध्यक्ष लखन उरांव ने जानकारी देते हुए बताया कि 5 नवंबर को टूर्नामेंट के फाइनल मैच का आयोजन किया जाएगा। फाइनल मैच में हजारों की संख्या में खेल प्रेमियों का पहुंचने का संभावना है। इसकी तैयारी कर ली गई है। स्थानीय थाना से भी सुरक्षा के लिए फोर्स की तैनाती के लिए आग्रह किया गया है।

BRIEF NEWS

राउरकेला में मना भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता सप्ताह

ROURKELA : राउरकेला में भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता सप्ताह मनाया गया। शनिवार को आईटीडीए कॉन्फ्रेंस हॉल में सतर्कता विभाग द्वारा जागरूकता बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम में विभिन्न विभागीय अधिकारी, स्वयं सहायता समूह के सदस्य, अभ्यर्थी, वरिष्ठ नागरिक, सतर्कता विभाग के कर्मचारी, स्कूलों और कॉलेजों के छात्र उपस्थित थे। बैठक में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से कहा गया कि वे किसी भी क्षेत्र में भ्रष्टाचार न करें और सरकार भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति लागू कर रही है,इसलिए सभी इसके प्रति सतर्क रहें और लोगों को सेवाएं उपलब्ध कराएं।

सेंट्रल पूजा कमेटी का मिलन समारोह आयोजित

ROURKELA : सारनगरी पाटीर्लाइजर मेला मैदान में मां लक्ष्मी का मिलन समारोह सेंट्रल पूजा कमिटी द्वारा आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रम मंत्री सारदा प्रसाद नायक और और रघुनाथ पाली विधायक सुब्रत तराई दीप जला कर समारोह का उद्घाटन किया। सभा स्थल पर शानदार आतिशबाजी का प्रदर्शन किया गया और भारी भीड़ उमड़ी। सभी क्षेत्र की पूजा समिति की मां लक्ष्मी की प्रतिमा पाटीर्लाइजर मिलन मैदान पर एकत्रित हुए। इस अवसर पर केंद्रीय पूजा समिति के अध्यक्ष बिराज बिस्वाल, बीजेडी नगर सभापति गगन पांडा, आनंद मोहंती, संध्या लाकरा, उपस्थित थे।

मुक्ता योजना की शुरुआत सॉफ्ट एप्लीकेशन की दी गई जानकारी

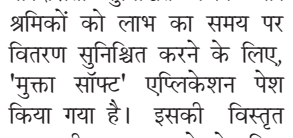

ROURKELA : राज्य सरकार ने शहरी गरीब मजदूरों को आजीविका प्रदान करने और मिशन शक्ति की महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए 'मुक्ता' योजना शुरू की है। कार्यक्रम के कार्यान्वयन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने और श्रमिकों को लाभ का समय पर वितरण सुनिश्चित करने के लिए, 'मुक्ता सॉफ्ट' एप्लिकेशन पेश किया गया है। इसकी विस्तृत जानकारी प्रदान करने के लिए राउरकेला नगर निगम कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता आरएमसी के उपायुक्त सुधांशु भोई ने की। जिन्होंने सभी विभागीय अधिकारियों के सहयोग से विकास परियोजनाओं को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने के महत्व पर जोर दिया। मुक्ता टीम के पेशेवरों और सिटी मिशन मैनेजर ने उपस्थित राउरकेला नगर निगम के सहायक अभियंताओं और कनिष्ठ अभियंताओं को 'मुक्ता सॉफ्ट' एप्लिकेशन के बारे में समझाया।

जमशेदपुर में मैराथन आज 75 हजार से लेकर 51 हजार तक इनाम घोषित

JAMSHEDPUR : जेआरडी टाटा कॉम्प्लेक्स में एक्सपो का आयोजन किया गया है। पांच नवंबर को टाटा स्टील द्वारा जमशेदपुर में मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया है। सुबह छह जेआरडी टाटा कॉम्प्लेक्स में एशियन गेम्स की रजत पदक विजेता ज्योति याराजी हरी झंडी दिखाएगी। टाटा स्टील जमशेदपुर रन झएज्ञ थॉन की तैयारी पूरी कर ली गई है। मैराथन रविवार को होगा। यह मैराथन में पंद्रह राज्यों के लगभग पांच हजार प्रतिभागी भाग लेंगें। इस मैराथन में तीन नवंबर को रजिस्ट्रेशन करवाने का अंतिम दिन था। रजिस्ट्रेशन करा चुके धावक तीन, चार नवंबर की सुबह नौ बजे से दोपहर 1:30 बजे तक और अपराह्न 2:30 बजे से शाम छह बजे तक प्रतिभागी जेआरडी स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में जाकर अपना बीब नंबर प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में 75 हजार रुपए से लेकर 51 रुपये तक इनाम घोषित किया गया है। दौड़ जेआरडी स्पोर्ट्स कांप्लेक्स से शुरू होकर रिवरमोट रोड़, बालीचेला रोड़, मैरिन ड्राइव, सर्किट हाउस एरिया होते हुए वापस जेआरडी स्पोर्ट्स कांप्लेक्स परिसर में आकर समाप्त होगा।

ब्लैंक चालान से बालू की अवैध ढुलाई कर रहे धंधेबाजों को खान विभाग ने पकड़ा

बालू लदा हाइवा जब्त, मालिक व चालक गिरफ्तार, चार पर एफआइआर

PHOTON NEWS CHAIBASA : एनजीटी की रोक हटते ही नदियों से बालू की चोरी शुरू हो गयी है। पश्चिमी सिंहभूम जिले में बालू घाटों की बंदोबस्ती नहीं होने की वजह से बालू चोर नदियों से चोरी-छिपे बालू का अवैध खनन व परिचालन में लग गये हैं। प्रशासनिक पदाधिकारियों की आंख में धूल झोंकने के लिए अवैध खनन व परिचालन के लिए बालू माफिया फर्जी ब्लैंक चालान का इस्तेमाल कर रहे हैं। इस पदार्फाश जिला खनन विभाग की जांच में शनिवार को हुआ है।

जब्त बालू लदा हाईवा (बांये) व गिरफ्तार मालिक व चालक (दांये)। ● फोटोन न्यूज

मामले में खनन विभाग ने 500 सीएफटी बालू लदा हाइवा जब्त करने के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। जांच में इनके पास से ओडिशा के बालू घाट से निर्गत ब्लैंक चालान भी मिला है। बताया जा रहा है कि जिला खान विभाग को गुप्त सूचना मिली कि गुवा क्षेत्र में बालू का अवैध परिचालन किया जा रहा है। इस सूचना के बाद खान निरीक्षक सुनील कुमार ने पुलिस की सहायता से गुवा थाना क्षेत्र में वाहनों की जांच शुरू की। वाहन जांच के क्रम में अवैध बालू लोड हाईवा को 500 घनफीट बालू के साथ जब्त किया गया। साथ ही साथ वाहन चालक लक्ष्मण सिरका और हाइवा मालिक बालेश्वर गोप को भी पकड़ लिया गया।

खान निरीक्षक ने मामले में गुवा थाने में वाहन मालिक बालेश्वर गोप, चालक लक्ष्मण सिरका एवं ओडिशा के दो बालू घाटों के संचालक उदयनाथ महतो व जे लोहार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराते हुए जब्त हाइवा व बालू को पुलिस की अभिरक्षा में रखवा दिया है। खान निरीक्षक ने बताया कि गिरफ्तार व्यक्तियों के पास से एक ब्लैंक चालान मिला है। इसका इस्तेमाल ये लोग अधिकारियों की आंख में धूल झोंकने के लिए करते हैं। जैसे ही कोई इन्हें पकड़ता है तो चालाकी से उस चालान में उसी दिन की तिथि डालकर उसे दिखाकर बच जाते हैं। खान निरीक्षक ने संभावना जतायी है कि उक्त बालू चाईबासा के किसी बालू घाट से गुवा ले जाया जा रहा था।

बिसरा आईटीआई बस्ती में युवक को मारी गोली, घायल

PHOTON NEWS ROURKELA : बिसरा आईटीआई बस्ती में शनिवार सुबह करीब आठ बजे गोलीबारी हुई। दो अज्ञात युवकों द्वारा की गयी गोलीबारी में पिकअप चालक मोहम्मद इरफान राजा गंभीर रूप से घायल हो गया। राजा को राउरकेला सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया।हालत खराब होने से राजा को जेपी अस्पताल रेफर कर दिया गया। उसके सीने में गोली लगी है। गोली मारने का कारण स्पष्ट नहीं है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, राजा अपने घर के सामने अपने पड़ोसियों से बात कर रहे थे। अचानक मोटरसाइकिल पर सवार दो अज्ञात युवक पहुंचे और किसी बात को लेकर चिल्लाने लगे। दोनों में से एक युवक ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और राजा पर गोली चला दी। राजा के गिरने के बाद दोनों युवक मोटरसाइकिल पर सवार होकर वहां से भाग गए। परिजनों ने राजा को गंभीर हालत में राउरकेला सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया है। बताया जा रहा गोलीबारी पूर्व दुश्मनी के कारण हुई है। पुलिस का कहना है कि बिसरा में हुए विवाद के कारण घटना होने की आशंका है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

33वां बोइत बंदन महोत्सव 25 एवं 26 नवंबर को आयोजित किया जाएगा

PHOTON NEWS ROURKELA : सेक्टर-2 दुगार्पूजा मैदान में शनिवार को आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में बताया गया कि उत्कल सांस्कृतिक परिषद का 33वां बोइत बंदन महोत्सव इस वर्ष 25-26 नवंबर को आयोजित किया जाएगा। परिषद एवं बीजू जनता दल के राज्य युवा कल्याण बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष कुनो बिहारी दास, रघुनाथपल्ली विधायक सुब्रत तराई, राउरकेला चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष सुनील कयाल, परिषद के सलाहकार गोपीनाथ पटनायक, नीलांबर पुहान ने इस साल के बोइत बंदन समारोह पर जानकारी दी। आरंभ में परिषद के महासचिव शंकर जेना ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं अतिथियों का परिचय दिया। इस अवशर पर बीजेडी माइनोरिटी सेल अध्यक्ष एमडी खालिद अजीज, पूर्व परसाद अफरोज अहमद,राज्य माइनोरिटी सेल उपाध्यक्ष जसविंदर सिंह गोल्डी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम की जानकारी देते परिषद के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

सुंदरगढ़ में मना भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता सप्ताह

PHOTON NEWS ROURKELA : भ्रष्टाचार निरोधक विभाग, सुंदरगढ़ शाखा और सुंदरगढ़ जिला प्रशासन द्वारा 30 अक्टूबर से 5 नवंबर 2023 तक भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता सप्ताह मनाया जा रहा है। इस दौरान जिले के सभी कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों, स्वास्थ्य केंद्रों और ग्राम रिट्रीट में विभिन्न जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस वर्ष, सप्ताह का विषय भ्रष्टाचार का विरोध, राष्ट्र के प्रति समर्पण था। इस अवसर पर आज जिला मुख्यालय स्थित विकास भवन में जिला स्तरीय जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। सुबह 8.30 बजे शहर में जागरूकता रैली निकाली गयी। अतिरिक्त जिलाधिकारी अभिमन्यु माझी ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। इसमें 100 से अधिक स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, आशा कार्यकर्ता, विभागीय अधिकारी शामिल हुए और भ्रष्टाचार विरोधी नारे लगाते हुए शहर में घूमे।

जागरूकता रैली में शामिल स्वयं सहायता समूह की महिलाएं। ● फोटोन न्यूज

जागरूकता बैठक में अतिरिक्त जिलाधिकारी अभिमन्यु माझी, सदर तहसीलदार कुलमणि रणबिदा, एकीकृत जनजातीय विकास एजेंसी के परियोजना प्रशासक धीरेंद्र सेठी, सतर्कता विभाग के डीएसपी दैतारी घड़ाई और जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी उपस्थित थे। इस मौके पर विजिलेंस डीएसपी ने भ्रष्टाचार विरोधी सप्ताह के तहत विभाग के कार्यों एवं उपलब्धियों पर अपना भाषण दिया। इसी प्रकार अपर जिलाधिकारी अभिमन्यु माझी ने कहा कि भ्रष्टाचार से मुक्त रह कर सभी को ईमानदारी से कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अब हर स्तर पर ऑनलाइन व्यवस्था है, जिससे कोई भी जनता अपने आवश्यक प्रमाणपत्र या अन्य दस्तावेज सीधे ऑनलाइन प्राप्त कर सकती है।

वाहन पर नंबर लिखवाने से पहले दुकानदार को देना होगा आरसी बुक और पहचान पत्र

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर पुलिस इन दिनों वाहनों के रजिस्ट्रेशन नंबर लिखने वाले दुकानदारों के साथ बैठक कर उन्हें कई दिशा निर्देश देगी। अब वाहन मालिकों को अपने वाहन पर नंबर लिखवाने से पहले दुकानदार को आरसी बुक, पहचान पत्र का फोटोकॉपी और फोन नंबर देना होगा। दुकानदार इन सभी चीजों को अपने रजिस्टर में इंट्री करेंगें और इसका रिकॉर्ड रखेंगे। जिले के एसएसपी किशोर कौशल ने सभी थानेदारों को रजिस्ट्रेशन नंबर लिखने वाले दुकानदारों का डेटा कलेक्ट करने का आदेश दिया है। इसके बाद पुलिस इन दुकानदारों के साथ बैठक कर रणनीति बनाएगी। एसएसपी किशोर कौशल ने बताया कि इन दुकानदारों को एक रजिस्टर रखने को कहा जाएगा। इसमें रजिस्ट्रेशन नंबर लिखवाने आए लोगों की पूरी जानकारी होगी। रजिस्टर में वाहन का आरसी, नंबर लिखवाने वाले व्यक्ति का नाम, फोन नंबर और एक पहचान पत्र की जानकारी होगी। यह रजिस्टर समय-समय पर पुलिस जांच करेगी। इस रणनीति से शहर में अपराध को कम करने में मदद मिलेगी।

एसएसपी किशोर कौशल ने बताया कि ज्यादातर मामलों में यह देखा गया है कि अपराधकर्मी अपराध के लिए जिस वाहन का इस्तेमाल करता है उसका नंबर बदल दिया जाता है।

फिल्टर प्लांट का निरीक्षण करने पहुंचे विधायक ठेकेदार के प्रतिनिधि को जमकर लगाई फटकार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जुगसलाई और आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों को गर्मी के दिनों में पानी और बिजली की समस्या नहीं होगी। इसके लिए जुगसलाई शहरी जलापूर्ति योजना के फिल्टर प्लांट में खराब पड़े चार मोटरों को बदला जाएगा। साथ ही 44 लाख की लागत से एक नए विद्युत फीडर का निर्माण कराया जाएगा। इससे क्षेत्र के लोगों को निर्बाध रूप से बिजली आपूर्ति होगी साथ ही पानी की समस्या भी दूर हो जायेगी। शनिवार को फिल्टर प्लांट का निरीक्षण करने पहुंचे विधायक मंगल कालिंदी ने इस संबंध में निर्देश जारी किया। निरिक्षण के दौरान उन्होंने कई खामियां पाई, जिसके बाद पीएचडी विभाग के ठेकेदार की गैरमौजूदगी में उनके प्रतिनिधि को जमकर फटकार लगाई। उन्होंने कहा कि आप अपनी जिम्मेदारी से नहीं भाग सकते। लोगों की समस्या को सुने और उन्हें ससमय दूर करें। विधायक ने वहीं से पेयजल एंव स्वच्छता मंत्री मिथिलेश ठाकुर को फोन लगाया और ठेकेदार द्वारा की जा रही मनमानी से उन्हें अवगत कराया। मौके पर जुगसलाई नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी के साथ झामुमो के काफी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे।

नकटी डैम में पर्यटन सह नौका विहार का सांसद गीता कोड़ा ने किया उद्घाटन

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिम सिंहभूम जिले के बंदगांव प्रखंड अंतर्गत स्थित नकटी डैम में लगाए गए पर्यटन सह नौका विहार का उद्घाटन सांसद गीता कोड़ा ने फीता काटकर किया । साथ ही मछली पालन हेतु जीरा भी छोड़ा गया। मौके पर उपायुक्त अनन्य मित्तल, विधायक प्रतिनिधि सन्नी उरांव , जिला 20 सूत्री सदस्य त्रिशानु राय, जिला परिषद सदस्य बसंती पुरती, मुखिया मिथुन गागराई, नजारत उपसमाहर्ता जयंत रंजन, जिला खेल पदाधिकारी खुशहेंन्द्र सोनकेसरी सहित जनप्रतिनिधि और स्थानीय ग्रामीण उपस्थित रहे।

फीता काटकर नौका विहार का शुभारंभ करती सांसद गीता कोड़ा। ● फोटोन न्यूज

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद गीता कोड़ा ने कहा कि झारखंड एक बेहद खूबसूरत प्रदेश है। जल जंगल जमीन को हम रोजगार के रूप में लेकर आगे बढ़ सकते है। आज कई ऐसे प्रदेश हैं जो पर्यटन को लेकर बेहद आगे बढ़ रहे हैं, झारखंड में भी इसकी असीम संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से सिंहभूम में जहां सारंडा, पोड़ाहाट जैसे जंगल है, अनेको जलाशय, नदी, डैम हैं।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार ने चलंत लोक अदालत वाहन द्वारा जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

PHOTON NEWS CHAIBASA : जिला विधिक सेवा प्राधिकार पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा के तत्वाधान में 100 दिन विधिक सेवा जागरूकता और आउटरीच कार्यक्रम तथा 3 नवंबर से आरंभ विधिक सेवा सप्ताह के अंतर्गत स्थानीय सदर अस्पताल परिसर और सदर प्रखंड के डिलियामिर्चा, आचु गांव के साथ-साथ स्थानीय संप्रेषण गृह में चलंत लोक अदालत वाहन के साथ डीएलएसए के सदस्य विकास दोदराजका, एलएडीसी के उप प्रमुख सुरेंद्र प्रसाद दास, रत्नेश जी, पीएलवी नीतू सार, संगीता देवी, रेणु देवी, स्वाति मुखर्जी, संजय कुमार निषाद, असीमा चटर्जी, मो. शमीम, रविकांत ठाकुर के द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया साथ में ग्रामीणों को हैंड बिल एवं अन्य माध्यमों से विधिक जानकारी दी गई।

चलंत लोक अदालत वाहन के साथ अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

इस अवसर पर प्राधिकार के सचिव राजीव कुमार सिंह ने बताया कि प्रति वर्ष भारत में 9 नवंबर को देश के सभी नागरिकों को उचित, निष्पक्ष और सर्व सुलभ न्याय प्रक्रिया तक पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य समाज के वंचित वर्ग के लोगों को निःशुल्क न्याय प्राप्ति हेतु सहायता एवं समर्थन जुटाना होता है। राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस 9 नवंबर को है, अतः 3 नवंबर से आरंभ विधिक सेवा सप्ताह के दौरान लोगों तक विधिक जानकारी और सेवा पहुंचाना प्राधिकार की प्राथमिकता है।

बामेबासा में विधायक दीपक बिरुवा ने खेल स्टेडियम निर्माण कार्य का किया भूमि पूजन, बोले-

स्थानीय युवाओं के लिए स्टेडियम का निर्माण एक बड़ी सौगात

स्टेडियम निर्माण कार्य के उद्घाटन के अवसर पर विधायक व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHAIBASA : हेमंत सरकार खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी खेल प्रतिभाओं को आगे लाने का प्रयास कर रही है। खेल स्टेडियम बनने से स्थानीय खेलों के साथ ही खेल प्रतिभाओं को भी बढ़ावा मिलेगा। यह बातें टोंटो प्रखंड के बामेबासा फुटबाल मैदान में शनिवार को विधायक दीपक बिरुवा ने खेल स्टेडियम निर्माण कार्य हेतु भूमि पूजन करते हुए कहा। विधायक जी ने आगे कहा कि अब स्थानीय युवाओं के लिए खेल स्टेडियम का निर्माण एक बड़ी सौगात है। स्थानीय युवाओं की खेलों के प्रति रूचि को देखते हुए खेल स्टेडियम बनने से उन्हें बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। स्टेडियम बनने से स्थानीय युवाओं को सही मार्गदर्शन ट्रेनिंग मिलने से खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने को मौका मिलेगा। विधायक जी ने विधिवत भूमि पूजन के बाद नारियल फोड़ कर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया।

मौके पर जिला बीस सूत्री क्रियान्वयन समिति सदस्य सुभाष बनर्जी, प्रखंड प्रमुख सुनीता बारी, मुखिया मंगल सिंह कुंटिया, रंजीत गोप, जॉन तुबिद, जीतू बारी, योगेंद्र बारी, बामिया बारी, विकास बारी, केडी गोप, साधु चरण बारी, संजय बारी, नागेश्वर बारी, मानकी मेघनाथ बारी, दिलीप बारी, प्रभात बारी समेत अन्य शामिल थे।

नवयुवक संघ निश्चिंतपुर मालुका की ओर से दो दिवसीय फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करती मुखिया रीता हेस्सा व अन्य। ● फोटोन न्यूज

CHAIBASA : जगन्नाथपुर प्रखंड अंतर्गत नव युवक संघ निश्चिंतपुर मालुका की ओर से आयोजित दो दिवसीय फुटबाल प्रतियोगिता का शुभारंभ शनिवार किया गया। स्थानीय मुखिया रीता हेस्सा एवं ग्रामीण मुंडा अमरजीत गोप समेत अन्य अतिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करने के बाद गेंद किक मारकर एवं फीता काट कर मैच का शुभारंभ किया। उद्घाटन मुकाबला कुणाल एफसी बनाम एफएनसी ढीपासाई के बीच खेला गया। इसमें कुणाल एफसी की टीम ने एफएनसी ढीपासाई को 3-1 गोल से हराकर जीत दर्ज कराई। प्रतियोगिता का फाइनल सह समापन 5 नवंबर को होगा।

बता दें कि जगन्नाथपुर प्रखंड के निश्चिंतपुर मालुका मैदान मे नव युवक संघ की ओर से दो दिवसीय फुटबाल प्रतियोगिता में 32 टीमें भाग ले रही है। पुरस्कार स्वरूप प्रथम 50 हजार रूपए नकद समेत ट्रॉफी व फुटबाल, द्वितीय 30 हजार नकद समेत ट्रॉफी व फुटबाल, तृतीय 15 हजार व फुटबाल एवं चौथा पुरस्कार 10 हजार रूपए नकद समेत फुटबाल प्रदान किया जाएगा। इसे सफल बनाने के लिए मुकेश गोप, भरत गोप, सुमित गोप, सरोज गोप, सुशांत गोप, अजय हेस्सा, पूर्णचंद्र गोप, हाबिल, शभु अमल, पंकज, मुन्ना, प्रेम, प्रवीण, अमित, विक्की, विश्वनाथ, सुमत समेत अन्य सदस्य लगे हुए हैं।

इंटर कॉलेज कबड्डी टूर्नामेंट में हृषिकेश राय कॉलेज बना विजेता

इंटर कॉलेज कबड्डी टूर्नामेंट की विजेता हृषिकेश राय कॉलेज की टीम। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : संबलपुर विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित पुरुष इंटर कालेज कबड्डी टूर्नामेंट-2023 की विजेता हृषिकेश राय महाविद्यालय व उपविजेता म्यूनिसिपल कालेज राउरकेला बना। हृषिकेश राय महाविद्यालय परिसर में चल रहे दो दिवसीय टूर्नामेंट में संबलपुर विश्वविद्यालय अंर्तगत आने वाले करीब 27 कालेजों ने हिस्सा लिया था। टूर्नामेंट में कुल 26 मैच खेले गए जिसमें शुक्रवार को 13 मैच व शनिवार को अन्य 13 मैच के साथ सेमी फाइनल व फाइनल मैच खेला गया।

सभी टीम के खिलाड़ियों ने अपनी पूरी दमखम लगाते हुए फाइनल तक पहुंचने का प्रयास करती रही। हर मैच में खिलाड़ी समय को अहमियत देते हुए एक-एक प्वाइंट लाने के लिए काफी संघर्ष करते हुए नजर आए। सेमीफाइनल में मजबूत टीमें आपस में टकराई, दर्शकों द्वारा इस मैच को काफी रोमांच भरा रहा। दर्शकों ने भी अपनी-अपनी टीम के लिए खूब तालियां बजाई और उनकी हौसला अफजाई की। हृषिकेश राय कॉलेज और म्यूनिसिपल कॉलेज के बीच मुकाबला हुआ, जिसमें हृषिकेश राय कालेज ने म्यूनिसिपल कॉलेज राउरकेला को 18-13 से हराते हुए संबलपुर यूनिर्वसिटी चैंपियन का खिताब जीता। दोनों टीमों को हृषिकेश राय कालेज के प्राचार्य बिरंची पाणिग्राही ने सम्मानित किया।

शादी से पहले नाबालिग ने बच्चे को दिया जन्म

पीड़िता बोली- रेप किया गंदा वीडियो बनाया, अब साथ रहने से कर रहा मना

पूर्णिया । 15 साल की नाबालिग से पड़ोस में रहने वाला युवक यौन शौषण करता रहा। नाबालिग जब उसके बच्चे की मां बन गई, तो युवक अब उसे अपने साथ रखने से इनकार कर रहा है। नाबालिग का कहना है कि युवक ने पहली बार उसके साथ जोर जबरदस्ती की और वीडियो बना लिया। बाद में शादी का झांसा देकर युवक ने संबंध बनाता रहा। अब नाबालिग की गोद में 18 दिन का बच्चा है। मगर युवक उसे साथ रखने को तैयार नहीं। इसे लेकर गांव में पंच तक बैठा। मौलाना, सरपंच से लेकर जिला परिषद सदस्य तक मौजूद रहें। अब नाबालिग बच्चे को पिता का नाम तक नहीं दे पा रही। शुक्रवार को नाबालिग इन सब के बाद थक हारकर एसपी आमिर जावेद के आगे न्याय की गुहार लगाने पहुंची। मामला मारंगा थाना क्षेत्र के लोहजर गांव से जुड़ी है। नाबालिग को अब ये समझ नहीं आ रहा कि वो अब अपने दुधमुंहे बच्चे को लेकर कहां जाए। पीड़िता का कहना है कि अब लड़का उसकी छोटी जाति से होने का बहाना बनाकर उससे शादी से इनकार कर रहा है। वहीं उसके खिलाफ जाने पर उसकी प्राइवेट वीडियो वायरल करने की धमकी देता रहा है। पूरी कहानी करीब डेढ़ साल पुरानी है। पीड़िता ने बताया कि घर की माली हालत खराब होने के कारण पिता पंजाब काम करने

चले गए। मां और वो खुद भी गांव में ही चौके बर्तन का काम करने लगी। कुछ दिन बाद काम छूट जाने पर गांव में रहने वाले मो. इबरान के बेटे मोहम्मद रजी(22) ने गांव के जमींदार के घर काम पर रखवाया। यहीं उसकी मोहम्मद रजी से पहली मुलाकात थी। दोनों अक्सर आते - जाते रास्ते में मिलते। धीरे -धीरे दोनों की बातचीत होने लगी। इसी पहचान का फायदा उठाकर करीब एक साल पहले चौका बर्तन करने के दौरान मो. रजी मालिक के घर के अंदर आ गया। उसके साथ जबरन गंदा काम किया और फोन से वीडियो बना लिया। इसके बाद वह शादी का झांसा देकर नाबालिग से यौन शौषण करता रहा। इसी दौरान वह गर्भवती हो गई। गर्भ ठहरने का एहसास होने की बात उसने मो. रजी से शेयर किया। इसकी भनक लगते ही वो नाबालिग से दूर रहने लगा। जिसके बाद एक रोज उसने अपने परिजनों और गांव वालों को सारी बात बताने की बात कही। इसके बाद रजी ने नाबालिग को उसके खिलाफ जाने पर गंदा वीडियो वायरल करने की धमकी दी। इसके बाद पीड़िता ने घरवालों को पूरी बात बताई। पिता पंजाब से वापस घर लौट आए। मो. रजी से सुलह करने की कई कोशिश की गई। मगर वो उसे साथ रखने को तैयार नहीं हुआ। जिसके बाद गांव में पंचायत बैठी। मौलाना, सरपंच यहां तक की जिला परिषद सदस्य तक मौजूद रहें। करीब 20 रोज पहले उसने नवजात को जन्म दिया। जिसके बाद ये खबर मो रजी तक पहुंचवाई। मगर मो. रजी और उसके घर वाले उसे और उसके बच्चे को देखने तक नहीं आए। हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होते ही वे घर वालों के साथ मो. रजी के पास पहुंची। मगर उसने अपने साथ रखने से साफ इनकार कर दिया। उसने बताया कि उसकी किसी दूसरी लड़की से निकाह होने वाली है। जिसके बाद एसपी की ओर से उसे हर संभव मदद का आश्वासन दिया गया है। एसपी आमिर जावेद ने कहा कि पीड़िता की ओर से आवेदन प्राप्त हुआ है। मरंगा थाना को कॉल कर तत्काल प्रभाव से पीड़िता की लिखित आवेदन स्वीकार कर मामले की जांच के आदेश दिए गए हैं।

संक्षिप्त डायरी

मोतिहारी में खाना बनाने के दौरान सिलेंडर ब्लास्ट, 7 झुलसे

मोतिहारी । खाना बनाने के दौरान गैस सिलेंडर ब्लास्ट हो गया। इससे पूरे घर में भीषण आग लग गई। हादसे में 7 लोग गंभीर रूप से झुलस गए। दो की हालत नाजुक बनी हुई है। स्थानीय लोगों ने आनन-फानन में सदर अस्पताल भर्ती कराया। प्राथमिकी इलाज के बाद सभी को मुजफ्फरपुर के एसकेएमसीएच रेफर कर दिया गया। घटना मोतिहारी के दरपा थाना क्षेत्र के भथनहिया गांव की है। बताया जा रहा है कि जग्गू राम(55) की पत्नी उर्मिला देवी(50) गैस पर खाना बनाने गई थी। इस दौरान जैसे ही उसने चूल्हा जलाया, वैसे ही सिलेंडर में आग लग गई। आग की सूचना मिलने के बाद जग्गू राम, उसका बेटा सूरज कुमार(12), जग्गू की भाई की पत्नी निर्मला देवी(38), पड़ोसी प्रदीप कुमार(40), मुकुंद कुमार(10), पड़ोसी अंकित कुमार(14) पहुंचे। इसी दौरान अचानक सिलेंडर ब्लास्ट हो गया, जिससे पूरे घर में आग लग गई। इसकी चपेट में सभी लोग आ गए। घटना के बाद उर्मिला घायल हालत में ही चिल्लाने लगी। इस बीच गांव के लोगों ने फायर ब्रिगेड को सूचना दी। स्थानीय लोगों ने सभी को अस्पताल में भर्ती कराया। सिलेंडर ब्लास्ट में घायल सभी का इलाज कर रहे डॉक्टर मुकेश कुमार ने बताया कि घटना में सभी लोग 50% से लेकर 90% तक झुलस गए हैं। सभी का इलाज किया जा रहा है। इसमें जग्गू और उसकी पत्नी उर्मिला की हालत गंभीर है। सभी को बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। सदर अस्पताल के हेल्थ मैनेजर कौशल किशोर दुबे ने बताया कि घायल के आने से पहले हम लोगों को सूचना मिल गई थी। सभी के इलाज के लिए हम लोग पहले से तैयार थे। सभी को बेहतर इलाज के लिए एसकेएमसीएच रेफर कर दिया गया है।

पटना हाईकोर्ट के 2 जज ने ली शपथ

पटना। हाई कोर्ट के दो नए न्यायधीश को शपथ दिलाई गई है। राज्यपाल राजेंद्र आर्लेकर ने शनिवार की सुबह शपथ दिलाई है। यह पहला मौका है जब पिछले चार दिन में चार जज को पद की शपथ दिलाई गई है। शनिवार की सुबह-सुबह राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने न्यायमूर्ति रूद्र प्रकाश मिश्रा और न्यायमूर्ति रमेश चंद मालवीय को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद की शपथ दिलाई है। राजभवन के दरबार हॉल में सुबह 8:45 शपथ ग्रहण समारोह का का आयोजन किया गया। इसमें मंत्री, बिहार विधान सभा में विरोधी दल के नेता विजय कुमार सिन्हा, पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं अन्य न्यायाधीशगण, महाधिवक्ता, वरीय पदाधिकारीगण उपस्थित थे। इससे पहले जस्टिस मिश्रा हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल और रमेश चंद्र मालवीय विधि सचिव के पद पर कार्यरत थे। न्यायाधीश रुद्र प्रकाश मिश्रा बिहार उच्चतर न्यायिक सेवा के वरीय न्यायाधीश रहे हैं। उन्होंने 10 मई, 2010 को बिहार के गया जिले में अपर जिला जज के रूप में न्यायिक सेवा की शुरूआत की थी। उन्होंने सहरसा, सासाराम और भागलपुर जिले में प्रधान न्यायाधीश और नवादा जिला के जिला जज के रूप में काम किया है। दरअसल, सप्ताह भर से कम समय में दूसरा मौका है कि राजभवन मे ओथ सेरोमनी आयोजित की गई है। इससे पहले एक नवंबर को राज्यपाल ने दो न्यायाधीशों को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद की शपथ दिलाई थी। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने न्यायमूर्ति नानी टैगिया एवं न्यायमूर्ति गुन्नू अनुपमा चक्रवर्ती को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद की शपथ दिलाई थी। यह कार्यक्रम भई राजभवन के दरबार हॉल में ही आयोजित हुई थी।

कार ने दंपती को मारी टक्कर, मौत

गोपालगंज । थावे थाना क्षेत्र के थावे स्थित डीएवी स्कूल के पास शुक्रवार को अनियंत्रित कार की टक्कर से स्कूटी सवार दंपत्ति की मौत हो गई। जिसके बाद शनिवार को आक्रोशित परिजनों ने शव को सड़क पर रख कर विरोध प्रदर्शन कर सड़क जाम कर दिया। जाम के कारण सड़क पर वाहनों की लंबी कतार लग गई। सड़क पर जाम लग जाने के कारण लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने परिजनों को समझा बुझा कर मामला शांत कराया। शहर के आर्य नगर के वार्ड नंबर 21 मोहल्ले में मृतक दंपती का अपना मकान है। दोनों शुक्रवार को स्कूटी पर सवार होकर अपने गांव मीरगंज थाना क्षेत्र के पेऊली जा रहे थे। इस बीच वे जैसे ही थावे थाना क्षेत्र के थावे डीएवी स्कूल के पास पहुंचे कि रॉन्ग साइड से आ रही तेज रफ्तार से कार (बैगनार) ने उनकी स्कूटी में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में मौके पर ही पति की मौत हो गई जबकि पत्नी बुरी तरह जख्मी हो गई। जिसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। परिजनों ने मुआवजे की मांग को लेकर शनिवार को शव को लेकर डीएवी स्कूल के पास हादसे की जगह पहुंच गए और सड़क पर शव रखकर सड़क जाम कर दिया। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे थावे थानाध्यक्ष शशि रंजन ने आक्रोशित लोगों को समझा-बुझा कर जाम को खाली कराया।

पीयूष हत्याकांड का मुख्य आरोपी पटना से गिरफ्तार

नवादा । नरहट गांव में पीयूष उर्फ छोटू हत्याकांड का मुख्य आरोपी शुभम कुमार उर्फ गोलू को रजौली एसडीपीओ पंकज कुमार, इंस्पेक्टर सह नरहट थानाध्यक्ष मुन्ना कुमार वर्मा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने पटना राजीव नगर से गिरफ्तार कर शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। रजौली एसडीपीओ पंकज कुमार ने बताया कि 28 अक्टूबर को नरहट थाना अंतर्गत सुमन सिंह के आवास में एक शव बरामद हुआ था। इस कांड के वादी प्रिंस कुमार के फर्द बयान के आधार पर नरहट थाना कांड संख्या 521/ 23 दर्ज कर शुभम उर्फ गोलू , निक्की कुमार उर्फ विराट कुमार, मुन्ना कुमार उर्फ निशांत कुमार को आरोपी बनाया गया था। तीनों नरहट से घटना के दिन से फरार थे। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए कांड के प्राथमिक अभियुक्त निक्की कुमार उर्फ विराट कुमार, मुन्ना कुमार निशांत कुमार को नरहट एवं नदीगंज से 2 नवंबर को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि कांड के शेष बचे नामजद मुख्य आरोपी शुभम उर्फ गोलू को 3 नवंबर को पटना राजीव नगर से गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है। उन्होंने बताया कि मुख्य आरोपी गोलू से पूछताछ में बताया कि घटना के दिन घर पर एक छोटी सी पार्टी रखी थी। जिसमें सभी ने शराब का भी सेवन किया था। मृतक ने गोलू का टेबल टॉप ग्लास एवं क्रॉकरी का सामान को तोड़ दिया था। इस बात से नाराज होकर तीनों आरोपी ने लाठी डंडे एवं बेल्ट से मारपीट कर पीयूष की हत्या कर दी थी। इस घटना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक नवादा के द्वारा अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु रजौली अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी पंकज कुमार के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया जिसमें पुलिस निरीक्षक सह नरहट थानाध्यक्ष मुन्ना कुमार वर्मा, पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष मेसकौर धर्मेंद्र कुमार यादव, एसआई रश्मि कुमारी, एसआई आदित्य कुमार शामिल थे। गठित टीम के द्वारा तकनीकी साक्ष्य के आधार पर इस घटना में संलिप्त प्राथमिकी नामजद सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

बिहार में भूकंप के तेज झटके

पटना। बिहार में पटना समेत 11 जिलों में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र नेपाल में 10 किलोमीटर जमीन के नीचे था। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के मुताबिक, रिएक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 6.4 मापी गई है। बिहार में भूकंप के झटकों के बाद लोग अपने घर के बाहर निकल आए। फिलहाल अभी किसी तरह के जानमाल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। करीब एक मिनट तक धरती हिलती रही। कई बार आफ्टर शॉक्स भी महसूस किए गए। जिन जिलों में भूकंप के झटके महसूस किए गए उनमें पटना, आरा, दरभंगा, गया, वैशाली, खगड़िया, सीवान, बेतिया, बक्सर, नालंदा, नवादा शामिल है। नेपाल में शुक्रवार रात 11:32 बजे 6.4 तीव्रता का भूकंप आया। न्यूज एजेंसी अठकके मुताबिक, नेपाल में भूकंप के चलते करीब 128 लोगों की मौत हुई है। इसमें 36 मौतें रुकुम पश्चिम और 92 लोगों ने जाजरकोट में जान गंवाई है। जबकि कई लोग घायल हैं। DIG कुवेर कडायतेन ने मौतों की पुष्टि की है। नेपाल में आए भूकंप के झटके दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में भी महसूस किए गए। इसका केंद्र नेपाल में काठमांडू से 331 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में 10 किलोमीटर जमीन के नीचे था। भारत में भूकंप से अभी तक किसी तरह के जान-माल के नुकसान की खबर नहीं है। सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल और दरभंगा समेत 8 जिले सिस्मिक जोन-5 में आते हैं, जो बेहद खतरनाक हैं। जबकि पटना, भागलपुर सहित 24 जिले जोन 4 में आते हैं, जहां भूकंप का खतरा थोड़ा कम रहता है। वहीं, औरंगाबाद, बक्सर, कैमूर और रोहतास सहित 6 जिले जोन- 3 में आते हैं। बगहा के रहने वाले संतोष कुमार श्रीवास्तव भूकंप आने के बाद नेशनल हाईवे 727 के किनारे खड़े हो गए। उन्होंने बताया कि ऐसा लगा की चौकी और पंखा हिल रहा था। हम तुरंत घर से बाहर आ गए। पत्नी और बच्चों को भी बाहर निकाला। डर लग रहा था कहीं फिर से भूकंप ना आ जाए। घर में जाने से डर लग रहा था। बगहा के ही राजदेव ने बताया कि हम घर में सोए हुए थे तभी भूकंप आ गया। झटके महसूस हो रहे थे। चीजें हिल रही थी। घर से भाग कर बाहर आ गए, अभी भी डर लग रहा है।

पटना में हरियाणा पुलिस को लोगों ने पीटा

पटना । एसके पुरी थाना क्षेत्र में हरियाणा की चरखी दादरी थाना की पुलिस को लोगों ने पीट दिया। लोगों ने चोर और किडनैपर बताते हुए पिटाई शुरू कर दी। लोगों की भीड़ बढ़ता देख हरियाणा पुलिस वहां से भाग गई। लेकिन, एक दरोगा वहीं रह गया। उसे लोगों ने बंधक बना लिया। सूचना मिलने के बाद एसके पुरी थाना और पाटलिपुत्र थाना मौके पर पहुंची। दरोगा को लोगों से छुड़ाया और थाने ले आई। पटना के एसके पुरी थाना क्षेत्र के अपार्टमेंट में हरियाणा पुलिस सुनील कुमार नाम के जालसाज को पकड़ने के लिए यहां पहुंची थी। हरियाणा पुलिस ने सुनील को पकड़ लिया। इस दौरान आसपास के लोग अपहरण का हल्ला करने लगे। पुलिसकर्मियों से मारपीट करने लगे। छह की संख्या में पुलिस वाले सिविल ड्रेस में थे। मारपीट के दौरान इनमें से 5 पुलिसकर्मी भाग गए। लोगों ने हरियाणा पुलिस के दरोगा विशाल सिंह को पकड़ लिया। उसकी पिटाई कर के उसको बंधक बना लिया। सूचना पुलिस को मिली। मौके पर एसके पुरी थाना और पाटलिपुत्र थाना की पुलिस पहुंची। पुलिस ने दरोगा को मुक्त कराया। जालसाज सुनील बिहार का रहने वाला है। सुनील आर्मी और पुलिस में भर्ती कराने के लिए लोगों से ठगी करता है। पैसा आने के बाद वह उस शहर को छोड़ कर गायब हो जाता था।

अमित शाह निकालेंगे महा गठबंधन के जातीय कार्ड का तोड़

5 नवंबर को मुजफ्फरपुर से वैशाली को साधेंगे, 7 रैलियों में 17 लोकसभा..100 विधानसभा क्षेत्र कवर

पटना। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 5 नवंबर को बिहार दौरे पर आ रहे हैं। वे मुजफ्फरपुर में पताही एयरपोर्ट में जनसभा को संबोधित करेंगे। 50 दिन के भीतर शाह का ये दूसरा बिहार दौरा है। इससे पहले 16 सितंबर को उन्होंने मधुबनी के झंझारपुर और अररिया में जनसभा को संबोधित किया था। हालांकि, बिहार में महागठबंधन की सरकार बनने के बाद बिहार में उनकी रैली है। अपनी 7 रैलियों के दौरान अमित शाह 17 लोकसभा क्षेत्रों और 100 से ज्यादा विधानसभा के इलाकों को कवर कर चुके हैं। अमित शाह की मुजफ्फरपुर रैली की टाइमिंग बिहार की सियासत के लिहाज से काफी अहम है। जातीय गणना की रिपोर्ट जारी होने के बाद वे पहली बार बिहार आ रहे हैं। वहीं, उनकी बिहार यात्रा के अगले दिन से ही बिहार विधानसभा का शीतकालीन सत्र शुरू हो रहा है। ऐसे में पॉलिटिकल एक्सपर्ट का मानना है कि शाह, प्रदेश में महागठबंधन सरकार की नीतियों के खिलाफ अपना एजेंडा सेट कर सकते हैं। बिहार दौरे से पहले शुक्रवार (3 नवंबर) को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जाति जनगणना के मसले पर कहा है कि बीजेपी इसके खिलाफ नहीं है। उन्होंने छत्तीसगढ़ के रायपुर में बीजेपी का संकल्प पत्र जारी करने के दौरान प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, "हम राष्ट्रीय पार्टी हैं। हम वोटों की राजनीति नहीं करते हैं। सभी से चर्चा करने के बाद जो भी उचित

निर्णय होगा हम बताएंगे। इसके आधार पर चुनाव की नैय्या पार लगाना ठीक नहीं है। बीजेपी ने इसका कभी विरोध नहीं किया है। बहुत सोच समझकर निर्णय लेना होता है, उचित समय पर हम बताएंगे" बिहार सरकार जातीय गणना की रिपोर्ट जारी कर चुकी है। अमित शाह की रैली के अगले ही दिन 6 नवंबर से बिहार विधानसभा का शीतकालीन सत्र शुरू होने जा रहा है। ऐसी संभावना है कि जातियों की नई रिपोर्ट के आधार पर सरकार बिहार में आरक्षण का दायरा बढ़ा सकती है। 2024 लोकसभा चुनाव से पहले इसे सीएम नीतीश कुमार का मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा है। ऐसे में शाह मुजफ्फरपुर से जाति के खिलाफ नया एजेंडा सेट कर सकते हैं। बीजेपी की तरफ से बिहार की 10 सीटों की लिस्ट तैयार की गई है। इसमें उत्तर बिहार के तीन महत्वपूर्ण जिले वैशाली, वाल्मीकि नगर और मधुबनी जैसे तीन महत्वपूर्ण जिले शामिल हैं। पार्टी इन सीटों पर अपनी पकड़ मजबूत करना चाहती है। देशभर के कमजोर लोकसभा सीटों की कमान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और अमित शाह ने अपने हाथों में ले रखा है। उत्तर बिहार के इन तीन जिलों में दो जिलों वाल्मीकि नगर और मधुबनी के झंझारपुर में अमित शाह पहले ही रैली कर चुके हैं। मुजफ्फरपुर की उनकी रैली को वैशाली के दृष्टिकोण से ज्यादा महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पॉलिटिकल एक्सपर्ट की मानें तो मुजफ्फरपुर की रैली से अमित शाह उत्तर बिहार में पड़ने वाले मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चंपारण और पश्चिमी चंपारण जिले को साधेंगे। वैशाली को कभी आरजेडी का गढ़ माना जाता था। 1996 से 2009 तक यहां आरजेडी जीतती रही है। पार्टी के वरिष्ठ नेता रघुवंश प्रसाद सिंह के बदौलत यहां आरजेडी का एकछत्र राज रहा। बीजेपी यहां से लोकसभा का एक भी चुनाव नहीं जीती है। अमित शाह से मुजफ्फरपुर से वैशाली लोकसभा क्षेत्र को साधने आ रहे हैं। राजपूत और भूमिहार बाहुल इलाका होने के बाद भी 2014 से बीजेपी इसे अपने सहयोगी पार्टियों के लिए छोड़ते रही है। पिछले 2 चुनाव से लोजपा इस सीट से जीत रही है। 2014 में पार्टी के राम किशोर सिंह तो 2019 में वीना देवी यहां से चुनाव जीती थीं। इस बार वैशाली से बीजेपी अपना उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रही है। मुजफ्फरपुर इकलौती ऐसी सीट है, जहां मल्लाह निषाद की आबादी साढ़े तीन लाख से ज्यादा है। यानी निषाद मुजफ्फरपुर में जीत-हार का बड़ा फैक्टर है। इसे नजर अंदाज करने का खामियाजा बीजेपी को बोचहां उपचुनाव में मिल चुका है। कुढ़नी उपचुनाव में भी पार्टी को कड़ा टक्कर मिला था। यही कारण है कि खुद को मल्लाहों का नेता कहने वाले मुकेश सहनी को बीजेपी अपने पाले में शामिल करना चाहती है, लेकिन सहनी निषाद आरक्षण की जिद पर अड़ी है। पार्टी अब अपने नेता हरि सहनी पर दांव लगा रही है। इस रैली के माध्यम से अमित शाह इस समस्या का भी समाधान कर सकते हैं। 1999 से मुजफ्फरपुर लोकसभा से एनडीए के उम्मीदवार चुनाव जीतते रहे हैं। 2014 से लगातार यहां से भाजपा के अजय निषाद सांसद हैं। ऐसे में मुजफ्फरपुर को भाजपा का सुरक्षित सीट माना जाता है। विभेष त्रिवेदी कहते हैं कि सांसद अजय निषाद और पार्टी के भीतरी कलह के कारण एंटी इनकंबेसी की स्थिति बन गई है। ऐसे में अमित शाह की मुजफ्फरपुर यात्रा से इसका समाधान निकलने की उम्मीद है। अमित शाह की रैली स्थल के चयन को भी बेहद खास माना जा रहा है।

दो पक्षों में मारपीट, 4 लोग जख्मी

गोपालगंज । बरौली थाना क्षेत्र के पिपरहिया गांव में दो पक्षों के बीच जमीनी विवाद को लेकर मारपीट हो गई। इस मारपीट के मामले में एक पक्ष से चार लोग जख्मी हो गए। जिन्हें तत्काल इलाज के लिए गोपालगंज सदर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया है। जहां सभी का इलाज चल रहा है। जख्मियों की पहचान बरौली थाना क्षेत्र के पिपरहिया गांव निवासी स्व भदई यादव की पत्नी लक्ष्मीना देवी, बेटा सुरेंद्र यादव, धर्मेंद्र यादव के अलावे हीरालाल यादव के बेटा गोलू कुमार और पत्नी चिंता देवी के रूप में हुई है। जख्मी लक्ष्मीना देवी ने बताया कि पिपरहिया गांव निवासी उसके पाटीदार द्वारा पिपरहिया गांव स्थित खेत के आधा हिस्सा में जबरन जोताई कार आलू की बुवाई कर दिया था। जिसका विरोध करने पर आरोपियों द्वारा लाठी-डंडे और धारदार हथियार से हमला कर दिया। बीच-बचाव करने पहुंचे परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भी मारपीट करने लगे। जिसके कारण हम चार लोग जख्मी हो गए जख्मी अवस्था में अन्य परिजनों के द्वारा तत्काल इलाज के लिए बरौली प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार किया लेकिन स्थिति में सुधार ना होता देख गोपालगंज सदर अस्पताल रेफर कर दिया। बरौली थानाध्यक्ष ने बताया की अभी तक आवेदन प्राप्त नही हुआ है। आवेदन प्राप्त होने के बाद मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

ट्रक और बाइक के बीच टक्कर, एक की मौत

जमुई । झाझा सोनो मुख्य मार्ग के भीठरा इलाके में ट्रक और बाइक की जोरदार टक्कर हो गई। जिसमें बाइक सावर युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने घायल युवक को इलाज के लिए झाझा रेफर असपताल में भर्ती कराया गया। जहां डॉक्टर ने नाजुक स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए जमुई सदर अस्पताल में भेज दिया। जहां इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। मृतक युवक की पहचान झाझा थाना क्षेत्र के धमना पंचायत के काशीकुंड मुसहरी टोला का रहने छोटू कुमार 28 वर्ष के रूप में हुई है। युवक की मौत के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। स्थानीय लोगो ने बताया कि युवक बाइक से झाझा की ओर जा रहा था। तभी सामने से एक अनियंत्रित ट्रक ने उसे जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे युवक सड़क किनारे झाड़ियों में जा गिरा। करीब आधे घंटे तक बेहोशी को हालत में युवक झाड़ियों में पड़ा रहा था। तभी राहगीरों की नजर कहराते हुए झाड़ियां में युवक पर पड़ी। जिसके बाद इस घटना की सूचना डायल 112 नंबर की पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर गंभीर रूप से घायल युवक को इलाज के लिए झाझा रेफरल अस्पताल में भर्ती कराया। जमुई सदर अस्पताल में युवक की मौत हो गई। ग्रामीण गौरव सिंह ने बताया कि युवक को सिर में गंभीर चोट लगी है। जिसके कारण उसकी स्थिति नाजुक बनी हुई थी। युवक ने हेलमेट नहीं पहना हुआ था। डायल 112 नंबर की पुलिस ने बताया कि सूचना मिली कि ट्रक और बाइक की टक्कर में एक युवक का एक्सीडेंट हो गया है सूचना मिलते ही युवक को अस्पताल में भर्ती कराया। जिसका इलाज के दौरान जमुई सदर अस्पताल मौत हो गया। फिलहाल पुलिस कागजी प्रक्रिया कर युवक के शव का पोस्टमार्टम करा कर परिजनों को सौंप देने की बात कही।

मैलवेयर से द्वेषपूर्ण जासूसी

एक जीवंत लोकतंत्र में, विपक्ष और प्रेस एक सत्तारूढ़ प्रतिष्ठान द्वारा नियंत्रित उस ढांचे के महत्वपूर्ण घटक हैं जो तभी असरदार हो सकता है जब उसके प्रति जवाबदेही हो। एक दर्जन से ज्यादा विपक्षी नेताओं और पत्रकारों को एपल की ओर से ईमेल अलर्ट मिला है कि उनके फोन को ह्यराज्य-प्रायोजित हमलावरोंह्ल द्वारा निशाना बनाया जा रहा है। यह बताता है कि यह उसी चीज का दोहराव हो सकता है जिससे हाल के पेगासस प्रकरण में पहले और चौथे स्तंभ के ये सदस्य गुजरे थे। सन- 2022 के शुरू में, न्यूयॉर्क टाइम्स ने एक लेख में विस्तार से बताया कि कैसे पेगासस (इजराइल के एनएसओ ग्रुप द्वारा विकसित स्पाईवेयर) का इस्तेमाल इजराइली हितों को आगे बढ़ाने के लिए किया गया। तेल अवीव ने इसकी पेशकश अन्य देशों को की जिन्होंने इसका इस्तेमाल विपक्षी नेताओं, पत्रकारों और अपने आलोचकों के खिलाफ किया। जुलाई 2021 में, पत्रकारों के एक कंसोर्टियम, द पेगासस प्रोजेक्ट, ने पाया कि भारत में कम-से-कम 40 पत्रकार, कैबिनेट मंत्री और अन्य अधिकारी संभवतः पेगासस सॉफ्टवेयर के जरिये निगरानी के अधीन थे। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट के पैनल ने जिन 29 फोनों की जांच की थी, उनमें उसे स्पाईवेयर का कोई अकाट्य सबूत नहीं मिला; लेकिन शीर्ष अदालत ने यह भी उल्लेख किया कि केंद्र सरकार पैनल के साथ सहयोग नहीं कर रही है। एनएसओ ग्रुप और उसके उत्पादों (जिन्हें न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत सरकार ने, कथित तौर पर, 2017 में इजराइल से दो अरब डॉलर के उस पैकेज के हिस्से के रूप में खरीदा जिसमें अत्याधुनिक हथियार और खुफिया उपकरण शामिल थे) को लेकर भारत सरकार के ठंडे और उपेक्षापूर्ण रवैये के उलट, पश्चिम में दूसरी सरकारों ने स्पाईवेयर के इस्तेमाल पर खुलासों के बाद कड़े कदम लागू किये। एपल के आईफोन दुनिया भर में तकरीब 20 फीसदी, और भारत में तकरीबन 7 फीसदी स्मार्टफोन यूजर्स द्वारा इस्तेमाल किये जाते हैं। इनका इस्तेमाल मुख्य तौर पर इनकी विविधतापूर्ण सुविधाओं और मजबूत सुरक्षा इंतजामों के लिए किया जाता है। शोधकताओं ने पाया था कि पेगासस जैसे जासूसी सॉफ्टवेयर ने 2016 के शुरू में ही आईफोन और ऑपरेटिंग सिस्टम आईओएस को निशाना बनाया था। और, एपल एनएसओ पर मुकदमा चलाने के अलावा, पेगासस से जुड़ी गड़बड़ी ठीक करने के लिए अपडेट लेकर आया था। कंपनी ने साफ किया है कि अभी भेजे गये अलर्ट किसी ह्यखास स्टेट ऐक्टरह्ल पर आरोप नहीं लगाते। उसने यह भी कहा कि वह यह खुलासा नहीं कर पायेगी कि निशाने पर लिये गये लोगों का पता कैसे चला। हालांकि, उसने दोहराया कि इन अलर्ट संदेशों को गंभीरता से लिया गया है। फिर भी, विपक्षी नेताओं और पत्रकारों के खास तौर पर निशाना होने के मद्देनजर, यह सवाल अहम है कि क्या सत्तारूढ़ प्रतिष्ठान उन्हें निगरानी के अधीन ला रहा है। इसका सत्यापन एक स्वतंत्र और शक्तिसंपन्न जांच से ही हो सकता है, जिसमें शीर्ष अदालत पुनः शामिल हो।

योजना निर्माण की खूबियां

वर्ष 2024 की शुरूआत में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आजादी के 100 साल पूरे होने तक देश को 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था वाले एक विकसित राष्ट्र में बदलने से जुड़े एक रोडमैप का अनावरण किए जाने की उम्मीद है। विजन इंडिया@2047 योजना, जैसाकि इसे आधिकारिक तौर पर नाम दिया गया है, पर लगभग दो सालों से काम चल रहा है और इसमें विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारी इस बात पर विचार-मंथन कर रहे हैं कि देश को विकास के वर्तमान स्तर से उस मुकाम तक कैसे ले जाया जाए जहां वह होना चाहता है। नीति आयोग, इस विजन दस्तावेज को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में, जल्द ही अपने केंद्रीय विचारों व लक्ष्यों को विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा, ऐप्पल प्रमुख टिम कुक के साथ-साथ भारतीय उद्योगपतियों एवं विचारकों सहित सभी क्षेत्रों के शीर्ष प्रतिभाओं के सामने उन्हें और बेहतर बनाने तथा किसी भी कमजोर नुक्ते की ओर ध्यान दिलाने के मकसद से पेश करेगा। लोकसभा चुनाव से ऐन पहले आने वाले, इस योजना को संभावित मतदाताओं के लिए सरकार के नीतिगत वादे के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन चुनावी नतीजों से परे, भविष्य की सरकारों के लिए इस व्यापक एजेंडे के प्रति एक गंभीर नजरिया रखना अच्छा रहेगा। वर्ष 1991, जब वैश्विक आर्थिक उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी महज 1.1 फीसदी थी, से उभरते हुए आज दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में 3.5 फीसदी की हिस्सेदारी तक पहुंच जाने का इस देश का उत्थान विभिन्न राजनीतिक विचारधारा वाली सरकारों द्वारा बड़े पैमाने पर सुधार और उदारीकरण के एजेंडे पर अड़े रहने की वजह से संभव हुआ है। सुधारों की रफ्तार और जोश में रुकावटें वर्तमान गठबंधन-स्वतंत्र शासन समेत सभी सरकारों के दौरान दिखाई देती रही हैं, खासकर भूमि और श्रम जैसे कारक बाजारों में जरुरी पेचीदा बदलावों के मामले में। अंतिम योजना में ऐसे चुनौतीपूर्ण सुधारों को पूरा करने में मदद करने और भारत की विकास कहानी पर दांव लगाने के इच्छुक वैश्विक निवेशकों के लिए नीतिगत निश्चितता सुनिश्चित करने से जुड़े कुछ विचारों का समावेश होना चाहिए। सरकार की भूमिका को एक माइक्रो-मैनेजर के बजाय एक समर्थक के रूप में सीमित करना एक और पहलू है, जो महत्वपूर्ण होगा।

क्रिकेट का कोहिनूर विराट कोहली

ANALYSIS

आर.के. सिन्हा

दयानंद गिरि आश्रम में विराट और उनकी पत्नी अनुष्का तीन बार यात्रा कर चुकी हैं। वे इस साल के आरंभ में उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर भी पहुंचे। उन्होंने सुबह चार बजे भस्म आरती की और भगवान का आशीर्वाद लिया। विराट कोहली ने आरती के बाद मंदिर के गर्भगृह में जाकर पंचामृत पूजन अभिषेक किया। विराट कोहली ने गले में रुद्राक्ष की माला भी धारण की। अगर विराट कोहली की शख्सियत के इस पक्ष से हटकर बात करें तो वे आजकल अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। वे सारी दुनिया की क्रिकेट के सबसे सम्मानित खिलाड़ी बन चुके हैं। विराट कोहली का आगामी 5 नवंबर को 35 वां जन्मदिन है। उस दिन वे कोलकाता के ईडन गार्डन मैदान में खेल रहे होंगे। उनके क्रिकेट मैदान की शतकों का उनके करोड़ों फैंस को इंतजार रहता है। क्या विराट कोहली अपने जन्मदिन पर साउथ अफ्रीका के बीच होने वाले मुकाबले में शतक मारेंगे? विराट कोहली वनडे क्रिकेट में एक महा रिकॉर्ड से एक शतक दूर हैं।

विराट कोहली का क्रिकेट के मैदान में जुझारू तरीके से खेलने के अलावा एक दूसरा भी चेहरा है। वे जब क्रिकेट नहीं खेल रहे होते, या कहें कि फुर्सत में होते हैं तो वे सपरिवार वृंदावन जाना पसंद करते हैं। विराट कोहली वृंदावन में श्री परमानंद जी का आशीर्वाद लेने जाते हैं। वे ऋषिकेश में दयानंद गिरि आश्रम में भी जाते हैं। दयानंद गिरि आश्रम में विराट और उनकी पत्नी अनुष्का तीन बार यात्रा कर चुकी हैं। वे इस साल के आरंभ में उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर भी पहुंचे। उन्होंने सुबह चार बजे भस्म आरती की और भगवान का आशीर्वाद लिया। विराट कोहली ने आरती के बाद मंदिर के गर्भगृह में जाकर पंचामृत पूजन अभिषेक किया। विराट कोहली ने गले में रुद्राक्ष की माला भी धारण की। अगर विराट कोहली की शख्सियत के इस पक्ष से हटकर बात करें तो वे आजकल अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। वे सारी दुनिया की क्रिकेट के सबसे सम्मानित खिलाड़ी बन चुके हैं। विराट कोहली का आगामी 5 नवंबर को 35 वां जन्मदिन है। उस दिन वे कोलकाता के ईडन गार्डन मैदान में खेल रहे होंगे। उनके क्रिकेट मैदान की शतकों का उनके करोड़ों फैंस को इंतजार रहता है। क्या विराट कोहली अपने जन्मदिन पर साउथ अफ्रीका के बीच होने वाले मुकाबले में शतक मारेंगे? विराट कोहली वनडे क्रिकेट में एक महा रिकॉर्ड से एक शतक दूर हैं। पिछले मैच में वे इस रिकॉर्ड से महज 5 रन दूर रह गए थे। विराट के नाम वनडे में 48 शतक दर्ज हैं, सबसे ज्यादा शतकों का रिकॉर्ड 49 का है जो सचिन तेंदुलकर के नाम है। अपनी तमाम उपलब्धियों के बावजूद विराट कोहली की विनम्रता अनुकरणीय है। वे बिशन सिंह बेदी के सार्वजनिक रूप से चरण स्पर्श करते थे। दिल्ली क्रिकेट के केन्द्र फिरोजशाह कोटला मैदान में होने वाले कार्यक्रमों में विराट कोहली कई बार बेदी के चरण स्पर्श करते देखे गए थे। उन्होंने यह मुकाम परिश्रम, साधना और पक्के इरादे से पाया था। विराट कोहली का संबंध दिल्ली के एक सामान्य बिजनेस करने वाले परिवार से है। उनका बचपन पश्चिम विहार की एलआईसी कॉलोनी में गुजरा। विराट के पापा प्रेम कोहली और मां सरोज ने उन्हें अभावों के बावजूद हरसंभव आगे बढ़ने के अवसर दिए। आजकल शांत दिखने वाले विराट कोहली कुछ साल पहले तक काफी अलग थे। वे बात-बात पर आवेश में आ जाया करते थे। एक बार आस्ट्रेलिया दौरे में उनके गुस्से का शिकार एक अंग्रेजी अखबार का पत्रकार भी हुआ था। अब विराट ने विनम्रता का सहारा लेकर अपने व्यक्तित्व में सुधार किया है। विराट कोहली अब देश की सरहदों को पार कर दुनिया का सबसे पसंदीदा क्रिकेटर हैं। वे क्रिकेट और ब्रांड की दुनिया के बादशाह हैं। विराट कोहली स्मार्ट और हैंडसम भी हैं। उन्हें सुपर फिट रहने का जुनून है। उनसे एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी फिटनेस के बारे में पूछा। विराट कोहली का कहना था कि मुझे लगा कि अगर अपनी फिटनेस पर ध्यान नहीं दिया तो मेरा करियर खत्म हो जाएगा। वह बहुत नपा-तुला खाना खाते हैं। जिस व्यक्ति से प्रधानमंत्री फिटनेस के बारे में पूछे, उससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उसका कद क्या होगा। प्रधानमंत्री मोदी उनके विवाह में भी शामिल हुए थे। आपको याद होगा कि इस साल मार्च के महीने में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में टेस्ट शुरू होने से पहले जब भारत का राष्ट्रगान हुआ तो प्रधानमंत्री मोदी, विराट कोहली और भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा साथ-साथ खड़े थे। विराट कोहली से बड़े-से- बड़े ब्रांड जुड़ने के लिए बेकरार रहते हैं। विराट कोहली ने अपना पहला एड कैम्पेन 2010 में किया था। फास्ट्रैक का ये कैम्पेन उन्होंने अभिनेत्री जिनिलिया डिसूजा के साथ किया था। वो डील थी सिर्फ 25 लाख की और आज जानकार कहते हैं कि कोहली 7 करोड़ रुपये रोज के हिसाब से लेते हैं, किसी ब्रांड के विज्ञापन के लिए। विराट कोहली मात्र पैसे कमाने के लिए ही किसी भी उत्पाद को प्रमोट नहीं करते हैं। विराट कोहली शीतल पेय पदार्थ ह्यपेप्सीह्ल और रंग को गोरा बनाने वाली एक उत्पाद के प्रचार करने से मना कर दिया था। विराट कोहली मानते हैं कि ये उत्पाद जंक फूड और नस्लवाद को बढ़ावा देते हैं। वे मानते हैं कि वो सिर्फ उन्हीं उत्पादों का प्रचार करेंगे जिससे वह खुद को भावनात्मक रूप से जोड़ सकें, जिसका इस्तेमाल वह खुद भी कर सकें। उन्होंने पेप्सी का प्रचार किया भी था। उन्हें बाद में लगा कि वो ऐसे उत्पाद का सेवन करने के लिये नहीं कह सकते जो वह खुद नहीं लेते है। विराट गोरा बनाने का दावा करने वाली फेयरनेस क्रीम का भी विज्ञापन अब नहीं करते। वे मानते हैं कि किसी का सम्मान उसके गुणों और मेहनत के बल पर बढ़ता है न कि त्वचा के गोरेपन से। कह सकते हैं कि विराट अपने ब्रांड सेलेक्शन पर खासा ध्यान देते हैं। विराट कोहली को अंडरगारमेंट्स और पान मसाला के ब्रांड्स ने भी अपना ब्रांड एंबेस्डर बनाना चाहा लेकिन उन्होंने साफ इनकार किया। कोहली के बायें हाथ पर एक योद्धा तलवार लेकर खड़ा दिखाई देता है। ये समुरई योद्धा है। इनका संबंध जापान से माना जाता है। समुरई योद्धाओं के संबंध में कहा जाता है कि ये अपने बॉस के प्रति गहरी निष्ठा रखते हैं। इनके जीवन में अनुशासन का बहुत मतलब है। विराट कोहली भी किसी समुरई योद्धा से कम नहीं हैं। वे मैदान रूपी जंग के मैदान में पूरे जोश और बैखौफ अंदाज के साथ उतरते और लड़ते हैं। अब विराट कोहली उस बुलंदी पर पहुंच गए हैं जहां विपक्षी टीमें भी उन्हें प्रेम और सम्मान देती हैं। वे क्रिकेट के सर्वप्रिय खिलाड़ी बन चुके हैं। पाकिस्तान में भी उनके लाखों चाहने वाले हैं। यह खेल ही है जो देश की सीमाओं से आगे जाता है। खेल अनुशासन और बंधुत्व की भावना को मजबूत करते हैं। खेलों की दुनिया में शत्रुता के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। विराट कोहली विरोधी टीमों के भी प्रिय बनकर साबित कर चुके हैं कि खेल दिलों को जोड़ते हैं।

लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं

ग्राहकों को लालच देकर लूटती हैं ई-कॉमर्स कंपनियां

मौसम त्योहार का है जिसमें विभिन्न वस्तुओं का बाजार सजा है। ऐसे में ग्राहक घर बैठे सस्ता सामान खरीदे, इसे लेकर ई-कंपनियों ने जाल बिछाया हुआ। कंपनियां तरह-तरह के प्रोडक्ट्स में ऑफर देकर ग्राहकों को ललचा रही हैं। लेकिन यहां ग्राहकों को थोड़ा सावधान और सतर्क होना होगा। क्योंकि ऑनलाइन खरीददारी का मतलब ऑनलाइन ठगी भी हो गया है। समूचे भारत में इस वक्त ऑनलाइन ठगी का मुद्दा गमार्या हुआ है। ई-भुगतान के जरिए हमारा डाटा आसानी से चोरी हो रहा है। इंटरनेट से संचालित ई-कॉमर्स कंपनियां सस्ते और लुभावने लालच देकर धीरे-धीरे हमारे पारंपरिक बाजारों को कब्जाने की फिराक में हैं। करीब आधे से ज्यादा बाजार पर इन्होंने कब्जा कर भी लिया है। इंटरनेट की आड़ लेकर वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने-बेचने में ई-कॉमर्स कंपनियों ने भारतीय उपभोक्ताओं पर ऐसी छाप छोड़ी है जिससे ग्राहक उनकी ओर खिंच रहे हैं। पर, अब ग्राहक सस्ते दामों का गणित समझने लगे हैं। ई-कॉमर्स कंपनियां सस्ते सौदे के नाम पर जमकर लूट मचा रही हैं। भारत में मौसम त्योहारों का है इसलिए ये कंपनियां खूब एक्टिव हैं। ई-कॉमर्स क्षेत्र की दो अव्वल ऑनलाइन कंपनियां फ्लिपकार्ट और अमेजन ने ग्राहकों को लोक-लुभावने ऑफर दिए हुए हैं। ये ऑफर बाजार में उपलब्ध तकरीबन सभी वस्तुओं पर है जो बाजार कीमतों से कहीं सस्ते हैं। लेकिन इसके पीछे कंपनियों की चालाकी और धोखाधड़ी भी छिपी होती है, जो खरीददारी के वक्त ग्राहक समझ नहीं पाते। कंपनियां ग्राहकों को दो तरीकों से ठगती हैं। एक तो सस्ता ऑफर देकर रद्दी किस्म का माल देती हैं। दूसरा, ग्राहकों से पैसे डिजिटल तरीके से लेती हैं, यानी ऑनलाइन। जिससे कंपनियां उनकी निजता पर भी चुपके से प्रहार करती हैं। इससे ग्राहकों का डाटा आसानी से चोरी हो जाता है। कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है कि ई-कॉमर्स कंपनियों और साइबर ठगों के बीच डाटा चोरी को लेकर सांठगांठ है। बहरहाल, ई-कॉमर्स कंपनियां ने अब और विस्तार कर लिया है। सिर्फ बेचने-खरीदने तक सीमित नहीं रहीं। ई-बैंकिंग, ई-शॉपिंग व ई-बिजनेस इत्यादि क्षेत्रों पर भी ई-कॉमर्स कंपनियों ने कब्जा कर लिया है। हालांकि इससे उत्पादकों एवं विक्रेताओं को वस्तुओं एवं सेवाओं के विश्वव्यापी बाजार जरूर मिले है। पर, व्यापारिक सूचनाओं के आदान-प्रदान और क्वालिटी में भारी कटौती भी हुई है। दुखद पहलू ये है कि ई- कॉमर्स क्षेत्र में अब धीरे-धीरे वृद्धि के साथ, ई- कॉमर्स कंपनियों में धोखाधड़ी का खतरा तेजी से बढ़ा है। समय की दरकार है कि इन कंपनियां पर अंकुश लगना चाहिए, वरना इनकी मनमानी और बढ़ेगी। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें बिना देर किए धोखाधड़ी करने वाली ऐसी कंपनियों के खिलाफ सख्त कदम उठाएं। सरकारी और सामाजिक सतर्कता और सक्रियता नहीं हुई तो इनका खेल जारी रहेगा। फिलहाल केंद्र सरकार ने डार्क पैटर्न अपनाने वाली ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए गाइडलाइन जारी की है जिससे इन पर नकेल कसी जाएगी। डार्क पैटर्न का मतलब होता है ह्यअनफेयर ट्रेड प्रैक्टिसह्ल यानी इंटरनेट पर डिजिटल माध्यमों का इस्तेमाल करके गलत तरीके से ग्राहकों को प्रभावित करना और ऐसा करने पर 10 लाख का जुमार्ना का प्रावधान। सरकार ने ये जिम्मेदारी उपभोक्ता मंत्रालय के सचिव रोहित सिंह को सौंपी है। वह खुद स्वीकारते हैं कि मामला बहुत पेचीदा है। फिर भी सरकार को ग्राहकों का ख्याल है। सरकार एक ऐसा नियम बनाने जा रही है जिससे कंपनियां ग्राहकों को मूर्ख नहीं बना सकेंगी। भारत में ई-कॉमर्स कंपनियों का जब आगमन हुआ तब लगा कि इन्होंने परेशानियों को कम किया है। भागदौड़ भरी खरीददारी के झंझटों से निजात दिला दी है। बाद में पता चला कि शुरूआत में ये कंपनियां अपना पैर जमा रही थीं, लेकिन अब उनका असली रूप दिखना आरंभ हो चुका है। कुछ दिन पहले की ही बात है जब दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र के रहने वाले एक ग्राहक ने सस्ता समझकर अमेजन से एक फोन खरीदा, डिलिवरी घर पहुंची तो उसमें फोन की जगह ईंट का टुकड़ा मिला। पीड़ित ने स्थानीय पुलिस थाने में शिकायत भी की, लेकिन समाधान नहीं निकला। ऐसी घटनाएं समूचे भारत में खूब घट रही हैं। ऐसा ही पिछले सप्ताह पंजाब के बठिंडा में हुआ। एक अध्यापक ने फ्लिपकार्ट के माध्यम से कुछ मंगवाया, भुगतान ऑनलाइन किया, लेकिन दूसरे दिन उनका पूरा बैंक खाता चोरों ने साफ कर दिया। इस तरह की बढ़ती घटनाओं से पुलिस-प्रशासन भी सकते में है। इन ठगों का पुलिस को आसानी से सुराग नहीं मिल पाता। ठग पुलिस की पहुंच से बहुत दूर होते हैं। देश में इस समय दो ई-कॉमर्स कंपनियां सबसे ज्यादा सक्रिय हैं। पहली, फ्लिपकार्ट और दूसरी अमेजन। दोनों ई-कॉमर्स क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनियां हैं। भारत में फ्लिपकार्ट अव्वल स्थान पर है। तो अमेजन दूसरे पायदान पर बहुत समय से काबिज है। विगत वर्षों में कुछ और कंपनियां भी सक्रिय हुईं थी, लेकिन इन दोनों ने किसी को बाजार में नहीं टिकने दिया। ये कंपनियां सरकार के खजाने को भी खूब भर रही हैं। जीएसटी से लेकर तरह-तरह के टैक्स बिना कहे देती हैं। इन पर सरकारी चाबुक नहीं चलने का एक कारण ये भी हो सकता है। फ्लिपकार्ट और अमेजन दोनों कंपनियों ने कभी अपनी शुरूआत ऑनलाइन बुकस्टोर से की थी। देखते ही देखते अमेजन अमेरिका की सबसे बड़ी और फ्लिपकार्ट भारत की सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनी बन गई। दोनों में एक निवेशक कंपनी टाइगर ग्लोबल कॉमन है। वॉलमार्ट से पहले अमेजन भी फ्लिपकार्ट को खरीदने की दौड़ में शामिल थी। उसने तीन बार फ्लिपकार्ट को खरीदने की कोशिश की, लेकिन कामयाब नहीं हो पाई।

सर्दी शुरू होते ही दिल्ली की हवा खराब

अब यह हर वर्ष का सिलसिला-सा बन गया है कि सर्दी शुरू होते ही दिल्ली की हवा खराब होने लगती है। लोगों का दम घुटने लगता है और फिर इससे निपटने में सरकार के हाथ-पांव फूल जाते हैं। फिर शुरू होता है एक-दूसरे पर दोषारोपण और राजनीतिक बयानबाजियों का दौर। हालांकि हर वर्ष सर्वोच्च न्यायालय वायु प्रदूषण से निपटने का स्थायी बंदोबस्त करने का निर्देश देता है, मगर कुछ कागजी खानापूर्तियों और अव्यावहारिक उपायों के अलावा इसका व्यावहारिक समाधान अब तक नहीं तलाशा जा सका है। यही वजह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली के साथ-साथ पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सरकारों को एक हफ्ते के भीतर हलफनामा दाखिल कर बताने को कहा है कि उन्होंने प्रदूषण रोकने के लिए क्या उपाय किए हैं। जब भी दिल्ली और आसपास के राज्यों में वायु प्रदूषण बढ़ने लगता है तो एक-दूसरे पर

दोष मढ़ने की कोशिशें तेज हो जाती हैं। दिल्ली सरकार का कहना होता है कि आसपास के राज्यों में पराली जलाने पर रोक नहीं लगाई जा पा रही, इसलिए दिल्ली की हवा में जहर घुल रहा है। मगर पड़ोसी राज्य इस आरोप को सिरे से खारिज करते देखे जाते हैं। वायु प्रदूषण निस्संदेह एक गंभीर समस्या बन चुका है। इसके चलते करोड़ों लोगों की सेहत खराब हो रही है। इसकी वजहें भी छिपी नहीं हैं। मगर इस पर काबू पाने के लिए कुछ तदर्थ उपाय ही किए जाते दिखते हैं। दिल्ली सरकार ने निजी वाहनों के लिए सम-विषम नियम लागू किया, एक-दो जगह स्माग टावर खड़े किए, कुछ समय के लिए सड़कों के किनारे फव्वारे वाली मशीनें लगा दी जाती हैं। पिछले दो-तीन सालों से पराली की समस्या से पार पाने के लिए जैविक छिड़काव का रास्ता निकाला गया। पराली जलाने वालों पर उपग्रह से निगरानी रखी जाने लगी और उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई होने लगी। इसके अलावा बाहरी राज्यों से आने वाले व्यावसायिक वाहनों के शहर में प्रवेश पर रोक लगा दी जाती है। मगर इसका भी कोई उल्लेखनीय नतीजा सामने नहीं आ सका है। हर साल वायु गुणवत्ता कुछ बिगड़ी हुई ही दर्ज होती है। जब स्थिति ज्यादा खराब हो जाती है, तो कुछ समय के लिए शिक्षण संस्थान बंद कर दिए जाते हैं, लोगों को घर से बाहर न निकलने की चेतावनी जारी की जाती है और फिर बारिश होने का इंतजार किया जाने लगता है कि गर्द बैठे और हवा साफ हो। दिल्ली में वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण वाहनों से निकलने वाला धुआं है। कई साल पहले डीजल से चलने वाली गाड़ियों पर रोक लगाने का सुझाव दिया गया था। हालांकि अब बैट्री से चलने वाले वाहनों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, मगर हकीकत यह भी है कि न सिर्फ सड़कों पर वाहनों की संख्या हर साल बढ़ रही है, बल्कि उनमें बड़ी संख्या डीजल से चलने वाले वाहनों की होती है। फिर, अध्ययनों से यह भी जाहिर है कि वायु प्रदूषण बढ़ाने में चार पहिया वाहनों की अपेक्षा दुपहिया वाहनों का योगदान अधिक है। अब पर्यावरण मंत्रालय चीजों की आपूर्ति करने वालों के लिए केवल बैट्री से चलने वाले वाहनों का उपयोग अनिवार्य करने जा रहा है।

स्वागतयोग्य निर्देश

सुप्रीम कोर्ट ने शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के नेतृत्व से अलग हुए विधायकों को अयोग्य ठहराने की मांग वाली याचिकाओं पर फैसला करने के वास्ते महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष के लिए समयसीमा निर्धारित कर दी है। यह एक स्वागतयोग्य न्यायिक निर्देश का प्रतीक है। लंबा अनुभव यह दिखाता है कि अयोग्यता के मामले में विधानसभाध्यक्ष या तो बहुत ज्यादा मुस्तैदी या फिर निष्क्रिय उदासीनता के साथ पेश आते हैं, जो उनकी राजनीतिक संबद्धता पर निर्भर करता है। तटस्थ रहने और संविधान की दसवीं अनुसूची (दलबदल-विरोधी कानून) से उपजे सवालों से निपटने में तात्कालिकता की भावना प्रदर्शित करने के अपने फर्ज की समय-समय पर याद दिलाए जाने के बावजूद, पीठासीन अधिकारी अपनी राजनीतिक वफादारी को अपने संवैधानिक फर्ज के ऊपर रखते नजर आते हैं। इसलिए, यह बिल्कुल वाजिब है कि शीर्ष अदालत ने विधानसभाध्यक्ष राहुल नार्वेकर को मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के खेमे के खिलाफ अयोग्यता याचिकाओं पर 31 दिसंबर तक, और उप-मुख्यमंत्री अजित पवार की अगुवाई वाले एनसीपी-से-अलग-हुए समूह से जुड़ी याचिकाओं पर 31 जनवरी, 2024 तक फैसला लेने को कहा है। ये निर्देश संविधान पीठ के 11 मई, 2023 के उस फैसले का स्वाभाविक अनुसरण हैं, जिसमें अयोग्यता के विषय पर विधानसभाध्यक्ष से ह्यएक उचित अवधि के भीतरह्ल निर्णय करने को कहा गया था। यह फैसला शिवसेना में टूट से उपजे एक मामले में आया था। इसी टूट के चलते सत्ता बदली थी और उद्धव ठाकरे की जगह शिंदे मुख्यमंत्री बने थे। प्रक्रियात्मक पहलुओं और याचिकाओं को एकसाथ जोड़ने में कुछ देरी हुई हो सकती है, फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि विधानसभाध्यक्ष को इस मामले में फैसला लेने के लिए पर्याप्त समय मिला है।

Social Media Corner

सच के हक में...

देश में मेरा कोई भी परिवारजन भूखा न सोए, इसलिए 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन देने वाली योजना को भाजपा सरकार अब अगले पांच साल के लिए और बढ़ाएगी।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

टीम इंडिया ने हमेशा की तरह आज भी सधे हुए खेल का प्रदर्शन कर पूरे देश का मान बढ़ाया है। झारखण्ड महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में कोरिया के विरुद्ध 2-0 की शानदार जीत के साथ फाइनल में प्रवेश करने के लिए भारतीय टीम को हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं और जोहार। कल होने वाले फाइनल मैच के लिए भारतीय और जापान की टीम को अग्रिम शुभकामनाएं। आज चीन, कोरिया, मलेशिया और थाईलैंड ने भी उम्दा खेल प्रदर्शन किया, सभी को हार्दिक बधाईयां।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

निवेशकों की चिंता कम होने से भारतीय बाजारों में लौटी तेजी

मुंबई।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने शुक्रवार को कहा कि निवेशकों की चिंता में कमी के बीच भारतीय बाजार में तेजी लौटी है। मजबूत वैश्विक संकेतों, स्थिर मैक्रो-इकोनॉमिक डेटा और मजबूत घरेलू कॉर्पोरेट आय से उम्मीदें बढ़ी हैं। नायर ने कहा कि संकेत है कि अमेरिकी फेड द्वारा भविष्य में दरें बढ़ाने की संभावना नहीं है और तेल की कीमतों में मामूली गिरावट से सेंटीमेंट्स में सुधार हुआ है। शुक्रवार को निफ्टी 97 अंक या 0.51 फीसदी की तेजी के साथ 19,230.60 पर बंद हुआ, जबकि सेंसेक्स 283 अंक या 0.44 फीसदी की तेजी के साथ 64,363.78 पर बंद हुआ. दूसरी तिमाही के नतीजे मार्जिन में स्वस्थ विस्तार की संभावना तलाश रहे हैं, जिससे आय वृद्धि में मजबूत उछाल आ रहा है। कमाई के मौसम के बीच, लार्ज-कैप कंपनियां सालाना आधार पर शुद्ध लाभ में 40 प्रतिशत की ठोस वृद्धि का संकेत दे रही हैं। नायर ने कहा, इसके अलावा, वैश्विक मुद्रास्फीति में नरमी और स्थिर घरेलू और बाहरी मांग से दूसरी छमाही में कॉर्पोरेट आय का परिदृश्य बढ़ रहा है। शुक्रवार को ज्यादातर सेक्टर हरे निशान में बंद हुए। निफ्टी रियलिटी ने शुक्रवार को बेहतर प्रदर्शन किया, जो 2.54 प्रतिशत

ऊपर बंद हुआ। इस बीच, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने उम्मीद के मुताबिक बेंचमार्क दर बरकरार रखी, लेकिन आने वाले समय में ग्रोथ नहीं होने और बेरोजगारी बढ़ने की भविष्यवाणी भी यह व्यक्त करता है। अपोलो हॉस्पिटल्स, अदानी पोर्ट्स, आयशर मोटर्स, एलटीआईमाइंडट्री और टाइटन कंपनी निफ्टी पर प्रमुख लाभ पाने वालों में से थे, जबकि लुढ़कने वालों में बजाज फिनसर्व, डॉ रेड्डीज लैबोरेटरीज, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, इंडसइंड बैंक और टाटा स्टील शामिल थे।

ओडिशा को पवन ऊर्जा क्षेत्र में 4,940 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले

नई दिल्ली:

ओडिशा सरकार को पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए निवेशकों से 4,940 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शुक्रवार को यहां सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और नवीकरणीय ऊर्जा के विकास के लिए नोडल एजेंसी ग्रिडको ने अपने तकनीकी भागीदार आईफॉरेस्ट के सहयोग से पवन ऊर्जा क्षेत्र में निवेश के अवसरों का पता लगाने के लिए 'ओडिशा पवन ऊर्जा शिखर सम्मेलन- निवेशक गोलमेज' का आयोजन किया। इस अवसर पर, संभावित निवेशकों ने वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों और सरकारी नोडल एजेंसी ग्रिडको के अधिकारियों के साथ व्यक्तिगत बैठक की। इसमें पवन ऊर्जा की 575 मेगावाट क्षमता के लिए विभिन्न निवेशकों द्वारा 4,940 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव का आश्वासन दिया गया। शिखर सम्मेलन में देश भर के 25 प्रमुख निवेशकों ने भाग लिया। इस सम्मेलन ने पवन ऊर्जा उत्पादन और विनिर्माण क्षेत्र में प्रमुख इकाइयों को एक साथ लाने में एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य किया। मुख्य सचिव पीके जेना ने अपने संबोधन में ओडिशा में बिजली संयंत्रों और विनिर्माण केंद्रों की स्थापना के लिए पवन उद्योग को व्यापक समर्थन देने के राज्य के दृढ़ संकल्प पर जोर दिया। वित्त और ऊर्जा सचिव वीके देव ने भी विश्वास जताया कि शिखर सम्मेलन निश्चित रूप से पवन ऊर्जा क्षेत्र की संभावनाओं, दृष्टि और मिशन को पूरा करने की दिशा में ओडिशा की महत्वाकांक्षी यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में काम करेगा।

मप्र और महाराष्ट्र में पेट्रोल सस्ता, यूपी में महंगा

नई दिल्ली ।

कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट जारी है। डब्ल्यूटीआई क्रूड 2 फीसदी की गिरावट के साथ 80.89 डॉलर प्रति बैरल पर बिक रहा है। वहीं ब्रेंट क्रूड 85.23 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। हालांकि, क्रूड में आई इस गिरावट का पेट्रोल और डीजल के दामों पर कोई असर देखने को नहीं मिला है, लेकिन कुछ राज्यों व शहरों में ईंधन के दाम में मामूली कटौती और बढ़ोतरी हुई है। मध्य प्रदेश में पेट्रोल 0.25 पैसे प्रति लीटर सस्ता हुआ है, जबकि महाराष्ट्र में 0.23 पैसे प्रति लीटर सस्ता बिक रहा है। वहीं उत्तर प्रदेश में पेट्रोल के दाम में 0.21 पैसे की बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर में भी पेट्रोल 0.63 पैसे महंगा होकर 101.46 रुपए प्रति लीटर के भाव पर बिक रहा है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपए और डीजल 89.62 रुपए प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपए और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपए और डीजल 94.24 रुपए प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 96.59 रुपए और डीजल 89.76 रुपए प्रति लीटर हो गया है। गाजियाबाद में 96.58 रुपए और डीजल 89.75 रुपए प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.57 रुपए और डीजल 89.76 रुपए प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 107.24 रुपए और डीजल 94.04 रुपए प्रति लीटर हो गया है। पोर्टब्लेयर में पेट्रोल 84.10 रुपए और डीजल 79.74 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

बायजू के मुख्य व्यवसाय का परिचालन घाटा 2021-22 में घटकर 2,253 करोड़ रुपए

नई दिल्ली:

बायजू ब्रांड नाम के तहत काम करने वाली शिक्षा प्रौद्योगिकी कंपनी थिंक एंड लर्न प्राइवेट लिमिटेड ने शनिवार को बताया कि उसके मुख्य व्यवसाय का परिचालन घाटा 2021-22 में घटकर 2,253 करोड़ रुपए हो गया है। कंपनी ने कहा कि एबिटडा या मुख्य व्यवसाय का परिचालन घाटा इससे एक साल पहले की अवधि में 2,406 करोड़ रुपए था। कंपनी के मुख्य व्यवसाय में के12 पेशकश, अनुप्रयोग और ट्यूशन केंद्र शामिल हैं। बायजू ने कहा कि वित्त वर्ष 2021-22 में उसके मुख्य व्यवसाय का राजस्व 2.3 गुना बढ़कर 3,569 करोड़ रुपए हो गया, जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 1,552 करोड़ रुपए था। बायजू के संस्थापक और समूह सीईओ बायजू रवींद्रन ने कहा, मुख्य व्यवसाय ने अच्छी वृद्धि का प्रदर्शन किया है, जो दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था भारत में शिक्षा प्रौद्योगिकी की क्षमता को रेखांकित करता है। मैं महामारी के बाद की दुनिया में सीखे गए सबक से भी प्रभावित हूं। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में बायजू टिकाऊ और लाभदायक वृद्धि के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

कंपनी के वित्तीय आंकड़ों में उसके द्वारा किए गए सभी अधिग्रहणों का वित्तीय प्रदर्शन शामिल नहीं है।

चीन को मात दे रहा भारत का 'लहसुन', ऐसे बढ़ा रहा ड्रैगन की परेशानी

(एजेंसी)

दुनिया में लहसुन की ट्रेडिंग के मामले में चीन का कोई सानी नहीं है लेकिन भारत अब इस मोर्चे पर भी चीन को मात दे रहा है। भारत का लहुसन ट्रेड लगातार बढ़ रहा है, जो चीन की परेशानी को बढ़ा रहा है।वहीं इस बीच चीन के ब्लीचड लहसुन की डंपिंग भी शुरु कर रखी है। फिलहाल इस बात में कोई शक नहीं है कि लहसुन एक्सपोर्ट के मामले में चीन अभी भी वर्ल्ड लीडर है। चीन कभी दुनिया का 80त्न लहसुन एक्सपोर्ट करता था, जो हाल के सालों में अब 70-75 प्रतिशत तक आया है। वहीं इस बीच भारत का लहसुन एक्सपोर्ट बढ़ा है।

भारत का लहसुन एक्सपोर्ट

दुनिया में मसालों का व्यापार करने वाले सबसे अग्रणी देशों में भारत का नाम शुमार है। प्राचीन काल का मसाला ट्रेड रूट भारत से गुजरता था। अगर बीते साल के आंकड़ों को देखें तो भारत के मसाला एक्सपोर्ट में लहसुन की हिस्सेदारी तेजी से बढ़ी है। स्पाइस बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक 2022-23 की अप्रैल से जनवरी यानी सिर्फ 10 महीनों में लहसुन के एक्सपोर्ट में 165त्न की ग्रोथ दर्ज की गई है। इस दौरान भारत ने 47,329 टन लहसुन का एक्सपोर्ट किया जबकि पूरे वित्त वर्ष में ये निर्यात 57,346 टन रहा, जो 2021-22 के मुकाबले 159% अधिक था। अभी 2023-24 के आंकेड़े आने बाकी हैं। इसके उलट चीन के लहसुन उत्पादन में 25% तक की गिरावट दर्ज की गई है। भारत का लहसुन पश्चिमी एशियाई और अफ्रीकी देशों में तेजी से पॉपुलर हुआ है।

दूसरी तिमाही में एसबीआई को 14,330 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ

मुंबई। देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने शनिवार को चालू वित्त वर्ष की जुलाई-सितंबर तिमाही में शुद्ध लाभ 8 प्रतिशत बढ़कर 14,330 करोड़ रुपये होने की सूचना दी। पिछले साल की समान तिमाही में बैंक को 13,265 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। एसबीआई की शुद्ध ब्याज आय (एनआईआई) 12.3 प्रतिशत बढ़कर 39,500 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वित्तीय वर्ष की समान अवधि में 31,184 करोड़ रुपये थी। बैंक की संपत्ति की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है और सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) 2.55 प्रतिशत पर आ गई है, जो पिछले साल की समान तिमाही में दर्ज 3.52 प्रतिशत से कम है। तिमाही के लिए शुद्ध एनपीए साल-दर-साल आधार पर 0.80 प्रतिशत से सुधार करते हुए 0.64 प्रतिशत रहा। शुक्रवार को बीएसई पर एसबीआई के शेयर 578.15 रुपये पर बंद हुए।

एफआईआई की बिकवाली जारी रहने की संभावना नहीं

नई दिल्ली।

सितंबर और अक्टूबर में देखी गई एफआईआई की बिकवाली का रुझान नवंबर की शुरुआत में भी जारी रहा। ये कहना है जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार का।उन्होंने यह भी कहा कि नवंबर के पहले तीन दिनों में एफआईआई ने कैश मार्केट के जरिए 3,063 करोड़ रुपये की इक्विटी बेची। हालांकि यह ट्रेंड जारी रहने की संभावना नहीं है, क्योंकि एफआईआई की बिक्री की मुख्य वजह बढ़ती बांड यील्ड थी जो अब कम हो गई है। 19 अक्टूबर को 5 प्रतिशत के शिखर पर पहुँचने के बाद 10-वर्षीय अमेरिकी बांड यील्ड में गिरावट शुरू हुई। उन्होंने कहा, पिछले दो दिनों के दौरान इसमें भारी गिरावट आई है, जिससे 3 नवंबर को यील्ड तेजी से घटकर 4.66 फीसदी रह गई। बांड यील्ड में इस उलटफेर का मुख्य कारण अमेरिकी फेडरल रिजर्व के प्रमुख जेरोम पॉवेल की टिप्पणी है कि ऊंची मुद्रास्फीति के बावजूद, इसके स्थिर रहने की सम्भावना बनी हुई है। आगे चलकर एफआईआई की बिकवाली कम रहने की संभावना है। वे खरीदार भी बन सकते हैं, जिससे भारतीय बाजार में तेजी देखने को मिल सकती है। उन्होंने कहा कि फ्रंटलाइन बैंकिंग, ऑटोमोबाइल, पूंजीगत सामान और आईटी और रियल एस्टेट में मिडकैप अच्छा प्रदर्शन करने के लिए तैयार है।

जुलाई-सितंबर तिमाही में इंडिगो ने 189 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया

नई दिल्ली।

प्रमुख एयरलाइन इंडिगो ने शुक्रवार को कहा कि इसने जुलाई-सितंबर तिमाही के लिए 188.9 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया है। पिछले साल की इसी तिमाही में इसे 1,583.33 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा हुआ था। कम लागत वाली एयरलाइन का राजस्व 19.5 प्रतिशत बढ़कर 14,943 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 12,497 करोड़ रुपये था। राजस्व में वृद्धि पिछले वर्ष की तुलना में तिमाही के दौरान घरेलू यात्रा में तेज वृद्धि के कारण हुई है। अगर पिछली तिमाही को देखें तो इंडिगो ने जनवरी-मार्च तिमाही में 14,160 करोड़ रुपये की बिक्री पर 919 करोड़ रुपये का लाभ और चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में 16,683.1 करोड़ रुपये की बिक्री पर 3,090 करोड़ रुपये का लाभ दर्ज किया था। जुलाई-सितंबर तिमाही आमतौर पर विमानन क्षेत्र के लिए कमजोर होती है क्योंकि मानसून की बारिश हवाई यात्रा को प्रतिबंधित करती है।

बीते सप्ताह सेंसेक्स और निफ्टी में आधा फीसदी तेजी रही

मुंबई ।

वैश्विक बाजारों से मिले अच्छे संकेतों की वजह से बीते कारोबारी सत्र में शेयर बाजार में लगभग आधा फीसदी की तेजी दर्ज की गई। सप्ताह के ओ खिरी कारोबारी सत्र में सेंसेक्स और निफ्टी तेजी के साथ बंद हुए। बीते सप्ताह शेयर बाजार में पांच कारोबारी दिनों में से चार दिन तेजी और एक दिन गिरावट रही। बीते पांच कारोबारी दिनों पर नजर डालें तो बैंकिंग, वित्तीय और एफएमसीजी कंपनियों के शेयरों में बिकवाली से बेंचमार्क शेयर सूचकांक सोमवार को एक महीने से अधिक समय के सबसे खराब सप्ताह के बाद गिरावट के साथ कारोबार करते दिखे। बीएसई सेंसेक्स 168 अंक की गिरावट के साथ 63,614 पर खुला और 329.85 अंकों की बढ़त के साथ 64,112.65 पर बंद हुआ। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का 50 शेयरों पर आधारित संवेदी सूचकांक निफ्टी 43 अंकों की तेजी के साथ 19,003 पर खुला और 93.66 अंकों की मजबूती के साथ 19,140.90 पर बंद हुआ। कारोबारी हफ्ते के दूसरे दिन मंगलवार को सेंसेक्स 217 अंकों के उछाल के साथ 64,311 पर खुला और 237.72 अंकों की गिरावट के साथ 63,874.93 पर बंद हुआ। निफ्टी 0.52 फीसदी के बढ़ोतरी के साथ 19,181 पर खुला और 61.31 अंक फिसलकर 19,079.60 पर बंद हुआ। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों पर फैसले से पहले बैंकिंग और आईटी शेयरों में बिकवाली से बुधवार को सेंसेक्स 143 अंक की गिरावट के साथ 63,731 पर खुला और 283.60 अंकों की गिरावट के साथ 63,591.33 पर बंद हुआ। निफ्टी 26 अंकों की तेजी के साथ 19,053 पर खुला और 90.45 अंक फिसलकर 18,989.15 पर बंद हुआ। शेयर बाजार में गुरुवार को लगातार दो दिन की बिकवाली के बाद मजबूती दिखी। सेंसेक्स 539.40 अंकों की बढ़त के साथ 64,130.73 पर खुला और 489.57 अंकों की बढ़त के साथ 64,080.90 पर बंद हुआ। निफ्टी 165.65 अंक चढ़कर 19,154.80 पर खुला और 144.10 अंकों की बढ़त के साथ 19,133.25 पर बंद हुआ। शुक्रवार को सेंसेक्स 331 अंकों के उछाल के साथ 64,420 पर खुला और 282.88 अंक (0.44 फीसदी) की बढ़त के साथ 64,363.78 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी 0.55 फीसदी के बढ़त के साथ 19,241 पर खुला और 97.35 अंक (0.51 फीसदी) की बढ़त के साथ 19230.60 के स्तर पर बंद हुआ।

कर्मचारियों का बोनस लाया बाजार में बहार, दिवाली सीजन में होगा 3.5 लाख करोड़ का कारोबार!

(एजेंसी)

केंद्र सरकार एवं प्राइवेट सेक्टर द्वारा अपने कर्मचारियों को बोनस देने की घोषणा से त्योहारी बाजारों में रौनक आ गई है। इस बार दिवाली की खरीदारी में जबरदस्त वृद्धि के आसार हैं। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल का कहना है कि दीवाली के त्योहारी सीजन में देश में 3.5 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की बिक्री होगी। अगर दिल्ली के बाजारों की बात करें, तो कारोबार का यह आंकड़ा 35 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का रहेगा। इसमें वस्त्र, ज्वैलरी, खाद्य किराना, आटोमोबाइल सेक्टर व इलेक्ट्रॉनिक आइटम आदि शामिल हैं। प्रवीन खंडेलवाल के मुताबिक, नवरात्रि से शुरू हुए दीपावली त्योहारी सीजन में दिल्ली सहित देश भर के बाजारों में ग्राहकों की संख्या बढ़ रही है। इससे व्यापार जगत में उत्साह का माहौल है। करवा चौथ के पर्व के बाद दिवाली की खरीदारी के लिए ग्राहक, बाजारों का रुख करने लगे हैं। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स ने इस वर्ष के दिवाली सीजन में देश भर के बाजारों में 3.5 लाख करोड़ रुपए से अधिक का व्यापार होने का अनुमान लगाया है। अकेले दिल्ली में ही इस त्योहारी सीजन में 35 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का व्यापार होने की संभावना जताई गई है। कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीसी भरतिया एवं राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा, हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा कर्मियों के लिए बोनस की घोषणा एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अपने कर्मियों को त्योहारों का बोनस दिया गया है। प्राइवेट सेक्टर में भी कर्मचारियों को दीपावली बोनस एवं अन्य इंसेंटिव दिए जाने से बाजार में त्योहारी सीजन की मांग में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। वहीं महीने के प्रारंभ में ही दिवाली एवं अन्य त्योहारों के आने से ग्राहकों की जेब में त्योहार पर खर्च करने के लिए पर्याप्त मात्रा में धनराशि होगी। इसके माध्यम से जो खरीदी होगी, उससे बाजारों में रौनक आएगी। व्यापार एवं अर्थव्यवस्था में बड़े स्तर पर वित्तीय तरलता आएगी। कैट के पदाधिकारियों के मुताबिक, एक मोटे अनुमान के अनुसार 3.5 लाख करोड़ के अनुमानित त्योहारी सीजन के व्यापार में लगभग 13 फीसदी खाद्य एवं किराना में, 9 फीसदी ज्वैलरी में, 12 फीसदी वस्त्र एवं गारमेंट्स, 4 फीसदी ड्राई फ्रूट, मिठाई एवं नमकीन, 3 फीसदी घर की साज सज्जा, 6 फीसदी कॉस्मेटिक्स, 8 फीसदी इलेक्ट्रॉनिक्स एवं मोबाइल, 3 फीसदी पूजन सामग्री एवं पूजा से जुड़ी वस्तुएं, 3 फीसदी बर्तन तथा रसोई उपकरण, 2 फीसदी कॉन्फेक्शनरी एवं बेकरी, 8 फीसदी गिफ्ट आइटम्स और 4 फीसदी फ़र्निशिंग एवं फर्नीचर व्यापार में खर्च होगा। शेष 20 फीसदी ऑटोमोबाइल, हार्डवेयर, इलेक्ट्रिकल व खिलौनों सहित दूसरी वस्तुओं एवं सेवाओं पर ग्राहकों द्वारा खर्च किए जाने का अनुमान है। पैकिंग क्षेत्र को भी दिवाली पर बड़ा व्यापार मिलेगा।

सऊदी अरब की नजर 30 अरब डॉलर के आईपीएल में हिस्सेदारी पर रिपोर्ट

नई दिल्ली।

सऊदी अरब ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के सबसे आकर्षक आयोजन इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अरबों डॉलर की हिस्सेदारी खरीदने की इच्छा जताई है। एक मीडिया रिपोर्ट में ये बात कही गई है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के सलाहकारों ने 30 अरब डॉलर की वैल्यू वाले आईपीएल को होल्डिंग कंपनी में बदलने के लिए भारत सरकार के अधिकारियों से बात की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बातचीत तब हुई जब सऊदी क्राउन प्रिंस सितंबर में भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन के लिए भारत आये थे। रिपोर्ट में कहा गया है कि सऊदी अरब ने लीग में 5 बिलियन डॉलर तक निवेश करने और अन्य देशों में विस्तार में मदद करने का प्रस्ताव दिया है। डीएंडपी इंडिया एडवाइजरी सर्विसेज की एक रिपोर्ट के अनुसार, आईपीएल इकोसिस्टम का मूल्य 87,000 करोड़ रुपये से बढ़कर 92,500 करोड़ रुपये हो गया है, जो लगभग 6.3 प्रतिशत की वृद्धि है।

अमेरिकी डॉलर के संदर्भ में, यह 10.9 बिलियन डॉलर से 11.2 बिलियन डॉलर की वृद्धि दर्शाता है, जो लगभग 3.3 प्रतिशत की वृद्धि है। आईपीएल हमेशा से ही क्रिकेट, बिजनेस और मनोरंजन का समागम रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस साल भी कोई अपवाद नहीं था, क्योंकि लीग ने टेलीविजन और डिजिटल दोनों प्लेटफार्मों पर दर्शकों को आकर्षित करना जारी रखा। ब्रॉडकास्ट

ऑडियंस रिसर्च काउंसिल (बीएआरसी) इंडिया के अनुसार, स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर आईपीएल प्रसारण ने 427.1 बिलियन मिनट के प्रभावशाली देखने के समय के साथ 505 मिलियन दर्शकों को आकर्षित किया। डिजिटल मोर्चे पर, जिओसिनेमा ने बताया कि 449 मिलियन दर्शकों ने उसके प्लेटफ़ॉर्म को देखा, जिसमें 126 मिलियन से अधिक दर्शकों ने आईपीएल एक्शन का आनंद लेने के लिए कनेक्टेड टीवी विकल्प चुने।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 2.6 अरब डॉलर बढ़ा

मुंबई। आरबीआई ने शुक्रवार को कहा कि 27 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह के दौरान भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 2.579 अरब डॉलर बढ़कर 586.111 अरब डॉलर हो गया। 20 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह के दौरान देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.36 अरब डॉलर घटकर 583.53 अरब डॉलर रह गया था। यह वृद्धि एक स्वागतयोग्य राहत है क्योंकि आरबीआई देश के विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग रुपये के अस्थिर होने पर उसे स्थिर करने के लिए करता है। विदेशी मुद्रा कोष में कोई भी वृद्धि आरबीआई को बाजार में डॉलर जारी करने और रुपये के मुक्त गिरावट की स्थिति में स्थिर करने के लिए अधिक गुंजाइश देती है। 6 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 14.166 अरब डॉलर घटकर पांच महीने के निचले स्तर 584.74 अरब डॉलर पर आ गया था।

कैसे बना भारत का मानचित्र?

'मानचित्र' शब्द मात्र से ही बच्चों को भूगोल की कक्षा की याद आ जाती है किन्तु बच्चों ने शायद ही यह कभी सोचा होगा कि शुरूआत में ये मानचित्र बने कैसे ? आज हम यह बता रहे हैं कि मानचित्र का इतिहास क्या है और भारत का मानचित्र कैसे बना ?

ईसा के लगभग तीन हजार वर्ष पहले पृथ्वी के एक बड़े भू-भाग को 'भारतवर्ष' का नाम दिया गया। अनेक शताब्दियों के बाद सातवीं सदी में भारत के महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने गणित को शून्य की इकाई दी। मानचित्र की वैज्ञानिक विधि का आधार भी गणित ही है।

मानचित्रण की कला, क्षेत्रफल मापना आदि हमारे देश में पौराणिक काल से ही चले आ रहे हैं। महाभारत, रामायण के अतिरिक्त पाणिनी, पतंजलि, कौटिल्य एवं कालिदास के काव्य भौगोलिक वर्णनों से ओत-प्रोत हैं। मानचित्रण का विज्ञान पृथ्वी के आकार ज्ञान के बिना असंभव है, इस बात का आभास हमारे पूर्वजों को पहले से ही था।

पृथ्वी के आकार को जानने के लिए अक्षांश एवं देशान्तर के महत्व को भी हमारे पूर्वज समझ चुके थे। दार्शनिक इरंटोस्थेनीज (ई.पू. 278-198) ने पृथ्वी की परिधि का आकलन कर बनाए गए विश्व के मानचित्र को प्रस्तुत कर मानचित्रण की प्रथम वैज्ञानिक आधारशिला रखी।

महान गणितज्ञ खगोलविद् एवं भूगोलविद् क्लॉडियस टोल्मी ने दूसरी शताब्दी में भारत के मानचित्र को बनाया। पांचवीं शताब्दी में भारत के महान गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने 'सूर्य सिद्धांत' लिखा। इसमें पृथ्वी की परिधि 25080 मील बताई गई। इसके साथ ही अन्य खगोलशास्त्री वराहमिहिर एवं भास्कराचार्य ने पृथ्वी के आकार के अतिरिक्त गुरुत्वाकर्षण को भी खोज निकाला।

समय एवं विकास के साथ-साथ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की खोज में मनुष्यों की जिज्ञासा बढ़ती गई। पंद्रहवीं शताब्दी के अंतिम चरण में कोलंबस ने 1492 में प्रशांत महासागर पार कर लिया, वास्कोडिगामा ने 1497 में अफ्रीका तट छान लिया तथा मेगेलन ने 1519 से 1522 के मध्य सम्पूर्ण विश्व का चक्कर लगा लिया। अनुभवजन्य यात्राओं से एकत्रित भौगोलिक ज्ञान समयोपरांत वैज्ञानिक मानचित्रण का आधार बना।

पंद्रहवीं शताब्दी में छपाई कला का आविष्कार होने के बाद मानचित्र की प्रतियों को बनाना संभव हो गया। अकबर के दरबार में आए पादरी फादर मौन्सेरेट ने खगोलशास्त्रियों से प्राप्त विवरणों के आधार पर बादशाह के साम्राज्य का मानचित्र तैयार किया। अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल एवं बुद्धिमान प्रशासक शेरसाह सूरी के बनाए मानचित्रा नियमित भूमि-सर्वेक्षण पर आधारित थे। इन नक्शों की विश्वसनीयता ऐसी थी कि इनका प्रयोग अठारहवीं सदी के मध्य तक किया गया।

अकबर के राज्यकाल में ही सोलहवीं शताब्दी में जमीन की माप मूंज की रस्सियों के स्थान पर लोहे की कड़ियों से जुड़ी बांस की जरीबों से की जाने लगी। फ्रांसीसी भूगोलविद जॉ-वैपाडिस्ट ने 1752 ई. में भारत का मानचित्र बनाकर देश के भौगोलिक ज्ञान को एक वैज्ञानिक दिशा दी।

सत्राहवीं शताब्दी के मध्य तक त्रिकोणमितीय तकनीक अर्थात् खगोलविद्या की सहायता से स्थान विशेष की स्थिति जानने का ज्ञान हो चुका था। जयपुर के महाराजा जयसिंह (1693-1743) ने जयपुर, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन एवं वाराणसी में खगोल वेधशालाएं (जंतर-मंतर) बनाकर भारत में इस कार्य में अग्रणी योगदान दिया। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में अक्षांश एवं देशांतर मापने के लिए भारत में अनेक वेधशालाएं बनाई गई। इसमें सेक्सटेंट, क्रोनोमीटर एवं टेलिस्कोप आदि यंत्रों का प्रयोग किया जाने लगा। इसके बाद एक जनवरी 1767 को ईस्ट इंडिया कंपनी के मेजर जेम्स रेनल को बंगाल का सर्वेयर जनरल नियुक्त किया गया। रेनल ने सेवानिवृत्ति के बाद 1783 ई. में मैप ऑफ हिंदुस्तान प्रकाशित किया जिसमें समय-समय पर सुधार करते हुए इसे वैज्ञानिक बनाया गया। इस प्रकार हमारे भारत का मानचित्र तैयार हो गया जो पूर्णरूप से वैज्ञानिक होने के साथ ही विश्वसनीय भी है। आज जिस मानचित्र का उपयोग हम कर रहे हैं, उसका पूर्ण श्रेय जेम्स रेनल को ही जाता है। यह बात अलग है कि समयानुसार उसमें सुधार किया जाता रहा है।

उड़ चली नॉन्गडांगनू

आया फूम का घर के काम में मन नहीं लगता था। वह हमेशा मौके का इंतजार करती कि नॉन्गडांगनू के पैनथाऊ यानी पापा घर से बाहर निकलें तो वह मोहल्ले भर की खबर लेने-देने पड़ोसियों के घर चली जाए। इधर वहां वह गप्पें मारती।

नॉन्गडांगनू बहुत प्यारी-सी दस साल की बच्ची थी। उसका छोटा भाई तमेंग करीब चार साल का था। जब वह बहुत छोटी थी, तब एक एक्सीडेंट में उसकी मम्मी चल बसी थीं। उसके पापा बिजनेसमैन थे। उन्हें अक्सर बिजनेस के सिलसिले में एक शहर से दूसरे शहर में जाना पड़ता था। इस कारण नॉन्गडांगनू और उसके छोटे भाई या इबुनगो को घर पर अकेले रहना होता था। नॉन्गडांगनू तो समझदार थी, पर तमेंग बहुत डरपोक था। वह उसे एक पल भी नहीं छोड़ता था। इसलिए नॉन्गडांगनू के पापा ने घर और बच्चों की देखभाल के लिए एक आया फूम को रख लिया। आया फूम का घर के काम में मन नहीं लगता था। वह हमेशा मौके का इंतजार करती कि नॉन्गडांगनू के पैनथाऊ यानी पापा घर से बाहर निकलें तो वह मोहल्ले भर की खबर लेने-देने पड़ोसियों के घर चली जाए। इधर वहां वह गप्पें मारती। उधर घर का सारा काम नॉन्गडांगनू को करना पड़ता। वह बर्तन मांजती, धान कूटती, खाना बनाती, कपड़े धोती। नदी से पानी भरकर लाती। जंगल से लकड़ी चुनकर लाती। कुल मिलाकर छोटी-सी बच्ची सुबह से लेकर रात तक काम करती। फिर भी आया फूम उसे डांटती-फटकारती रहती। कभी-कभी तो फूम नॉन्गडांगनू की पिटाई करती और खाने को भी नहीं देती। ऐसे में नॉन्गडांगनू को भूखे ही सोना पड़ता। नॉन्गडांगनू का भाई तमेंग हर समय उसके साथ रहता। जब वह पानी लेने नदी या लकड़ी लेने जंगल की ओर जाती तब वह घर के दरवाजे पर बैठा उसका इंतजार करता रहता। फूम घर में कभी-कभी नहीं होती, तो तमेंग नॉन्गडांगनू को कुछ अच्छा खाना भी खिला देता। वह खुश हो जाती। फिर काम निपटाकर नॉन्गडांगनू और तमेंग खेलने में मगन हो जाते। वह अपनी बहन यानी इची को बहुत प्यार करता था। लेकिन उस दिन नदी किनारे बहन-भाई यानी इबुनगो-इचि में ककड़ी खाने को लेकर झगड़ा हो गया। इस पर नॉन्गडांगनू ने अपने भाई तमेंग को धक्का दे दिया। वह नदी में गिर पड़ा। वह भागी-भागी घर आई। पहले तो नॉन्गडांगनू खुद डर गई। यह सोचकर कि कहीं उसका भाई नदी में डूब तो नहीं गया। फिर उसने हिम्मत कर घर आकर फूम को पूरी बात बताई। फूम तो सुनकर आग बबूला हो गई। मन-ही-मन वह भी डर गई कि वह अपने मालिक को क्या बताएगी। उसने नॉन्गडांगनू को येनखा यानी घर के बरामदे में बंद कर दिया और खुद नदी की ओर भागी। संयोग अच्छा था। उसे तमेंग नदी के किनारे बेहोश पड़ा मिला। थोड़ी ही देर में वह उसे लेकर घर लौट आई। इसके बावजूद फूम का गुस्सा कम नहीं हुआ।

रात भर येनखा में नॉन्गडांगनू अकेले पड़ी रोती रही। सुबह-सुबह उसे आसमान में सारस का जोड़ा दिखाई दिया। उसने उनसे प्रार्थना की, 'ओ वैनू, मेहरबानी कर मुझे भी अपने साथ ले चलो'। सारसों ने कहा, 'हमें माफ करना। हम तुम्हें साथ नहीं ले जा सकते।' नॉन्गडांगनू ने कहा, 'अगर साथ नहीं ले जा सकते तो मुझे एक पंख दे जाओ।' दोनों सारसों ने अपने पंख फड़फड़ाए और सफेद पंख नीचे गिरने लगे। नॉन्गडांगनू ने सारस के पंखों को इकट्ठा कर लिया। फिर उसके घर के ऊपर से कौए, तोते, गौरैया, मैना, कबूतर, बया वगैरह कई चिड़िया गुजरीं। नॉन्गडांगनू ने सभी से इसी तरह आग्रह कर ढेर सारे रंग-बिरंगे पंख इकट्ठे कर लिए। उसने एक-एक पंख को जोड़कर फी यानी शॉल बनाया और उसे ओढ़ लिया। फिर उसे ओढ़कर वह उड़ने लगी। उसे देखकर, उसके भाई ने आवाज दी, 'ओ इची!' (बहन) अपने भाई की आवाज को उसने अनसुना कर दिया। फिर उसके पैनथाऊ यानी पापा ने आवाज दी, 'ओ इबेम्मा!' (मेरी प्यारी बेटी) नॉन्गडांगनू अपने पैनथाऊ यानी पापा की आवाज को सुनकर भावुक हो गई। उसने आंख में आंसू भर कर कहा, 'अलविदा पापा! अब आप मुझे कभी मत ढूंढ़ना। मैं हूं उचेक लैंगमिडॉन धनेश' (पहाड़ों की बेटी)।

दुनिया का सबसे अनोखा गांव

जहां हर घर में है प्लेन

यह दुनिया की एक ऐसी अनोखी बस्ती है, जहां हर लगभग घर में एक प्लेन जरूर है। यह अमेरिका के नॉर्थ-ईस्ट फ्लोरिडा में स्थित है। इसे स्प्रूस क्रीक के नाम से जाना जाता है और यह डेटॉना बीच से कुछ मील की दूरी पर है।

इसे एयर-पार्क या फ्लाई-इन-कम्युनिटी के नाम से भी जाना जाता है। स्प्रूस क्रीक में 1,300 घर हैं और यहां 700 प्लेन हैं। इस गांव की आबादी करीब 5,000 है। यहां के अधिकांश घरों में निजी प्लेन खड़े हुए दिखाई देते हैं। इस यूनीक गांव में एक निजी एयरफील्ड है। यहां का एक ड्राइव-वे सीधे रनवे से जोड़ता है। रनवे 4000 फीट लंबा और 150 फीट चौड़ा है। अनोखे गांव स्प्रूस क्रीक में 18 होल वाला गोल्फ कोर्स, कई फ्लाइंग क्लब, निजी एयरक्राफ्ट्स, फ्लाइट ट्रेनिंग और 24 घंटे पेट्रोलिंग करने वाली सिक्युरिटी है। जिन लोगों की जिंदगी एयरप्लेन से जुड़ी है, उनके लिए स्प्रूस क्रीक स्वर्ग जैसी जगह है। अमेरिका के सुप्रसिद्ध एक्टर और पॉयलट जॉन पार्क ट्रैवोल्टा भी यहां कई साल रह चुके हैं। हालांकि, यहां के कई लोगों को शिकायत थी कि जॉन बोइंग 707 से उड़ते थे, जिससे यहां आने और जाने बहुत अधिक शोर होता था। जॉन ने यह बोइंग भाड़े पर ले रखा था। इससे एक दिक्कत और भी होती थी कि 250,000 पाउंड वजनी बोइंग को यहां की छोटी हवाई पट्टी में उतरने में परेशानी होती थी। स्प्रूस क्रीक रेसीडेंशियल एयर-पार्क का कॉन्सेप्ट सेकंड वर्ल्ड वॉर के बाद का है। यह ऐसा वक्त था, जब अमेरिका को अतिरिक्त एयरफील्ड और पॉयलट्स की जरूरत थी। 1946 के बाद अमेरिकी सरकार ने पूरे देश में 6,000 रेसीडेंशियल एयर-पार्क बनाने की योजना बनाई थी। यह योजना पूरी कभी नहीं हो सकी, लेकिन यह बस्ती उसी योजना के तहत बसाई गई थी। स्प्रूस क्रीक में निवेश होने से यहां फ्लाई कम्युनिटीज का एक बड़ा एक्टिव नेटवर्क तैयार हो गया। अमेरिका के एरिजोना, कोलोरोडा, फ्लोरिडा, टेक्सास और वॉशिंगटन की बड़ी फ्लाई कम्युनिटीज के बीच स्प्रूस क्रीक सबसे विशाल है। गांव के लोगों के घर के गैराज और मैदान में खूबसूरत सेसना, पाइपर, पी-51 मुस्टांग, एल-39 एलब्रैट्रोज, एन इक्लिप्स 500, फ्रैंच फौगा मैजिस्टर खड़े हैं। इस गांव में एक रसियन मिग-15 फाइटर जेट भी है। स्प्रूसक्रीक में विमान के अलावा लैंबोरघिनी, कारवेट्स और पोर्स जी2 जैसे महंगी लग्जरी कारें भी देखने को मिल जाएंगी।

स्विमिंग पूल जिसमें उतरने पर गीले नहीं होते कपड़े

जापान के कनाजावा में ऐसा अनोखा स्विमिंग पूल है, जिसमें उतरने के बावजूद आप गीले नहीं होंगे। यहां चल सकते हैं और पानी के अंदर होने की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। यह 21वीं सदी के म्यूजियम ऑफ आर्ट में स्थापित है। जब आप पूल के डेक पर होते हैं, तो वह गहरा और पानी से भरा नजर आता है। लेकिन जैसे ही डुप्लेक्स गैलरी में उतरते हैं, चौंक जाते हैं। इसे एक आर्टिस्ट लिन्ड्रो इर्लिच ने तैयार किया है। म्यूजियम के कोर्टयार्ड में चूने के पत्थर से स्वीमिंग पूल का एक फ्रेम बनाया गया है। जब इसे डेक से देखा जाता है, तो यह गहरा है और पानी से भरा दिखाई देता है। वास्तव में पारदर्शी शीशे के अंदर केवल 10 सेमी पानी भरकर बनाई गई यह एक लेयर है। मुड़े हुए शीशे में पानी भरा जाता है तो इससे गहराई अधिक दिखाई देती है। ग्लास के नीच एक खाली स्पेस है, जिसकी दीवारें एक्वामरीन हैं। इस स्पेस के अंदर भी लोग घुस सकते हैं। यह आर्टिफिशियल पूल अपने आप में अमेजिंग दिखाई देता है।

पंजाब में किसानों को पराली जलाने से रोकने गये अधिकारी से ही किसानों ने जलवायी पराली

चण्डीगढ़। पराली जलाने का मुद्दा लंबे समय से चर्चा में हैं। जैसे जैसे अक्टूबर-नवंबर आता है पंजाब-हरियाणा में पराली जलाने की प्रक्रिया की जाती है जिसकी वजह से दिल्ली में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। पिछले काफी सालों से दिल्ली में प्रदूषण की समस्या बनी हुई है। तमाम राजनीतिक वादों के बाद भी दिल्ली की प्रदूषण की समस्या जस की टस बनी हुई है। दिल्ली और पंजाब में आम आदमी की सरकार होने के कारण केजरीवाल सरकार प्रदूषण को लेकर थोड़ा सतर्क है और वह पंजाब के किसानों को पराली न जलाने का निर्देश दे रही है। ऐसे में कई जगहों पर सरकारी अधिकारी खेतों में जाकर इस्पेक्शन कर रहे हैं। किसानों को पराली न जलाने के निर्देश दे रहे हैं। अब ऐसे में पराली जलाने को लेकर किसानों की मनमानी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा हैं। वीडियो में आप देख सकते हैं पराली जलाने से रोकने आये एक सरकारी अधिकारी को किसानों से चारों और से घेर लिया और खुद सरकारी अधिकारी से पराली जलवायी। इस वीडियो को देखने के बाद आप देख सकते हैं कि प्रदूषण को लेकर केजरीवाल सरकार और उनके कर्मचारी कितने गंभीर हैं। ये वीडियो बठिंडा पंजाब का बताया जा रहा है। इसमें साफ देखा जा सकता है कि सरकारी अधिकारी किसानों को अकेले पराली जलाने से रोकने आये हैं। उनके साथ कोई सुरक्षा नहीं नहीं थी। पंजाब सरकार सरकारी कर्मचारियों, पर्यावरण और किसानों के हितों की रक्षा करने में विफल रही है। केजरीवाल के झूठे वादे एक बार फिर जनता के सामने बेनकाब हो गए हैं।

दिल्ली-एनसीआर की हवा 25-30 सिगरेट के धुएं के बराबर

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर की हवा लगातार जहरीली होती जा रही है। शनिवार को भी हवा का स्तर 'गंभीर' कैटेगरी में बना हुआ है। शनिवार सुबह दिल्ली में ओवरऑल एयर क्वालिटी इंडेक्स 504 रहा। वहीं, इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट में 571, धीरपुर में 542, नोएडा में 576 और गुरुग्राम में 512 एक्यूआई दर्ज किया गया। एयर क्वालिटी को लेकर गुरुग्राम के मेदांता हॉस्पिटल के डॉ. अरविंद कुमार ने कहा कि 400-500 एक्यूआई वाली हवा 25-30 सिगरेट के धुएं के बराबर है। इसका असर सभी एज ग्रुप के लोगों पर पड़ता है। प्रेग्नेंट महिलाओं में जहरीली हवा पेट में पल रहे बच्चे को भी नुकसान पहुंचाती है।

अंबानी को धमकी देने वाला गिरफ्तार

मुंबई। मुकेश अंबानी को धमकी भरे ई-मेल भेजने के आरोप में एक शख्स को तेलंगाना से गिरफ्तार किया गया है। महाराष्ट्र की गामदेवी पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान 19 साल के गणेश रमेश वनपारधी के रूप में हुई है। उसे गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया और 8 नवंबर तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। मुकेश अंबानी को 27 अक्टूबर से 1 नवंबर तक जान से मारने की धमकी भरे पांच ई-मेल भेजे गए थे। इसमें 400 करोड़ रुपए की मांग की गई थी। पुलिस ने बताया था कि सभी धमकियां एक ही मेल आईडी से मिली हैं। अंबानी को धमकी भरा पहला मेल 27 अक्टूबर को मिला था। इसमें 20 करोड़ रुपए की मांग की गई थी। अगले दिन 28 अक्टूबर को फिर एक मेल मिला। इसमें रकम बढ़ाकर 200 करोड़ रुपए कर दी गई। फिर 30 अक्टूबर को को भी मेल आया, इसमें 400 करोड़ रुपए की मांग की गई। मेल में कहा गया कि अगर पैसे नहीं मिले तो देश के बेस्ट शूटर्स से उनको मरवा दिया जाएगा।

एआरडी विभाग ने अफीकी स्वाइन फ्लू को फैलने से रोकने के लिए सूअरों को मारने का अभियान चलाया

अगरतला। त्रिपुरा सरकार के पशु संसाधन विकास (एआरडी) विभाग ने अफ्रीकी स्वाइन फ्लू को फैलने से रोकने के लिए खोवाई जिले में सूअरों को मारने का अभियान चलाया है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि जिले के बाटापारा स्थित एक सूअर फार्म में अफ्रीकी स्वाइन फ्लू के कारण कुछ सूअरों की मौत हो जाने के बाद शुक्रवार को यह अभियान चलाया गया। एआरडी के उप निदेशक प्राण कुमार दास ने पीटीआई- से कहा, अफ्रीकी स्वाइन फ्लू को फैलने से रोकने के लिए शुक्रवार को बाटापारा गांव में कुल 14 सूअरों को मारा गया। अभियान खत्म हो गया है। हम दिशानिर्देश के अनुसार शनिवार को स्वच्छता और कीटाणुशोधन अभियान चलाएंगे। उन्होंने बताया कि दो निगरानी टीमें बाटापारा और दो अन्य नजदीकी गांवों में एहतियातन कदम उठा रही हैं, ताकि यह पता चल सकें कि स्वाइन फ्लू का कोई और मामला तो नहीं है। दास ने कहा कि त्रिपुरा सरकार ने अफ्रीकी स्वाइन फ्लू के प्रकोप से बचने के लिए पड़ोसी राज्यों असम और मिजोरम से सूअर के बच्चों के आयात पर पहले ही प्रतिबंध लगा दिया है।

सुकेश ने जेल से की 11 किलो सोना और 101 हीरे का मुकुट दान करने की अपील

नई दिल्ल। दिल्ली की जेल में बंद ठग सुकेश चंद्रशेखर ने राम लला मंदिर में 11 किलो सोना और 101 हीरे का मुकुट दान करने की अपील करते हुए जेल प्रशासन के माध्यम से ट्रस्ट को एक पत्र लिखा है। मिली जानकारी के अनुसार वह अयोध्या राम मंदिर में रामलला की मूर्ति के लिए 11 किलो सोने और 101 हीरों से जड़ा मुकुट दान करना चाहता है। इसके लिए उसने जेल से एक पत्र लिखा है और मूर्ति दान करने की अनुमति मांगी है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रमुख को लिखी दो पेजों की इस चिट्ठी में उसने लिखा है कि वो रामलला की मूर्ति के लिए एक मुकुट दान करना चाहता है। सुकेश ने चिट्ठी में लिखा है कि वो अपने सामर्थ्य अनुसार दान कर रहा है। उसने बताया कि वो यहां जिस मुकुट की बात कर रहा है वो 11 किलो के 916 कैरेट सोने से बना है। इसके साथ ही ये मुकुट 101 हीरों से जड़ा हुआ है और हर एक हीरे का वजन 5 कैरेट है। सुकेश चंद्रशेखर ने चिट्ठी में बताया है कि वो और उसका परिवार भगवान श्री राम के बहुत बड़े भक्त हैं और उनके लिए ऐसा मुकुट दान करना उनका सपना सच होने जैसा है। उसने कहा, हमारे पास आज जो कुछ भी है, वो भगवान राम के आशीर्वाद से है। ऐसे में हमारा छोटा सा योगदान इस महान मंदिर का हिस्सा बनेगा, ये हमारे लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद है। सुकेश ने इस चिट्ठी में मुकुट बनाने वाले ज्वेलर के बारे में भी बताया है और कहा कि उसके खास निर्देशों के मुताबिक ही इस मुकुट को डिजाइन किया गया है। सुकेश के मुताबिक सन 1900 से ज्वेलरी बनाने का काम कर रहे दक्षिण भारत के एक ज्वेलर ने ये शानदार मुकुट तैयार किया है।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बढ़ते प्रदूषण के लिए दिल्ली की बसों को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली। दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण के लिए पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बसों को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि, पिछले दो दिनों से दिल्ली में प्रदूषण का स्तर तेजी से बढ़ रहा है। आज उसमें थोड़ी गिरावट आई है। कल सुबह 10.30 बजे के आसपास एक्यूआई 450 से ऊपर था। आज यह 40 के आसपास दर्ज किया गया है। अगले दिनों भी दिल्ली में प्रदूषण गंभीर स्थिति में रहेगा। उन्होंने कहा कि, दिल्ली के आसपास बढ़े हुए प्रदूषण स्तर को देखते हुए जीआरएपी-3 लागू किया गया है, जिसके तहत दिल्ली में निर्माण रोक दिया गया है, पानी का छिड़काव बढ़ा दिया गया है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक बार फिर बीजेपी-आप में दिल्ली में स्मॉग टावर्स को लेकर बड़ी लड़ाई सामने आ गई है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री ने बीजेपी पर हमला बोला और कहा कि, स्मॉग टावर्स को बंद करना एक साजिश है। उन्होंने कहा कि, भाजपा नेता स्मॉग टावरों पर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने 13 जनवरी 2020 को दिल्ली में दो स्मॉग टावर लगाने का आदेश दिया था। एक सीपी में दिल्ली सरकार द्वारा, दूसरा आनंद विहार में केंद्र द्वारा। दिल्ली सरकार ने 25 करोड़ रुपये के बजट पर स्मॉग टावर स्थापित करने को मंजूरी दी। अगस्त 2021 में दिल्ली में स्मॉग टावर का उद्घाटन सीएम केजरीवाल ने किया था। आईआईटी-बॉम्बे और आईआईटी दिल्ली को स्मॉग टावर्स पर अध्ययन करना था। स्मॉग टावर काम कर रहे थे, अध्ययन चल रहा था। पहली बार, डीपीसीसी अध्यक्ष को स्पेशल ड्यूटी पर नियुक्त किया गया था। डीपीसीसी अध्यक्षकुमार ने वास्तविक समय प्रदूषण अध्ययन केंद्र को बंद करवा दिया और स्मॉग टावरों के लिए भुगतान रोक दिया। संचालन एवं प्रबंधन हेतु अंतिम 2सीआर का भुगतान अश्विनी कुमार द्वारा रोक दिया गया था। बता दें कि, प्रदूषण को लेकर दिल्ली में महासंग्राम छिड़ गया है। आप ने भाजपा/केंद्र पर डीपीसीसी अध्यक्ष के माध्यम से दिल्ली प्रदूषण अध्ययन केंद्र और स्मॉग टावरों को रोकने का आरोप लगाया। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति के अध्यक्ष प्रदूषण पर स्टडी भी रोक रहे हैं। उन्होंने कहा कि यूपी द्वारा दिल्ली में प्रदूषित बसें भेजना उनका जानबूझकर किया गया प्रयास लगता है।

'मिया' वोटों की उम्मीद नहीं, हिमंत सरमा बोले- मूल असम मुसलमानों पर ध्यान

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने शनिवार को कहा कि उन्हें 'मिया मुसलमानों' से वोट की उम्मीद नहीं है। गुवाहाटी में मीडिया को संबोधित करते हुए हिमंत सरमा ने यह भी कहा कि उन्होंने मेडिकल कॉलेजों का दौरा इसलिए नहीं किया क्योंकि वहां मिया मुस्लिम हैं। 'मिया' असम में बंगाली भाषी या बंगाल मूल के मुसलमानों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक अपमानजनक शब्द है। असम के मुख्यमंत्री ने कहा कि मुझे मिया मुसलमानों से वोट की उम्मीद नहीं है। मैं मेडिकल कॉलेजों का दौरा नहीं करता क्योंकि वहां मिया मुसलमान अधिक संख्या में हैं।

हिमंत सरमा ने आगे कहा कि वह और उनकी पार्टी राज्य में स्वदेशी मुसलमानों के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम असम के मूल मुसलमानों के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। असम के मूल मुसलमानों को छोड़कर, मैं कभी भी मुसलमानों से वोट की उम्मीद नहीं करता। यह बहुत दुखद है कि हर मेडिकल कॉलेज में मिया मुस्लिम हमारे मूल युवाओं से अधिक हैं। मैंने ज्यादा जाना बंद कर दिया है अब इन कॉलेजों के लिए। मुख्यमंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस और एआईयूडीएफ का असम में मुस्लिम समुदाय के साथ वोट का रिश्ता है और वर्षों से डर का माहौल बनाकर उनसे वोट मांगे गए हैं।

सरमा ने कहा कि दोनों दलों का प्रवासी मूल के मुसलमानों के साथ वोट मिलने तक का रिश्ता है, लेकिन उन्होंने उनके विकास के लिए या उन क्षेत्रों में जहां वे रहते हैं, कोई कदम नहीं उठाया है। उन्होंने कहा, उन्होंने कोई सड़क, पुल, स्कूल नहीं बनाया है। उन्होंने कहा कि पहले कदम के रूप में हमने स्वदेशी असमिया मुसलमानों की जीवन स्थितियों में सुधार के लिए उपाय किए हैं और जल्द ही उन पर एक सर्वेक्षण आयोजित किया जाएगा। इस बीच, असम स्थित ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के प्रमुख और धुबरी से सांसद मौलाना बदरुद्दीन अजमल ने हिमंत सरमा को जवाब देते हुए कहा कि मिया मुसलमानों के काम नहीं करने से गुवाहाटी वीरान हो जाएगा।

केन्द्र सरकार ही ढूंढ सकती है मराठा आरक्षण मुद्दे का समाधान : संजय राउत

मुंबई। उद्धव ठाकरे बालासाहेब गुट के शिवसेना नेता संजय राउत ने कहा कि केवल केंद्र सरकार ही मराठा आरक्षण मुद्दे का समाधान निकाल सकती है। लेकिन केन्द्र सरकार की इसकी चिंता ही नहीं है। उन्होंने कहा कि जब महाराष्ट्र जल रहा है तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह चुनाव प्रचार में व्यस्त हैं। राज्यसभा सांसद ने यहां संवाददाताओं से कहा कि उनके दल का मानना है कि महाराष्ट्र में मराठाओं को आरक्षण दिया जाना चाहिए लेकिन इसके लिए अन्य समुदायों के मौजूदा कोटे से छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। संजय राउत ने कहा कि केवल केंद्र सरकार ही ऐसा मराठा आरक्षण मुद्दे का हल निकाल सकती है। इस दौरान संजय राउत ने सवाल उठाते हुए कहा कि मोदी को मराठा कार्यकर्ता मनोज जरांगे से बात करनी चाहिए जो आरक्षण की मांग को लेकर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं। राउत ने सवाल उठाया कि इस समय लोग आत्महत्या कर रहे हैं। अगर जरांगे को कुछ हो गया तो महाराष्ट्र जलेगा। क्या आप महाराष्ट्र को जलने देना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मराठा समुदाय की मांग को पूरा करना एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार की भी जिम्मेदारी है। मीडिया में छपी एक खबर के अनुसार सांसद संजय राउत ने कहा था कि महाराष्ट्र में आग लगी हुई है। मराठा आरक्षण को लेकर महाराष्ट्र में लोग आत्महत्या कर रहे हैं। मनोज जारांगे पाटिल की जान खतरे में है। अगर उनके जीवन के साथ कुछ बुरा होता है, तो महाराष्ट्र बुरी तरह से जल जाएगा। क्या सरकार महाराष्ट्र में आग लगाना चाहती है? क्या यह सब इसी बारे में है? पीएम मोदी को कम से कम मनोज जारांगे पाटिल से फोन पर बात करनी चाहिए। ले?किन उनके पास तो बात करने का भी समय नहीं है।

मध्य प्रदेश में विपक्ष पर गरजे अमित शाह, कहा- कांग्रेस भ्रष्टाचार, कमीशन, सांप्रदायिक दंगे, आपराधिक राजनीति फॉर्मूले पर चल रही है

शिवपुरी (एजेंसी)। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावः केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार (4 नवंबर) को लोगों से आगामी मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा को वोट देने का आग्रह करते हुए कहा कि पार्टी ने अपने 18 साल के शासन में सभी समुदायों के कल्याण के लिए काम किया और इसे एक मजबूत राज्य बनाया। अमित शाह ने कहा कि 'बेमिसाल राज्य' जबकि कांग्रेस सरकार ने प्रदेश को 'बीमारू राज्य' बना दिया था। उन्होंने कांग्रेस पर 'अपना खजाना भरने' के लिए काम करने का आरोप लगाया और कहा कि इसके विपरीत, भाजपा ने राज्य का विकास किया है। मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होगा।

शाह, जिन्होंने आज मध्य प्रदेश के शिवपुरी का दौरा किया, ने एक चुनाव अभियान को संबोधित किया और राज्य में अपने पिछले शासन के लिए कांग्रेस की आलोचना की और आरोप लगाया कि पार्टी ने अपने लाभ के लिए काम किया। शाह ने कहा कांग्रेस पार्टी 4सी फॉर्मूले पर चलती है: सी- भ्रष्टाचार, सी- कमीशन, सी- सांप्रदायिक दंगे, सी- आपराधिक राजनीति। मध्य प्रदेश को इन 4सी से बचाने और विकास की धारा में लाने के लिए बीजेपी को वोट देना बहुत जरूरी है।

उन्होंने आगे कहा कि '...कांग्रेस ने जब भी शासन किया, केवल अपना खजाना भरने का काम किया। जबकि भाजपा ने विकास के लिए काम किया। आज मैं कमलनाथ से कहने आया हूं कि अगर उनमें थोड़ी भी हिम्मत है तो जवाब दें - जब उन्होंने 2002 में मध्य प्रदेश छोड़ा था, यहां का बजट केवल 23 हजार करोड़ रुपये था। आज भाजपा के 18 साल के शासनकाल में यहां का बजट बढ़कर 3 लाख 14 हजार करोड़ रुपये हो गया है...'

'डबल इंजन सरकार'

गृह मंत्री ने लोगों से 'डबल इंजन सरकार' को दोहराने के लिए कहा और कहा कि इसने राज्य को 'बीमारू राज्य' से 'बेमिसाल राज्य' में बदल दिया है। उन्होंने कहा अपना वोट डालते समय यह न सोचें कि आप विधायक, मुख्यमंत्री चुनने या भाजपा को सत्ता में लाने के लिए मतदान कर रहे हैं। लेकिन वोट करते समय, ध्यान रखें कि डबल इंजन सरकार ने मध्य प्रदेश को 'बीमारू राज्य' से 'बेमिसाल राज्य' में बदल दिया... आपका एक वोट सुनिश्चित करेगा कि अगले 5 वर्षों में यहां किसकी सरकार होगी। शाह ने कहा एक तरफ कांग्रेस है जिसने मध्य प्रदेश को कई वर्षों तक अंधेरे में रखा, इसे 'बीमारू' राज्य बना दिया। दूसरी तरफ भाजपा सरकार है, जिसने 18 वर्षों में किसानों, दलितों, पिछड़े वर्गों, महिलाओं, आदिवासियों और युवाओं के कल्याण के लिए काम किया है।

शाह ने कमलनाथ को निशाने पर लिया

उन्होंने आरोप लगाया कि अगर कमल नाथ दोबारा मुख्यमंत्री बने तो वह शिवराज सिंह चौहान सरकार द्वारा शुरू की गई सभी कल्याणकारी योजनाएं बंद कर देंगे। कमलनाथ ने शिवराज सिंह सरकार द्वारा संचालित 51 से अधिक गरीब कल्याण योजनाओं को बंद कर दिया। लेकिन अगर कमल नाथ दोबारा आए तो लाडली बहना योजना भी बंद हो जाएगी और किसानों को 12,000 रुपये मिलना भी बंद हो जाएंगे।'

स्मृति ईरानी के आरोपों पर कांग्रेस का पलटवार, कहा- बीजेपी कर रही है बदले की राजनीति

नई दिल्ली (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को संकटग्रस्त महादेव सट्टेबाजी ऐप के प्रमोटरों से 508 करोड़ मिलने के प्रवर्तन निदेशालय के दावे के एक दिन बाद बघेल ने इसका दृढ़ता से खंडन किया है। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने पूछा कि क्या बघेल अपनी ही सरकार पर सवाल उठा रहे हैं। महादेव ऐप चर्चा में है क्योंकि हाल ही में दुबई स्थित इस प्लेटफॉर्म के संबंध में कई बॉलीवुड हस्तियों से पूछताछ की गई थी। ईडी ने कहा कि उसने एक वेब बेनामी बैंक खाते और राज्य में चुनाव के लिए कुछ 'बघेलों' को दिए गए ?508 करोड़ के फंड से जुड़े एक कबूलनामे का खुलासा किया। बघले ने आरोप पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि क्या इससे बड़ा मजाक हो सकता है? अगर आज मैं किसी को पकड़ लूं और उससे पीएम मोदी का नाम लेने के लिए कहूं, तो क्या वे (ईडी) उससे पूछताछ करेंगे? किसी की प्रतिष्ठा को धूमिल करना बहुत आसान हो गया है।

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने स्मृति इराई की शनिवार सुबह की प्रेस कॉन्फ्रेंस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जैसे ही बीजेपी सुबह-सुबह ईडी के बचाव में खुलकर सामने आई, राजस्थान, छत्तीसगढ़ में ईडी और बीजेपी के बीच मिलीभगत साबित हो गई। बता दें कि बीजेपी की तरफ से पूरे मामले में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई। स्मृति ईरानी ने कहा कि छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश में महादेव ऐप के संबंध में एफआईआर दर्ज की गई थीं। दोनों राज्यों में, भाजपा सत्ता में नहीं है। तो फिर भूपेश बघेल के खिलाफ साजिश कौन कर रहा है? स्मृति ईरानी ने कहा कि यह मामला हाल का नहीं है।

रूस ने भारत से 24 मालवाहक जहाज खरीदे, तो बढ़ गई अमेरिका की चिंता

नई दिल्ली। रुस और भारत के बीच 24 मालवाहक जहाज खरीदी की डील से अमेरिका में चिंता व्याप्त हो गई है। वहीं रूस ने भारतीय रुपए को खर्च करने का एक अच्छा विकल्प खोज लिया है। रूस ने एक भारतीय शिपयार्ड को 24 मालवाहक जहाजों का ऑर्डर दिया है। जानकार बता रहे हैं ?कि रूस ने भारत को करोड़ों बैरल कच्चा तेल बेचकर कमाए गए रुपयों को खर्च करने का एक बेहतर तरीका ढूंढ लिया है। गौरतलब है कि पेमेंट में आ रही समस्याओं के कारण रूस के एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की दो बैट्री की डिलीवरी में देरी हो रही थी। ऐसे में गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल) और रूसी निर्यात केंद्र के बीच सहयोग की घोषणा हुई। बता दें कि रूसी अधिकारी एस-400 की शेष दो बैटरियों की डिलीवरी कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए भारत में थे। माना जा रहा है कि भारत सरकार के स्वामित्व वाली जीएसएल 2027 तक 24 मालवाहक जहाजों का निर्माण कर देगी जो कैस्पियन सागर में चलेंगी। पश्चिम के प्रतिबंधों के बावजूद भारत रूस से व्यापार कर रहा है। यह डील दोनों ही देशों के लिए फायदेमंद मानी जा रही है। गौरतलब है कि वित्तीय वर्ष 2022 में भारत ने रूस को मशीनरी, रसायन, समुद्री उत्पाद और दवाइयों समेत 3,139 चीजों का निर्यात किया, जिसकी कीमत 3.14 अरब अमेरिकी डॉलर थी। वहीं, आयात के मामले में, भारत ने वित्तीय वर्ष 2022 में रूस से 1,225 वस्तुओं का आयात किया, जिनमें कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद, कीमती पत्थर और वनस्पति तेल शामिल हैं, जिनकी कीमत 46.21 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। जानकार बता रहे हैं ?कि ये दोनों देश अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करना चाहते हैं।

आईएएस अधिकारी राजशेखर को क्लीन चिट, केजरीवाल सरकार के लिए सिरदर्द

-उच्च स्तरीय समिति ने आरोपों को बेबुनियाद बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार के आईएएस अधिकारी वाईवीजे राजशेखर के खिलाफ शिकायतों की जांच के लिए गठित उच्च स्तरीय समिति ने अपनी रिपोर्ट में उन्हें 'क्लीन चिट दे दी है। यह रिपोर्ट आईएएस अधिकारी राजशेखर के लिए बड़ी राहत माना जा रहा है। हाई पावर कमेटी ने उनके ऊपर लगे आरोपों को 'बेबुनियाद' और 'मनगढ़ंत' करार दिया था। कमेटी ने रिपोर्ट में बताया है कि निलंबित आईएएस अधिकारी उदित प्रकाश राय और उनकी पत्नी शिल्पी राय सहित कई लोगों ने अधिकारियों के समक्ष आधे दर्जन से अधिक शिकायतें दर्ज कराई थीं। आईएएस अधिकारी राय और उनकी पत्नी शिल्पी की अधिकांश शिकायतों में धमकी देने, परेशान करने, पद का दुरूपयोग करने और इस तरह के अन्य कृत्यों में शामिल रहने का आरोप लगाया गया है। उन्होंने कहा कि सेवाएं एवं गृह विभाग के प्रधान सचिव और सतर्कता निदेशालय के सचिव की सदस्यता वाली तीन सदस्यीय समिति का गठन सितंबर में किया गया था। राजशेखर वर्तमान में विशेष सचिव (सतर्कता और राजस्व) के रूप में कार्यरत हैं। उनके के खिलाफ शिकायतों की जांच के लिए सितंबर में सेवा और गृह विभागों के प्रमुख सचिवों और सतर्कता निदेशालय के सचिव की तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया था। जांच के बाद उच्च स्तरीय समिति ने बताया कि इस वर्तमान में विशेष सचिव (सतर्कता एवं राजस्व) के रूप में पदस्थ राजशेखर के खिलाफ शिकायतों की जांच करने की जिम्मेदारी दी गई थी। समिति ने रिपोर्ट में कहा है, आईएएस राजशेखर के खिलाफ शिकायतों में लगे आरोप बेबुनियाद, मनगढ़ंत और काल्पनिक हैं। दरअसल राय और उनकी पत्नी के अलावा एवी प्रेमनाथ ने भी राजशेखर के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। प्रेमनाथ को गृह मंत्रालय ने अब सेवानिवृत्त कर दिया है। बता दें कि दिल्ली सरकार में विशेष सतर्कता अधिकारी के रूप में कार्यरत और आईएएस अधिकारी राजशेखर का रिश्ता केजरीवाल सरकार के खिलाफ अच्छा नहीं रहा। सीएम आवास विवाद, स्कूलों में कमरों के निर्माण, आबकारी घोटाला, सहित कई मामलों में उन्होंने अनियमितता का खुलासा किया था। उनकी इस कार्रवाई से दिल्ली सरकार के लिए आज भी सिरदर्द साबित हो रही हैं।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा- गठबंधन साथियों को धोखा देने वाली पार्टी है कांग्रेस

लखनऊ (एजेंसी)। इंडिया गठबंधन में बिखराव का एक और अध्याय सामने आ गया है। हम आपको बता दें कि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच मतभेद इतने गहरा गये हैं कि इसका असर लोकसभा चुनावों में दोनों दलों के गठबंधन पर पड़ सकता है। हम आपको बता दें कि समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कांगेस पर उनकी पार्टी को 'जातिवादी और वंशवादी' बताने के लिए निशाना साधते हुए कहा है कि कांग्रेस अब भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जैसी ही भाषा बोल रही है। अखिलेश यादव ने साथ ही यह भी कहा है कि यह तो अच्छा हुआ कि हमें पहले ही कांग्रेस की मंशा का पता चल गया है। उन्होंने कहा है कि कांग्रेस का इतिहास गठबंधन साथियों को धोखा देने वाले का रहा है। अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश में समाजवादी पार्टी में कांग्रेस की ओर से सेंध लगाये जाने पर भी नाराजगी जताई।

हम आपको बता दें कि अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए सपा का प्रचार करते हुए छतरपुर जिले के चंदला में कहा, ''यह कांग्रेस ही थी जिसने मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए सपा के साथ गठबंधन करने से इंकार कर दिया।'' यादव ने कहा, %%कांग्रेस कहती है कि सपा 'जातिवादी और वंशवादी' पार्टी है, तो फिर उसमें और भाजपा में क्या अंतर है? वे दोनों एक ही भाषा बोलते हैं।'' अखिलेश यादव ने कहा कि वंशवादी राजनीति हर पार्टी में मौजूद है। उन्होंने कहा कि जो भी सामाजिक न्याय की बात करेगा उसे जातिवादी होने का आरोप झेलना पड़ेगा। राज्य में कांग्रेस द्वारा सपा उम्मीदवारों की खरीद-फरोख्त पर यादव ने कहा, ''यह उनके इरादों को दर्शाता है...उन्हें ऐसा करने दीजिए। मध्य प्रदेश के लोगों ने देखा है कि यह कांग्रेस ही थी जिसने गठबंधन को खारिज कर दिया था।%% हम आपको बता दें कि अखिलेश यादव चंदला में पार्टी प्रत्याशी पुष्पेंद्र अहिरवार के समर्थन में एक आमसभा को संबोधित करने आये थे।

जनसभा को संबोधित करते हुए यादव ने कहा कि कुछ दल सपा को जातिवादी कह रहे हैं, लेकिन ÷समाजवादी कभी भी जातिवादी नहीं हो सकते क्योंकि वे सभी को साथ लेकर चलने में विश्वास करते हैं।÷ उन्होंने आश्वासन दिया कि जब भी सपा सत्ता में आएगी या उसके समर्थन से राज्य में सरकार बनेगी, तो सबसे पहले जातीय जनगणना कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि चंदला की जनता ने दो बार सपा प्रत्याशियों को आशीर्वाद दिया है और इस बार भी वह उसकी जीत सुनिश्चित करेगी।

बाद में पत्रकारों से बातचीत करते हुए विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के बारे में सपा प्रमुख यादव ने कहा कि इस पर लोकसभा चुनाव के समय चर्चा की जाएगी, क्योंकि केवल ÷पीडीए÷ (पिछड़ा, दलित और आदिवासी) की ताकत ही भाजपा को हरा सकेगी। उन्होंने एक प्रश्न पर चुटकी लेते हुए कहा कि कांग्रेस के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार कमलनाथ ÷बुजुर्ग÷ हैं, लेकिन सत्तारुढ़ भाजपा के पास मध्य प्रदेश में संभागों की संख्या से अधिक मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हैं।

चुनाव के बाद किसी पार्टी को समर्थन देने पर यादव ने कहा कि वह केवल उसी पार्टी को समर्थन देने पर विचार करेंगे जो जातीय जनगणना कराएगी। हालाँकि, यादव ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के उस बयान पर टिप्पणी करने से परहेज किया कि विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन में कुछ भी नहीं हो रहा है, उन्होंने कहा कि वह इस बारे में बाद में बात करेंगे। सपा प्रमुख यादव ने कहा, ''भाजपा भी अब पिछड़े वर्गों को अधिक टिकट देने की बात कर रही है। यह मानसिकता में बड़े बदलाव को दर्शाता है। यहां तक कि कांग्रेस, जिसने आजादी के बाद जातीय जनगणना कराना बंद कर दिया था, अब इसके बारे में बात कर रही है...इसका मतलब है कि उन्हें पीडीए की ताकत का एहसास हो रहा है।'' दलित या पिछड़े वर्ग के किसी सदस्य को मुख्यमंत्री बनाने के चुनावी वादे के बारे में पूछे जाने पर यादव ने दावा किया कि कांग्रेस और भाजपा दोनों कभी भी दलितों और पिछड़े वर्गों के पक्ष में निर्णय नहीं लेंगी।

अमेरिका ने इजराइल को 14.5 अरब डॉलर की सैन्य सहायता देने को मंजूरी दी

वाशिंगटन । अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने हमास के साथ युद्ध कर रहे इजराइल को 14.5 अरब डॉलर की सैन्य सहायता मुहैया करने को मंजूरी दी। यह मंजूरी हमास के साथ इस युद्ध में इजराइल के प्रति अमेरिका के व्यापक समर्थन को दर्शाती है, लेकिन इसके कारण सदन के नए स्पीकर माइक जॉनसन का दलगत रुख भी देखने को मिला जो डेमोक्रेटिक पार्टी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के लिए सीधी चुनौती बन गया। जॉनसन ने तय नियमों से परे जाकर रिपब्लिकन पैकेज की वकालत की, जिसमें आपात सहायता देने के लिए अन्य सरकारी खर्चों में कमी करने की बात की गई है। इसने सदन में रिपब्लिकन पार्टी के नए रूढ़ीवादी नेतृत्व को स्थापित किया, लेकिन जिस विधेयक को आमतौर पर दोनों दल का समर्थन मिलने की संभावना थी, इस लेकर डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन सांसद बंट गए। बाइडन ने कहा है कि वह विधेयक को लेकर वीटो का इस्तेमाल करुंगा। डेमोक्रेटिक पार्टी का कहना है कि रिपब्लिकन पैकेज से इजराइल को मदद पहुंचाने में देरी होगी। सीनेट में बहुमत के नेता चक शूमर ने कहा है कि ''आश्चर्यजनक रूप से गैर गंभीर'' विधेयक के सीनेट में पारित हो पाने की कोई संभावना नहीं है। युद्ध में इजराइल का समर्थन करने के लिए संसद में पहला महत्वपूर्ण विधायी प्रयास बाइडन के लगभग 106 अरब डॉलर के उस अनुरोध से बहुत कम है, जिसमें रूस के खिलाफ लड़ रहे यूक्रेन को मदद करने, चीन से निपटने के लिए अमेरिकी प्रयासों को आगे बढ़ाने और मैक्सिको के साथ लगती सीमा पर चुनौती से निपटने का भी प्रावधान किया गया था। विधेयक में इजराइल के लिए उतनी ही राशि देने की बात की गई है, जितनी रकम का बाइडन ने अनुरोध किया था, लेकिन अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक निवास एवं कार्यालय ने कहा कि रिपब्लिकन योजना में गाजा के लिए मानवीय सहायता को शामिल नहीं करना एक ''बड़ी गलती'' है क्योंकि इससे संकट गहरा गया है।

शरारती फोन कॉल की शिकार हुई प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी

– रूसी हास्य अभिनेता ने बनाया बेवकूफ

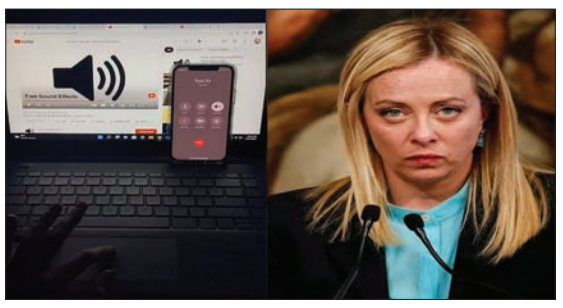

रोम । अपने ही देश में विपक्षी नेताओं से आलोचना झेलने वाली इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी ने कहा कि उनके मुख्य राजनयिक सलाहकार ने इस्तीफा दे दिया है। उन्हें एक शरारती फोन कॉल से धोखा दिया गया था जिसमें उन्होंने यूक्रेन में युद्ध और प्रवासन पर चर्चा की थी। मेलोनी ने कहा कि पहले नाटो और इजराइल में इटली के राजदूत के रूप में कार्यरत फ्रांसेस्को टैलो ने असफलता के कारण पद छोड़ दिया है। अफ्रीकी संघ के उच्च-स्तरीय अधिकारी के नाम पर आए एक कॉल में मेलोनी ने कई विषयों पर अहम टिप्पणियां की। इसमें कहा गया कि इटली को प्रवासन पर नकेल लगाने पर्याप्त समर्थन नहीं मिल रहा। मेलोनी ने फोन कॉल पर कहा कि यूक्रेन युद्ध से बहुत थकान है और सभी को जल्द ही एहसास होगा कि दोनों देशों को स्थायी समाधान की जरूरत है। इटली के प्रधानमंत्री कार्यालय ने बाद में पुष्टि की कि फोन करने वाला वास्तव में अफ्रीकी संघ का अधिकारी नहीं था, बल्कि एक रूसी हास्य अभिनेता था जो उन्हें बेवकूफ बनाने में कामयाब रहा। इस पर पीएम मेलोनी ने खेद जताकर कहा कि भ्रामक फोन पर बताया गया कि फोन करने वाले अफ्रीकी संघ आयोग के अध्यक्ष मौसा फाकी है। इस सप्ताह की शुरुआत में बातचीत की टिप्पणियाँ ऑनलाइन जारी होने के बाद मेलोनी ने कॉल करने वाले की पर्याप्त रूप से स्क्रीनिंग करने में विफल रहने के लिए अपने कर्मचारियों को दोषी ठहराया।

आतंकियों के हमले से बलूचिस्तान में 14 सैनिकों की मौत

करांची । पाकिस्तान के दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत में आतंकी हमले के दौरान 14 सैनिकों के मारे जाने की खबर है। यह हमला शुक्रवार को आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों के दो वाहनों पर घात लगाकर किया। गौरतलब है कि बलूचिस्तान में शुक्रवार को हुआ आतंकवादी हमला इस साल का सबसे वीभत्स हमला माना जा रहा है, जिसमें पाकिस्तानी सेना के सबसे ज्यादा सैनिक मारे गए हैं। वहीं पाकिस्तानी सेना की ओर से जारी एक बयान के अनुसार, आतंकवादियों ने यह हमला उस वक्त किया, जब सैनिकों के दो वाहन पसनी से ग्वादर जिले के ओरमारा इलाके में जा रहे थे। सेना के बयान के मुताबिक, इलाके में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है और इस जघन्य कृत्य को अंजाम देने वाले अपराधियों को पकड़कर न्याय के कठघरे में लाया जाएगा। सेना की मीडिया शाखा ने हालांकि हमले के बारे में कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं दी है।

गाजा पट्टी से सामने आई भयावह तस्वीर, सड़क पर लाशें बिछी

गाजा । इजराइल हमास युद्ध में गाजा पट्टी में भारी तबाही देखने में मिल रही हैं। गाजा पट्टी के कोस्ट रोड से भयावह तस्वीर सामने आई है। जिसमें सड़क पर लाशें बिछी है। इजरायली हमले के बाद गाजा पट्टी पूरी तरह से तबाह हो चुका है। लेकिन हमास आतंकी अभी भी मान नहीं रहे हैं। फलस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय प्रवक्ता ने कहा, हम लोगों ने अंतरराष्ट्रीय कानून के मुताबिक रेड क्रॉस को इसकी सूचना दी है। हमास समर्थित टीवी चैनल ने कहा था कि इस हमले के बहुत लोगों की जान गई है, लेकिन जो बयान जारी किया गया है, उसमें हताहतों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। इजराइल ने गाजा के बड़े अस्पताल अल-शिफा को निशाना बनाया। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने दावा किया कि इजराइली सेना ने पहले अस्पताल और फिर एंबुलेंस में घायलों को दूसरी जगह ले जाते समय उन पर हमला किया गया। ताजा बमबारी में कई लोग मारे गए हैं। आईडीएफ की ओर से कहा गया है कि वह इसकी जांच कर रही है।

फलस्तीनी कामगारों ने इजराइल पर लगाया प्रताड़ना का आरोप

तेल अवीव । फलस्तीनी कामगारों ने इजरायल पर प्रताड़ना का आरोप लगाया है। इससे पहले इजराइल ने देश में काम कर रहे गाजा पट्टी के हजारों फलस्तीनी कामगारों को वापस संघर्षरत क्षेत्र में भेज दिया है। फलस्तीनी प्राधिकारियों ने यह जानकारी दी है। हालां?कि कुछ कामगार सात अक्टूबर को दक्षिणी इजराइल पर हमास द्वारा किए गये हमले के बाद से सील की गयी सीमा को पैदल पार करते हुए दिखे। उन्हें इजराइल-हमास युद्ध शुरू होने के बाद से हिरासत केंद्रों में रखा गया था। कामगारों ने हिरासत केंद्रों में इजराइली प्राधिकारियों द्वारा हिंसक दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया। वहीं इजराइली सेना ने अभी इन आरोपों पर कोई टिप्पणी नहीं की है। एक कामगार वाइल अल-सजदा ने कहा है कि हमने त्याग किया और उन्होंने वहां हमारे साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया। बता दें कि अल-सजदा गाजा के उन तकरीबन 18,000 फलस्तीनियों में शामिल हैं जिन्हें इजराइल में मामूली काम से संबंधित नौकरियों पर रखा गया था। लोग बताते हैं ?कि इजराइल में काम करने के परमिट की गाजा में काफी अहमियत थी जहां बेरोजगारी दर 50 फीसदी के करीब पहुंच रही है। इजराइल ने हाल के वर्षों में परमिट देना शुरू किया था। इजराइल ने बृहस्पतिवार देर रात घोषणा की कि वह कामगारों को दिया जाने वाला परमिट रद्द कर रहा है और इन कामगारों को वापस गाजा पट्टी भेजा जाएगा।शुक्रवार को घर लौटे कामगारों ने इजराइली जेलों में रखे जाने की बात कही। वहीं कुछ लोगों के शरीर पर खरोंचें और अन्य चोटें थी जिसे उन्होंने इजराइली दुर्व्यवहार का कारण बताया।

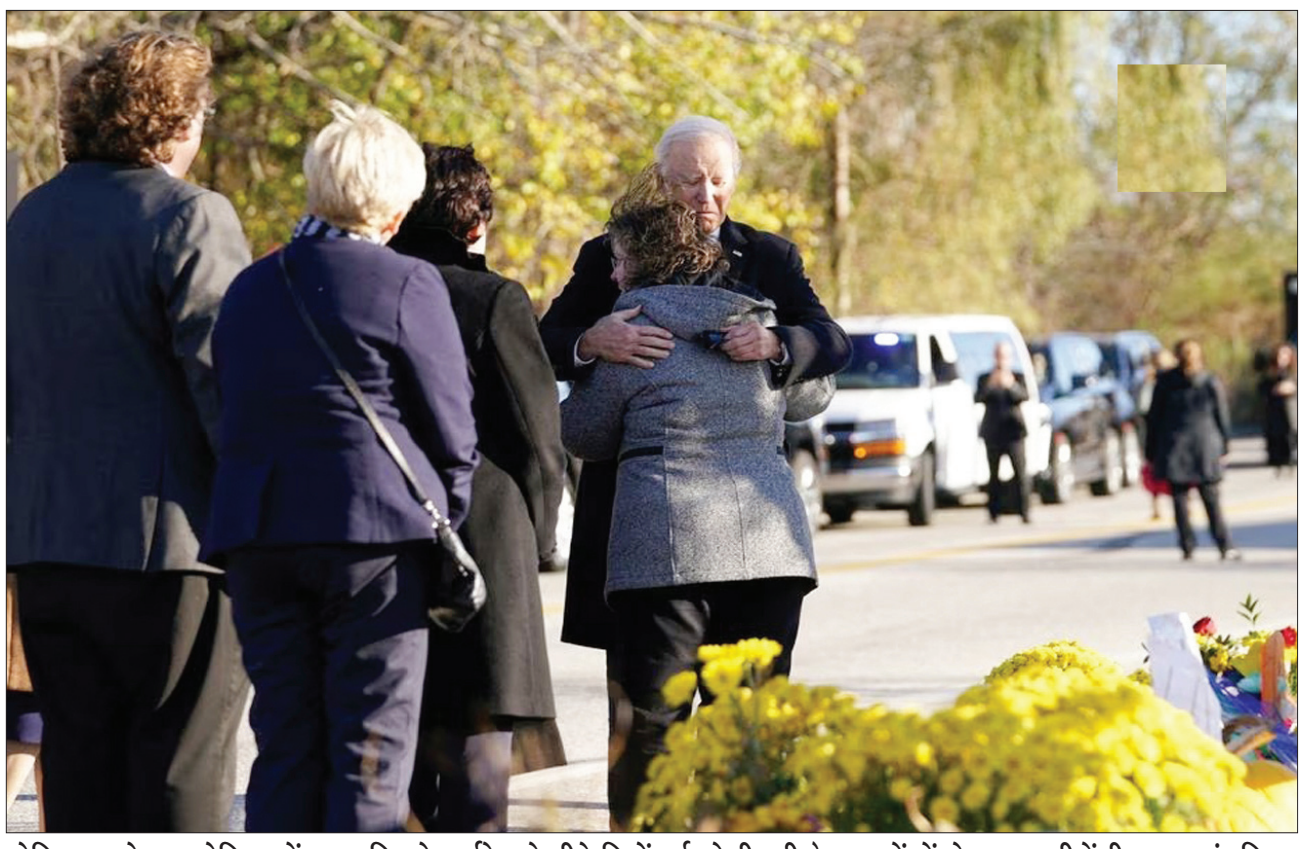

लेविस्टन, मेन, अमेरिका में राष्ट्रपति जो बाईडेन ने बीते दिनों हुई गोलीबारी के स्थानों में से एक, स्कीमेंजीस बार एंड ग्रिल रेस्तरां के सह-मालिक कैथी लेबल को गले लगाया, क्योंकि वह पीड़ितों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं।

हमास पर इजरायल का सबसे बड़ा हमला

आतंकियों के आका इस्माइल हानिया के घर पर मिसाइल अटैक

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजराइल और हमास के बीच चल रही जंग के 29वें दिन इजरायली सेना ने हमास के मुखिया इस्माइल हानिया के घर पर मिसाइल अटैक किया है। अल-अक्सा रेडियो ने शनिवार को बताया कि एक इजरायली ड्रोन ने इस्माइल हानिया के गाजा स्थित घर पर मिसाइल दागी। हालांकि, इस हमले के दौरान वो अपने घर पर मौजूद नहीं था। वहां उसका परिवार रहता था, लेकिन हमले के वक्त कोई सदस्य मौजूद था या नहीं, ये अभी तक पता नहीं चल पाया है। हमास का राजनीतिक प्रमुख इस्माइल हनिया साल 2019 से गाजा पट्टी के बाहर तुर्की और कतर के बीच रह रहा है।

जानकारी के मुताबिक, इजराइल ने गाजा शहर को चारों तरफ से घेर लिया है। दो दिन के भीतर ही 150 से ज्यादा हमास के आतंकी मारे गए हैं। अमेरिकी ड्रोन सुरंगों के पास बंधकों को ढूंढ रहे हैं। इजरायली सेना ने जब से गाजा पर सीधा हमला किया है तब से तीन तरफ से गाजा को घेरा जा रहा है। इजरायल ने गाजा को दो हिस्सों मे बांट दिया है। इजरायल का दावा है कि अब तक वो 1000 हमास आतंकियों को ढेर कर चुका है, जबकि उसके 24 सैनिक मारे गए हैं। मौता का आकडा भी लगातार बढ़ रहा है। केवल गाजा में 10 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं, जबकि इजरायल में 1400 मौत हुई हैं।

गाजा में इजरायली सेना के निशाने पर चार प्रमुख जगहें

इजरायली सेना के प्रवक्ता ने कहा है कि उसके सैनिक हथियारों और एयरक्राफ्ट्स के जरिए हमास पर हमले कर रहे हैं। मुख्य तौर पर चार जगहें निशाने पर हैं। एक हमास के कमांड सेंटर, दो लॉन्चिंग पोजिशन, तीन सुरंगे और चौथे एंटी टैंक मिसाइल लॉन्चिंग सेंटर। इजरायली सेना ने अपने सैन्य अभियानों का एक वीडियो भी जारी किया है। वीडियो में उसने अपने वायु सेना और नौ सेना बलों द्वारा किए गए हमलों को दिखाया है। उधर हमास ने वीडियो जारी करके बताया कि कैसे उसके लड़ाके इजरायली सेना से लोहा ले रहे हैं। हमास की मिलिट्री विंग ने गाजा में इजरायली टैंक पर हमले का भी एक वीडियो जारी किया है।

गाजा के सबसे बड़े अस्पताल के पास इजरायल का हमला

आर-पार की जंग में गाजा पट्टी की जमीन पर उतरी इजरायली सेना हर उस जगह पर हमले कर रही, जहां आतंकियों के ठिकाने संभव हो सकते हैं। इसी कड़ी में इजरायल ने गाजा के सबसे बड़े अस्पताल अल-शिफा के आसपास हमला किया है। इस हमले के बाद वहां अस्पताल के बाहर लोग खून से लथपथ पड़े है। चीख रहे हैं। कई तबाह कारों और एबुलेंसों के बीच इजरायली हमले में घायल लोग यहां वहां पड़े हैं। हर तरफ चीख पुकर मची है। कुछ लोग घायलों को लेकर अस्पताल की तरफ दौड़ रहे हैं।

पाकिस्तान के मियांवाली एयरबेस पर आतंकी हमला

–दीवार फांदकर घुसे 9 आतंकी ढेर; 3 एयरक्राफ्ट और फ्यूल टैंकर तबाह

लाहौर । पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में मियांवाली एयरबेस पर शनिवार सुबह आतंकी हमला हुआ। हथियारों से लैस आत्मघाती हमलावर एयरफोर्स के ट्रेनिंग बेस में घुस गए। इस दौरान एयरबेस के पास गोलियों और धमाके की तेज आवाजें सुनाई दीं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, तहरीक-ए- जिहाद पाकिस्तान ने हमले की जिम्मेदारी ली है। आतंकी सीढ़ी के जरिए दीवार फांदकर एयरबेस में दाखिल हुए थे।

पाकिस्तानी एयरफोर्स ने कहा- समय रहते हमारे सैनिकों ने एक बड़े हमले को नाकाम कर दिया। एयरबेस के अंदर और आसपास के इलाकों में फाइनल ऑपरेशन चलाया गया। इसमें 9 आतंकवादियों को मार गिराया है। मुठभेड़ के दौरान एक फ्यूल टैंकर और 3 एयरक्राफ्ट तबाह हो गए।

पाकिस्तान में 24 घंटों में 2 आतंकी हमले

पाकिस्तान पर 24 घंटे में 2 आतंकी हमले हुए हैं। इससे पहले शुक्रवार रात ग्वादर में सेना की 2 गाड़ियों पर आतंकी हमला हुआ था। इसमें 14 सैनिक मारे गए थे। हमले के वक्त सैनिक पसनी से ओरमारा की तरफ जा रहे थे। इसके बाद से इलाके में आतंकियों की तलाश की जा रही है। इसके अलावा, शुक्रवार को ही खैबर पख्तूनख्वा के कई इलाकों में इंटेलिजेंस के आधार पर चलाए गए ऑपरेशन्स में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के आत्मघाती हमलावर सहित दो आतंकवादी मारे गए। जबकि दो घायल हो गए।

हमास को मिल गया किम का साथ, उत्तर कोरिया के हथियारों से होगा इजरायल में नरसंहार?

प्योंगयांग (एजेंसी)। गाजा में इजरायल के हमलों से घिरा हमास किम जोंग के हथियारों से पलटवार करने वाला है। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग हमास को हथियारों का जखीरा देने वाले हैं। दक्षिण कोरिया खुफिया एजेंसी ने ये दावा किया है। दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय खुफिया एजेंसी के मुताबिक जंग का फायदा उठाने के लिए किम जोंग मीडिल ईस्ट में हथियार बेच सकते हैं। किम जोंग ने अधिकारियों को फिलिस्तिनियों का सपोर्ट करने के लिए भी कहा है। अगर ये दावा सच है तो हमास को इस युद्ध में बड़ी मदद मिल सकती है।

वॉल स्ट्रीट जर्नल की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि उत्तर कोरिया ने पहले भी हमास को एंटी टैंक रॉकेट लॉन्चर बेचे हैं और कहा है कि ऐसी संभावना है कि प्योंगयांग गाजा में युद्ध के बीच और अधिक हथियार निर्यात करने की कोशिश करेगा। योनहाप न्यूज़ की एक अलग रिपोर्ट के अनुसार, यह दावा दक्षिण कोरियाई सांसदों द्वारा भी किया गया था। दक्षिण कोरियाई सेना ने कहा कि 7 अक्टूबर के हमले की तस्वीरों और वीडियो के आधार पर ऐसा लगता है कि हमास के आतंकवादी उत्तर कोरियाई हथियारों का इस्तेमाल कर रहे थे। दक्षिण कोरियाई अधिकारी, उत्तर कोरियाई हथियारों के दो विशेषज्ञ और इजराइल द्वारा युद्ध के मैदान में पकड़े गए हथियारों पर एसोसिएटेड प्रेस की एक रिपोर्ट में हमास द्वारा प्योंगयांग के एफ-7 रॉकेट-प्रोपेल्ड ग्रेनेड का उपयोग करने की ओर इशारा किया गया है, जो कंधे से दागा जाने वाला एक हथियार है जिसे लड़ाकू आमतौर पर बख्तरबंद वाहनों के खिलाफ इस्तेमाल करते हैं। मैट श्रोएडर, स्मॉल आर्म्स सर्वे के एक वरिष्ठ शोधकर्ता, जिन्होंने प्योंगयांग के हल्के हथियारों के लिए एक गाइड लिखा था, ने कहा कि हमास ने रॉकेट-प्रोपेल्ड ग्रेनेड के साथ लॉन्चर के साथ अपने लड़ाकू विमानों की तस्वीरें प्रकाशित कीं, जिसके वारहेड पर एक विशिष्ट लाल पट्टी थी, और अन्य डिज़ाइन तत्व मेल खाते थे।

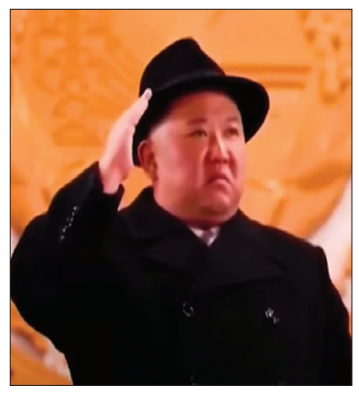

इजरायल और हमास की जंग में हिजबुल्लाह ने दी धमकी

तेलअवीव (एजेंसी)। इजरायल और हमास के बीच चल रही जंग में अब हिजबुल्लाह की सीधी इंट्री हो गई है। पहली बार है जब लेबनानी चरमपंथी ग्रुप हिजबुल्लाह के नेता हसन नसरल्लाह ने गाजा पर हमलों को लेकर भाषण दिया है। जिसमें उन्होंने इजरायल के साथ-साथ अमेरिका को भी चेतावनी दी है। दरअसल, 3 नवंबर को नसरल्लाह ने अपने भाषण के दौरान इस बात की खुलकर घोषणा नहीं की कि हिजबुल्लाह पूरी तरह से इज़राइल-हमास युद्ध में शामिल हो गया है, हालांकि उन्होंने इजरायल को हिज्बुल्लाह के खिलाफ कोई आक्रामक हमला न करने की चेतावनी दी। इसके साथ ही उन्होंने अमेरिका पर भी निशाना साधा। बता दें कि 7 अक्टूबर को दक्षिणी इजरायल पर हमास के घातक हमले के बाद उनकी यह पहली टिप्पणी है।

हसन नसरल्लाह ने अपनी स्पीच में कहा कि मैं इजरायलियों को साफ कर देना चाहता हूं कि अगर वे लेबनान के खिलाफ हमले करने पर विचार कर रहे हैं तो यह आपके उनके पूरे अस्तित्व में की गई सबसे मूर्खतापूर्ण गलती होगी।

बता दे कि इससे पहले संयुक्त राज्य अमेरिका ने हिज्बुल्लाह और उसके संरक्षक ईरान को युद्ध में प्रवेश करने के खिलाफ चेतावनी दी है और भूमध्य सागर में युद्धपोत भेजे हैं। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए नसरल्लाह ने कहा कि इससे कुछ होने वाला नहीं है, हम डरने वाले नहीं हैं। हिजबुल्लाह के नेता ने कहा कि फिलिस्तीनी लोग 75 साल से ज्यादा समय से परेशानी का सामना कर रहे हैं, लेकिन पिछले दिनों ये परेशानी काफी बढ़ गई है. इजराजल का क्रूर शासन फिलिस्तीन पर लगातार हमले कर रहा है. ऐसे में हालात और बिगड़ सकते हैं। बेरूत के आशूरा स्क्वायर में एक विशाल भीड़ को संबोधित करते हुए लेबनानी शिया चरमपंथी संगठन के महासचिव नसरल्लाह ने चार सप्ताह पहले दक्षिणी इजरायल में हमास के हमले की प्रशंसा की, जिसमें 1,400 से अधिक लोग मारे गए थे। हालांकि उन्होंने इस दौरान इस बात का भी जिक्र किया कि उनके मिलिशिया का इसमें कोई हिस्सा नहीं था।

दरियादिली: पाकिस्तान से बेदखल किए गए अफगानियों के लिए शेल्टर होम बनाएगा तालिबान

काबुल (एजेंसी)। पाकिस्तान से निकाले जा रहे अफगानी शरणार्थियों के प्रति तालिबान काफी दरियादिली दिखा रहा है। शरणार्थियों की स्थिति देखते हुए उसके मन में रहम का भाव पैदा हो गया है। शायद यही कारण है कि तालिबान ने अफगानी शरणार्थियों के लिए शेल्टर होम खोलने की घोषणा कर दी है। काबुल में तालिबान शासन ने घोषणा की है कि वह पाकिस्तान से घर लौटने वाले हजारों अफगान शरणार्थियों के लिए होम शेल्टर बनाएगा, क्योंकि पाकिस्तान ने बिना दस्तावेज वाले प्रवासियों को देश से बाहर भेजने के लिए चरणबद्ध प्रक्रिया तैयार की है।

कार्यवाहक शरणार्थी और प्रत्यावर्तन मंत्री खलील रहमान हक्कानी ने पाकिस्तान की बॉर्डर से लगे तोरखम क्रॉसिंग पॉइंट की अपनी हालिया यात्रा के दौरान होम शेल्टर को बनवाने निर्देश दिया। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले कुछ दिनों में 1,50,000 से अधिक अफगान शरणार्थी तोरखम के रास्ते पाकिस्तान से घर लौट आए हैं।बता दे कि शरणार्थियों के लिए पाकिस्तान छोड़ने की समय सीमा 1 नवंबर को खत्म हो गई है। इस बीच, देश में अभी भी मौजूद सैकड़ों गैर-दस्तावेजी अफगान शरणार्थियों को पकड़ने के लिए पूरे पाकिस्तान में कार्रवाई चल रही है। पाकिस्तान ने अपने कठोर फैसले पर पुनर्विचार करने के लिए संयुक्त राष्ट्र, अधिकार समूहों और पश्चिमी देशों के आह्वान को नजरअंदाज कर दिया है और कहा है कि सुरक्षा चिंताओं के बीच वह वही कर रहा है जो उसे करना है।

तालिबान शासन के मुख्य प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा कि तोरखम में अधिकारी 3 नवंबर को लौटने वालों के लिए 10,000 लंच और 30,000 डिनर की तैयारी कर रहे हैं।पाकिस्तान ने मेजबान देश में दशकों तक रहने के बाद 1.7 मिलियन बिना दस्तावेज वाले अफगान शरणार्थियों को उनके देश अफगानिस्तान में वापस भेजने का फैसला किया, जबकि तालिबान शासन ने इस्लामाबाद से फैसले पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है। बता दें ?कि 2 लाख से ज्यादा अफगान शरणार्थी, जिनमें से अधिकांश तोरखम सीमावर्ती शहर के माध्यम से और कुछ स्पिन बोल्डक जैसे दूसरे क्रॉसिंग प्वाइंट्स के जरिए कथित तौर पर पिछले महीने में अपने वतन लौट आए हैं।

नेपाल में भूकंप से मरने वालों की संख्या 250 के पार, 150 गंभीर, राहत एवं बचाव कार्य जारी

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल में आए भूकंप ने भारी तबाही मचाई है। हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। राहत एवं बचाव कार्य युद्ध स्तर पर चल रहे हैं। भूकंप से गिरे मलबे में अभी भी लोग दबे हुए है उन्हे निकालने के प्रयास किए जा रहे है। वहीं घायलों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। प्रशासनिक अधिकारी लगातार निरीक्षण कर रहे हैं। बता दें कि शुक्रवार रात नेपाल में 6.4 की तीव्रता से आए भूकंप ने भारी तबाही मचाई है। इसके झटके भारत की राजधानी दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में महसूस किए गए।

नेपाल में भूकंप से जानमाल को काफी नुकसान हुआ है। इस घटना में लगभग 250 लोगों की मौत होने की खबर है। जबकि लगभग 150 की हालत गंभीर बताई जा रही है। रुकुम पश्चिम में 40 और जाजरकोट में 38 लोग मारे गए हैं। रुकुम पश्चिम के डीएसपी नामराज भट्टराई और जाजरकोट के डीएसपी संतोष रोक्का के हवाले से ये जानकारी सामने आई है। शनिवार सुबह 3 बजे तक की रिपोर्ट के अनुसार, जाजरकोट और पश्चिमी रुकुम में सबसे अधिक नुकसान हुआ है। अकेले जाजरकोट में 44 मौतें हुई हैं। जाजरकोट जिले के पुलिस उपाधीक्षक संतोष रोका ने बताया कि मृतकों में नलगढ़ नगर पालिका की उपमहापौर सरिता सिंह भी शामिल हैं। जजरकोट में 55 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। उनमें से पांच को सुरखेत के करनाली प्रांत अस्पताल ले जाया गया है।

नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दहल 'प्रचंड' शनिवार सुबह एक चिकित्सकीय दल के साथ घटना स्थल रवाना हुए। उन्होंने बताया कि नेपाल सेना और नेपाल पुलिस को बचाव कार्य में लगाया गया है।प्रारंभिक आंकड़ों से पता चलता है कि पश्चिमी रुकुम में मरने वालों की संख्या 40 तक पहुंच गई है। पश्चिमी रुकुम जिले के पुलिस उपाधीक्षक नमराज भट्टाराई ने इसकी जानकारी दी है। आथबिस्कोट नगर पालिका में 38 लोगों के मरने की सूचना है। सानीभेरी ग्रामीण नगर पालिका में पांच और लोगों की मौत हुई है। शुक्रवार की रात करीब 11 बजकर 32 मिनट पर आए भूकंप के कारण लोगों को अपने घरों से बाहर निकलना पड़ा। भूकंप का केंद्र नेपाल में अयोध्या से लगभग 227 किलोमीटर उत्तर और काठमांडू से 331 किलोमीटर पश्चिम उत्तर-पश्चिम में 10 किलोमीटर की गहराई में था। नेपाल में एक महीने में तीसरी बार तेज भूकंप आया है।

गुरुग्राम के निवासी इंद्रजीत सिंह ने कहा, जब हम टेलीविजन देख रहे थे, तभी काफी देर तक झटके महसूस हुए। गाजियाबाद के रहने वाले गोपाल ने कहा कि झटके 15 सेकंड से ज्यादा देर तक महसूस हुए। उन्होंने कहा, मुझे खिड़की के शीशे की खड़खड़ाहट भी सुनाई दी। भूकंप के झटके दिल्ली से सटे नोएडा और ग्रेटर नोएडा के कुछ हिस्सों में भी महसूस किए गए, जिसके चलते ऊंची इमारतों में रहने वाले कई लोग बाहर निकल आए। नोएडा सेक्टर-76 में एक ग्रुप हाउसिंग सोसाइटी के निवासी प्रत्यूष सिंह ने कहा, वास्तव में बहुत तेज झटके महसूस हुए। यह एक बेहद डरावना एहसास था। भूकंप के झटके उत्तर प्रदेश के लखनऊ, बस्ती, बाराबंकी, फिरोजाबाद, अमेठी, गोंडा, प्रतापगढ़, भदोही, बहराइच, गोरखपुर और देवरिया जिलों के अलावा बिहार के कटिहार, मोतीहारी तथा पटना में भी महसूस किए गए।

दक्षिण अफ्रीका के सामने होगी भारत की असली परीक्षा

कोलकाता (एजेंसी)। विश्व कप के अपने आठवें मैच में भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेलेगी। टूर्नामेंट का 37वां मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेला जाएगा। टीम इंडिया की नजर लगातार आठवीं जीत पर होगी। वह इस विश्व कप में एक भी मैच नहीं हारी है। दूसरी ओर, दक्षिण अफ्रीका ने दमदार प्रदर्शन किया है। उसने सात में से छह मैच जीते हैं। उसे एकमात्र हार नीदरलैंड के खिलाफ मिली थी। उसकी बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों काफी खतरनाक है। उसने पिछले चार मैचों में जीत हासिल की है। ऐसे में मजबूत अफ्रीकी टीम के सामने भारतीय खिलाड़ियों की असली परीक्षा होगी।

भारतीय टीम सात मैच में सात जीत के साथ अंक तालिका में पहले स्थान पर है। उसके खाते में 14 अंक है। वहीं, दक्षिण अफ्रीका सात मैच में छह जीत के साथ दूसरे नंबर पर है। उसके 12 अंक हैं। कोलकाता में मैच को जीतने वाली टीम अंक तालिका में शीर्ष पर रहेगी। अगर भारत जीतता है तो उसके 16 अंक हो जाएंगे। वहीं, दक्षिण अफ्रीका जीतता है तो उसके 14 अंक होंगे। उसका नेट रनरेट (+2.290) भारत के नेट रनरेट (+2.102) से बेहतर है।

भारत बनाम दक्षिण अफ्रीका हेड टू हेड

विश्व कप में अब तक दोनों टीमों के बीच पांच मुकाबले खेले गए हैं। अफ्रीकी टीम को तीन जीत मिली है। उसने 1992, 1999 और 2011 में जीत हासिल की है। दूसरी ओर, भारत को जीत मिली है। टीम इंडिया ने उसे 2015 और 2019 में हराया है। वनडे में ओवरऑल रिकॉर्ड की बात करें तो दोनों टीमों के बीच अब तक 90 मैच हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका ने 50 जीते हैं। भारत को 37 मैचों में जीत मिली है। तीन मुकाबलों में नतीजा नहीं आया।

जोकोविच ने गत चैम्पियन रूने को हराया, पेरिस मास्टर्स के सेमीफाइनल में पहुंचे

पेरिस (एजेंसी)। शीर्ष रैंकिंग पर काबिज नोवाक जोकोविच ने करीब तीन घंटे तक चले मुकाबले में गत चैम्पियन होल्गर रूने को हराकर पेरिस मास्टर्स के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। जोकोविच ने इस तरह पिछले साल फाइनल में रूने से मिली शिकस्त का बदला चुकता किया।

जोकोविच ने शुक्रवार को क्वार्टरफाइनल में रूने पर 7-5 6-7(3) 6-4 से जीत दर्ज की। पेरिस मास्टर्स के छह बार के चैम्पियन जोकोविच नौवीं दफा पेरिस मास्टर्स के अंतिम चार में पहुंचे और उन्होंने लगातार 16 मैच में जीत की लय जारी रखी। अब वह फाइनल में जगह बनाने के लिए पांचवें वरीय आंद्रे रूबलेव से भिड़ेंगे। रूबलेव ने गुरूवार को एलेक्स डि मिनॉर को 4-6 6-3 6-1 से हराया। मिनॉर को यानिक सिनर के टूर्नामेंट से हटने के बाद वॉकओवर मिला था।

इससे पहले ग्रिगोर दिमित्रोव ने हुबर्ट हर्कास्ज पर 6-1 4-6 6-4 की जीत से सेमीफाइनल में जगह पक्की की। इस तरह 32 वर्षीय दिमित्रोव अपने करियर में दूसरी बार इस इंडोर टूर्नामेंट के अंतिम चार में पहुंचे। बुल्गारिया के दमित्रोव का सामना अब सेमीफाइनल में सातवीं वरीयता प्राप्त स्टेफानोस सिटसिपास से होगा जिन्होंने कारेन खाचानोव को 6-3, 6-4 से हराकर अपने करियर की 30वीं जीत दर्ज कर लगातार तीसरी बार इस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

कप्तान टेम्बा बावुमा ने मैच से पूर्व कहा -हालात देखकर तय करेंगे प्लेइंग-11

कोलकाता (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान टेम्बा बावुमा ने मैच से पूर्व शनिवार को कहा कि वह हालात देखकर प्लेइंग-11 तय करेंगे। टेम्बा ने कहा कि उनके बल्लेबाजों को ईडन गार्डंस पर रविवार को होने वाले मैच में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। इस विश्व कप की शीर्ष दो टीमें लीग चरण में पहली बार आमने सामने होंगी। गौरतलब है कि भारत ने अभी तक सभी सात मैच जीते हैं जबकि दक्षिण अफ्रीका ने छह मैच जीते हैं और एकमात्र पराजय नीदरलैंड के खिलाफ झेली। भारत ने पिछले मैच में श्रीलंका को 302 रन से और दक्षिण अफ्रीका ने न्यूजीलैंड को 190 रन से हराया। कप्तान बावुमा ने मैच से एक दिन पहले प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि हमारी टीम में ईडन गार्डन पर खेलने को लेकर काफी रोमांच है। उन्होंने कहा कि इस मैदान का अपना इतिहास रहा है और यहां भारत के खिलाफ खेलना रोचक होगा। हम भारत जैसी टीम के खिलाफ खुद को परखने को लेकर बेताब हैं।

इस 33 वर्षीय खिलाड़ी टेम्बा ने कहा कि भारतीय गेंदबाज बहुत ज्यादा ढीली गेंदें नहीं डालते हैं। जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, मोहम्मद शमी सभी काफी आक्रामक गेंदबाज हैं और नयी गेंद में उनके खिलाफ रन बनाना आसान नहीं है। पहले पावरप्ले में उन्हें संभलकर खेलना होगा। इनके अलावा स्पिनर कुलदीप यादव ने भी बीच के ओवरों में विकेट लिए हैं। रविंद्र जडेजा और कुलदीप मिलकर अच्छी गेंदबाजी कर रहे हैं। इन दोनों के खिलाफ बीच के ओवरों में बल्लेबाजी चुनौतीपूर्ण होगी। कप्तान टेम्बा ने कहा कि वैसे हम स्पिनरों को बखूबी खेलते आए हैं। लेकिन दूसरों की तुलना में उनका गेंदबाजी आक्रमण बेहतर है और हमें अपना सर्वश्रेष्ठ 'ए गेम दिखाना होगा।

गौरतलब हे कि कप्तान टेम्बा ने अब तक इस टूर्नामेंट में पांच पारियों में सिर्फ 111 रन ही बनाए हैं। बावुमा ने अपने खराब फॉर्म के बारे में कहा, 'आप हमेशा टीम के लिए योगदान देना चाहते है। इस समय बाकी बल्लेबाज जबर्दस्त फॉर्म में हैं। मैने कुछ साझेदारियां निभाई है लेकिन बड़ी पारी खेलना चाहूंगा। खुद पर भरोसा बनाए रखने की जरूरत है और जल्दी ही अच्छी पारी खेलूंगा। अभी टूर्नामेंट में काफी क्रिकेट बाकी है और मुझे यकीन है कि जल्दी ही योगदान दूंगा। भारत के खिलाफ 'चोक करने से बचने की रणनीति पर बावुमा ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, 'दो फॉर्म में चल रही टीमें एक दूसरे के खिलाफ खेल रही है। क्या भारत के हारने पर भी आप चोकिंग जैसा शब्द प्रयोग करेंगे।

400 रन बनाने के बाद भी डकवर्थ-लुइस मैथड से हारा न्यूजीलैंड, जमान के शतक से पाकिस्तान जीता

बेंगलुरु (एजेंसी)। बारिश और फखर जमान ने पाकिस्तान को वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड पर डकवर्थ-लुइस मैथड के तहत 21 रन से जीत दिला दी। शनिवार को मिली इस जीत से पाकिस्तान की टीम पॉइंट्स टेबल में 5वें नंबर पर आ गई है और सेमीफाइनल की रेस में बरकरार है। फखर जमान ने 81 बॉल पर नाबाद 126 और कप्तान बाबर आजम ने 63 बॉल पर नाबाद 66 रन बनाए। बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में टॉस हारकर बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड ने 50 ओवर में 6 विकेट पर 401 रन का स्कोर खड़ा किया। जवाब में पाकिस्तान ने 21.3 ओवर में एक विकेट पर 160 रन बनाए थे, तभी बारिश आ गई और टारगेट रिवाइज करके 41 ओवर में 342 रन कर दिया गया। यहां पाकिस्तानी टीम को 19.3 ओवर में 182 बनाने थे। दोबारा खेल शुरू होने पर पाकिस्तान ने अगले 3.3 ओवर में 40 रन बना डाले। 25.3 ओवर के बाद जब दोबारा खेल रुका तब पाकिस्तान ने एक विकेट पर 200 रन बना लिए थे। इसके बाद मुकाबला नहीं हो सका। डकवर्थ लुईस मैथड से न्यूजीलैंड पर जीत के बाद पाकिस्तान के 8 पॉइंट्स हो गए। टीम पॉइंट्स टेबल में पांचवें नंबर पर पहुंच गई है, जबकि न्यूजीलैंड इतने ही पॉइंट्स के साथ चौथे नंबर पर है क्योंकि उनका रन रेट बेहतर है। पाकिस्तान का एक मैच अब इंग्लैंड से बाकी है, इसे जीतने पर टीम के 10 पॉइंट्स हो जाएंगे। वहीं न्यूजीलैंड अगर श्रीलंका के खिलाफ अपना आखिरी मुकाबला हार जाए तो पाकिस्तान चौथे नंबर पर फिनिश नॉकआउट स्टेज में क्वालिफाई कर जाएगा।

हार्दिक पंड्या वर्ल्ड कप से हुए बाहर, टीम इंडिया को बड़ा झटका

नई दिल्ली। हार्दिक पंड्या के वर्ल्ड कप से बाहर होने के कारण टीम इंडिया को बड़ा झटका लगा है। टीम के ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या के वर्ल्ड कप से बाहर होने का करण एंकल में चोट लगना बताया जा रहा है। गौरतलब है कि पुणे में बांग्लादेश के खिलाफ मुकाबले में हार्दिक के एंकल में चोट लगी थी। अपनी गेंदबाजी पर ही शॉट रोकने की कोशिश में उन्हें चोट लगी थी। इसके बाद से वह टीम से बाहर चल रहे थे। हालांकि उम्मीद जताई जा रही थी कि हार्दिक सेमीफाइनल तक वापस आ जाएंगे। लेकिन अब रिपोर्ट्स आई है कि वह टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या की जगह टीम इंडिया में तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा को जगह मिली है। गौरतलब है ?कि जसप्रीत बुमराह की तरह प्रसिद्ध भी करीब एक साल तक चोटिल थे। लेकिन आयरलैंड दौरे पर उनकी भी वापसी हुई थी। वह एशिया कप में भी भारतीय टीम का हिस्सा थे। वर्ल्ड कप से पहले भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया से वनडे सीरीज खेली थी। उसमें भी प्रसिद्ध टीम का हिस्सा थे। प्रसिद्ध कृष्णा ने भारत के लिए अभी तक 17 वनडे मैच खेले हैं। इसमें उनके नाम 29 विकेट हैं। उनका बेस्ट प्रदर्शन 12 रन देकर 4 विकेट हैं। चोटिल होने से पहले वह टीम का नियमित हिस्सा थे। लेकिन उनके चोटिल होने के बाद मोहम्मद सिराज ने अपनी जगह पक्की कर ली। बता दें कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ इंदौर वनडे में उन्होंने लगातार दो गेंद पर मैथ्यू शॉट और स्टीव स्मिथ को आउट किया था। भारतीय टीम का वर्ल्ड कप में अगला मुकाबला साउथ अफ्रीका से होना है। यह मैच 5 नवंबर को ईडन गार्डन्स पर खेला जाएगा। 7 मैचों में 7 जीत के साथ भारतीय टीम सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर चुकी है।

पीसीबी में हो सकता है बदलाव

लाहौर। विश्वकप में इस बार पाकिस्तान क्रिकेट के खराब प्रदर्शन को देखते हुए अब बड़े बदलाव की उम्मीदें जतायी जा रही हैं। मुख्य चयनकर्ता इंजमाम उल हक ने पहले ही इस्तीफा दे दिया है। टीम के खराब प्रदर्शन की गाज अब पाक क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) प्रमुख जका अशरफ पर पड़ने की संभावना है। पिछले कुछ समय से कप्तान बाबर आजम के संदेशों को लीक करने के बाद से ही वह आलोचकों के निशाने पर हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि उन्हें पद से हटाया जा सकता है। वहीं पूर्व पाकिस्तान कप्तान शाहिद अफरीदी के पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवर अल हक से मुलाकात के भी मायने निकाले जा रहे हैं। ऐसे में संभव है कि पीसीबी में फिर बदलाव किया जाये क्योंकि अनवर ने अफरीदी को देश के खेल के मामलों में शामिल सक्रिय रूप से शामिल होने का अनुरोध किया है। इन दोनों ने क्रिकेट के कई पहलुओं पर चर्चा की है। ये मुलाकात ऐसे समय में हुई है, जब पाकिस्तानी टीम लगातार चार मैच हारकर विश्व कप सेमीफाइनल से बाहर होने की दौड़ में है। वैसे भी 5 नवंबर को अशरफ का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। उनके कार्यकाल का आगे बढ़ाये जाने की संभावना कम ही है। पाकिस्तान क्रिकेट के लिए पिछले कुछ महीने अच्छे नहीं रहे थे। अशरफ के अलावा इस साल तीन लोग पीसीबी की अध्यक्षता कर चुके हैं। जका के कार्यकाल की समाप्ति के बाद चौथा चेयरमैन नियुक्त होगा। ये पाकिस्तान के अगले चुनाव और नए प्रधानमंत्री के बनने तक रहेगा। उसके बाद प्रधानमंत्री नया अध्यक्ष नियुक्त करेंगे। द्वारा नया चेहरा नॉमिनेट करने तक पद पर रहेगा।

सौरव गांगुली के शहर में विराट कोहली के चहेते हुए दीवाने

– जन्मदिन पर 'किंग कोहली का जबर्दस्त क्रेज, चारों ओर छाई 18 नंबर की जर्सी

कोलकाता। ईडन गार्डन के आसपास भारतीय टीम की 18 नंबर की जर्सी ही चारों ओर नजर आ रही है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच रविवार को होने वाले विश्व कप मैच से पहले 'प्रिंस आफ कोलकाता सौरव गांगुली के शहर में में 'किंग कोहली का खुमार सिर चढकर बोल रहा है। दूर-दूर से उनके प्रशंसक यहां मैच देखने पहुंचे हैं। इनमें सायन सरकार जलपाईगुड़ी से, सजल बिहार के अररिया से और प्रदुम्न ओडिशा के कटक से सैकड़ों किलोमीटर का सफर तय करके यहां सिर्फ विराट कोहली को उनके जन्मदिन पर खेलते देखने पहुंचे हैं। इनमें दूर दराज से आए युवा प्रशंसकों से लेकर स्टेडियम के बाहर टीम इंडिया की जर्सी बेचने वालों तक सभी की जुबां पर रविवार को अपना 35वां जन्मदिन मना रहे कोहली का ही नाम है। जलपाईगुड़ी से अपने दस दोस्तों के साथ बस से सुबह छह बजे यहां पहुंचे सायन ने कहा कि सचिन के बाद हमें विराट कोहली ही पसंद है। वह देश का आइकन है और उसके जैसा कोई दूसरा नहीं है। विराट एक खिलाड़ी नहीं बल्कि हमारे लिये इमोशन है। सिलीगुड़ी में बैंकिंग का कोर्स कर रहे सिद्धार्थ डे ने कहा कि विराट का कोई विकल्प नहीं है। तीसरे स्थान पर उसके जैसा कोई बल्लेबाज नहीं है। हमने अपने पॉकेट मनी से पैसे बचाकर उसे यहां खेलते देखने आए हैं। उन्होंने कहा कि आईपीएल में भी आरसीबी का मैच देखने ही हम आए थे। कल तक टिकट के लिए ट्राय करेंगे वरना आपस में ही विराट का जन्मदिन मनाएंगे। हमारी यही दुआ है कि वह शतक जमाकर सचिन के रिकॉर्ड की बराबरी करे। मैदान मार्केट इलाके में भारतीय टीम की जर्सी बेच रहे मोहम्मद इमरान ने कहा कि कोहली की 18 नंबर की जर्सी की मांग सबसे ज्यादा है और उसके बाद रोहित शर्मा का नंबर है। उन्होंने कहा कि अभी तक मैं करीब 1000 जर्सी बेच चुका हूं और 80 प्रतिशत 18 नंबर जर्सी बिकी है। उनके अलावा रोहित शर्मा और जसप्रीत बुमराह की जर्सी भी लोग मांग रहे हैं।

सुल्तान जोहोर कप के सेमीफाइनल में जर्मनी से हरा भारत

मलेशिया (एजेंसी)। 3 बार का चैंपियन भारत सुल्तान जौहोर कप जूनियर हॉकी खिताब का बचाव करने में नाकाम रहा। सेमीफाइनल में दुनिया की दूसरे नंबर की टीम जर्मनी से 6-3 से हार गया। जर्मनी के लिए क्रिश्चियन फ्रांज (16वें मिनट), निकस बेरेन्ड्ट्स (29वें, 45वें), पीयर हेनरिक्स (43वें, 48वें) और स्पर्लिंग फ्लोरियन (49वें) ने गोल किए। जबकि भारत के लिए अमनदीप लाकड़ा (35वें), उत्तम सिंह (58वें) और रोहित (60वें) ने गोल दागे। भारतीय टीम ने मैच में आक्रामक शुरुआत कर जर्मनी के गोल पोस्ट पर हमला किया, लेकिन विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज टीम ने जवाबी हमला किया। बेन हैशबैक के प्रयास पर भारतीय गोलकीपर मोहित एचएस ने शानदार बचाव किया।

मैंच में जर्मनी ने शुरुआती क्वार्टर में लगातार मौके बनाए लेकिन मोहित ने अपनी सतर्कता दिखाकर कप्तान मातेओ पोलयारिक के प्रयास पर गोल नहीं होने दिया। दूसरे क्वार्टर के शुरुआत में जर्मनी के खिलाड़ियों ने भारतीय रक्षापंक्ति को छकाकर गेंद फ्रांज को दी जिन्होंने गोल करने में कोई गलती नहीं की। भारतीय खिलाड़ी क्वार्टर में गेंद में नियंत्रण करने के लिए जूझते दिखाई दिए। वहीं मध्यांतर से पहले बेरेन्ड्ट्स पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर स्कोर 2-0 कर दिया।

मध्यांतर के तीसरे क्वार्टर में भारतीय टीम कुछ हद तक वापसी करने में सफल रही। टीम ने एक के बाद एक कई पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए जिसमें से अमनदीप गोल करने में सफल रहे। लेकिन भारतीय टीम की यह खुशी ज्यादा देर बरकरार नहीं रही, क्योंकि हिनरिक्स के गोल से जर्मनी ने अपनी बढ़त मजबूत बना ली। मैच के आखिरी क्वार्टर में भी जर्मनी का दबदबा जारी रहा। हेनरिक्स ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर अपना दूसरा गोल किया। इसके तुरंत बाद बेरेन्ड्ट्स ने भी मैच का अपना दूसरा गोल दाग दिया।

मैच के 49वें मिनट में फ्लोरियन के गोल से जर्मनी ने 6-1 की मजबूत बढ़त बना ली। जर्मनी ने अब अपनी बढ़त को बनाए रखने पर ध्यान दिया जिसका फायदा उठाकर उत्तम ने लंबी दूरी के क्रास को गोल में बदला। मैच के आखिरी मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर रोहित के गोल से भारतीय टीम हार का अंतर कम करने में सफल रही। भारत शनिवार को तीसरे स्थान के प्लेऑफ में पाकिस्तान का सामना करेगा।

आयकॉनिक अंदाज में दिखी राचेल स्टुहलमैन, नेट से लिपटकर दिया पोज

नई दिल्ली। दुनिया की सबसे सेक्सी टेनिस खिलाड़ी राचेल स्टुहलमैन ने बिकनी पहनकर अनूठा पोज दिया है। उन्होंने एना का प्रतिष्ठित इवानोविक शूट फिर से दोहराया है जो उनके प्रशंसक बेहद पसंद कर रहे हैं। दरअसल सोशल मीडिया स्टार ने बिकनी पहनकर पोज दिया जिसमें वह टेनिस नेट से लिपटी दिख रही हैं। ऐसा ही तब भी हुआ था जब, 2010 में पूर्व विश्व नंबर 1 एना इवानोविच ने भी बिल्कुल ऐसा ही फोटोशूट करवाया था। बता दें कि राचेल ने पिछले साल भी प्रशंसकों को हैरान कर दिया था जब उन्होंने पूर्व विश्व नंबर 3 गैब्रिएला सबातिनी द्वारा अपनाए गए लुक को दोहराया था। रेचेल को सुपरमॉडल भी कहा जाता था। उन्हें अक्सर टेनिस में सबसे सेक्सी प्रभावशाली महिला भी माना जाता है। रेचेल ने इवानोविच के खेल सफर को अपने लिए प्रेरक बताया। उन्होंने फोटोशूट में एक पीले रंग की पोशाक के अलावा गुलाबी बिकनी भी पहनी है जिसे देखकर फैंस बेहद उत्साहित हैं। इस पोज में फैंस जहां उन्हें सबसे सुंदर टेनिस प्लेयर का टैग दे रहे हैं तो वहीं, कुछेक फैंस ने इसे इवानोविक वाले फोटोशूट से भी बेहतर बताया। रेचेल ने स्विमसूट एसआई को बताया कि तस्वीरें देखकर मुझे याद आता है जब मैं छोटी थी। तो निश्चित रूप से इस टेनिस फोटोशूट से अधिक आकर्षक होती थी। मुझे ऐसा लगा जैसे यह मेरे लिए ही था। मैं एना की प्रशंसा करती हूं और मुझे अच्छा लगता है कि वह कोर्ट पर योद्धा की तरह खेलीं। इस तरह के प्रतिष्ठित फोटोशूट को दोबारा बनाना और उन्हें एक छोटी सी श्रद्धांजलि देना वाकई मजेदार था। रैचले के फैसले से प्रशंसक भी उतने ही खुश थे, उन्होंने इसे खूबसूरत शूट सुंदर और सेक्सी बहुत प्यारा और जीत-जीत का लेबल दिया। बता दें कि रेचल मशहूर गोल्फ इंफ्लूएंसर पेजे स्पिरानाक की बड़ी प्रशंसकों में से एक हैं।

ईसीबी से केंद्रीय अनुबंध नहीं मिलने के कारण डेविड विली ने लिया संन्यास

अहमदाबाद (एजेंसी)। इंग्लैंड के हरफनमौला डेविड विली ने राष्ट्रीय टीम से अलविदा कह दिया है। उन्होंने शुक्रवार को कहा कि बोर्ड (ईसीबी) द्वारा उन्हें केंद्रीय अनुबंध नहीं दिया जाना 'ताबूत में आखिरी कील की तरह था, जिससे 33 साल की उम्र में राष्ट्रीय टीम को अलविदा कहने का उनका फैसला काफी आसान हो गया। मौजूदा क्रिकेट विश्व कप 2023 में गत चैंपियन इंग्लैंड के निराशाजनक प्रदर्शन के बीच विली ने बुधवार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संन्यास की घोषणा की। उनका यह फैसला इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के 2023-24 चक्र के लिए उन्हें केंद्रीय अनुबंध नहीं देने के फैसले के बाद आया है। बोर्ड के फैसले से नाराज विली ने कहा कि मेरे लिए वह (केंद्रीय अनुबंध की अनदेखी) शायद ताबूत में आखिरी कील थी, और इसने मेरे निर्णय को बहुत ही आसान बना दिया। विली ने बताया कि अनुबंध को लेकर फैसला पहले ही हो चुका था और जब मैं लॉर्ड्स में टीम में शामिल हुआ तो मुझे पता था कि मैं एकमात्र ऐसा खिलाड़ी हूं जिसके पास अनुबंध नहीं था। विली ने बताया कि यह मुश्किल समय था। उन्होंने कहा कि उस दौरान मैं परेशान, क्रोधित और निराश था। लेकिन मैं उनके दृष्टिकोण का सम्मान करता हूं। यह जरूरी नहीं कि मैं उनके फैसले से सहमत रहूं। विली ने बुधवार को घोषणा की थी कि वह विश्व कप की समाप्ति के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लेंगे। उन्होंने हालांकि कहा था कि उनका फैसला विश्व कप में टीम के खराब प्रदर्शन से प्रभावित नहीं है।

रोहित शर्मा ने नन्हें फैन को गिफ्ट किया अपना जूता, वीडियो वायरल

मुंबई। सोशल मीडिया पर इन दिनों रोहित शर्मा का एक वीडियो खूब तेजी से वायरल हो रहा है। उस वीडियो में रोहित शर्मा एक छोटे बच्चे को अपना जूता यानी शूज देते हुए नजर आते हैं। उनकी इस दरियादिली की खूब तारीफ हो रही है। हिटमैन हमेशा फैंस को अपना कीमती वक्त देते हुए नजर आते हैं। गौरतलब है कि उनका बल्ला इस वर्ल्ड कप में जमकर बोल रहा है। रोहित ने इस वर्ल्ड कप में अब तक 7 मैचों में 57 की औसत से 402 रन बनाए हैं। भारतीय टीम ने टॉस गंवाकर पहले बल्लेबाजी करते हुए तहलका मचा दिया। उन्होंने 8 विकेट पर 357 रन बना डाले। शुभमन गिल (92), विराट कोहली (88) और श्रेयस अय्यर (82) ने टीम के लिए अहम पारियां खेली। पहाड़नुमा लक्ष्य देने के बाद भारतीय गेंदबाजों ने श्रीलंकाई बल्लेबाजी युनिट की धज्जियां उड़ा दी। सिर्फ 19.4 ओवर में श्रीलंका को 55 रन पर ढेर कर दिया। इस दौरान मोहम्मद शमी ने सर्वाधिक 5 विकेट लिए। मोहम्मद सिराज को 3 पर ही सफलता मिली। वहीं जसप्रीत बुमराह और रविंद्र जडेजा ने 1-1 विकेट लिया।

भारतीय क्रिकेट टीम के लिए आईसीसी वनडे वर्ल्ड कप 2023 अब तक किसी सुनहेरे सपने से कम नहीं रहा है। वह एक के बाद एक लगातार मैच जीत रहे हैं। भारत ने विरोधियों के होश उड़ा रखे हैं। टीम इंडिया ने बीते गुरुवार को श्रीलंका के खिलाफ तहलका मचा दिया। उन्होंने रिकॉर्ड 302 रन से श्रीलंका को मात दी। रोहित ने वर्ल्ड कप में यह लगातार 7वां मैच जीता। अब तक भारत विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड और श्रीलंका को हरा चुकी है। श्रीलंका को हराने के बाद भारतीय टीम सेमीफाइनल में पहुंचने वाली पहली टीम बन गई है। उनको हराना अब मुश्किल नहीं नामुमकिन लग रहा है। वहीं इस ऐतिहासिक जीत के बाद कप्तान रोहित शर्मा वानखेड़े स्टेडियम में फैंस से मिलते नजर आए।

सेमीफाइनल में पहुंचे तो भारतीय टीम को हरा देंगे : वसीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्वकप क्रिकेट में इस बार पाकिस्तान का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है और उसके लिए सेमीफाइनल में जगह बनाना भी मुश्किल हो रहा है। उसे शुरुआती लीग मुकाबले में ही भारतीय टीम से करारी हार झेलनी पड़ी थी। इसके बाद भी पाक खिलाड़ियों की अकड़ कम होने को नाम नहीं ले रही है। अब पाक के ऑलराउंडर इमाद वसीम ने कहा कि हमारी टीम अगर सेमीफाइनल में पहुंची तो भारतीय टीम को हरा देगी। विश्वकप में आज तक भारतीय टीम एक बार भी पाक से नहीं हारी है। अब तक हुए सभी 8 मैचों में भारतीय टीम को जीत मिली है। इस टूर्नामेंट में भी . भारत ने पाक को सात विकेट से हराया है।

एक कार्यक्रम के दौरान वसीम ने कहा कि मेरी इच्छा है कि पाक टीम सेमीफाइनल में भारत को वैसे ही हराए, जैसे हमने 2021 टी20 विश्व कप में भारत को हराया था। तब कई सारे खिलाड़ी ऐसा चाहते हैं। साल 2021 के टी20 विश्व कप में पाकिस्तान ने भारत को 10 विकेट से हराया था। यह एकदिवसीय और टी20 विश्वकप के इतिहास में पाक की भारत पर पहली जीत थी।

वहीं एक अन्य खिलाड़ी मोहम्मद आमिर ने कहा कि मैं वादा करता हूं कि अगर पाक विश्व कप के सेमीफाइनल में पहुंचता है और भारत को हरा देता है, तो मैं बिल्कुल वैसे ही डांस करूंगा, जैसे इरफान पठान ने हमारी टीम के अफगानिस्तान से हारने पर किया था। उन्होंने कहा कि मैं पठान से भी बेहतर डांस करूंगा। वहीं पूर्व ऑलराउंडर अब्दुल रज्जाक ने कहा कि हमें दुआ करनी चाहिए कि हमारी टीम सेमीफाइनल में पहुंच जाए, क्योंकि दूसरी टीमें नहीं चाहती हैं कि हम ऐसा कर सकें। रज्जाक ने कहा कि अफगानिस्तान के खिलाफ पाक को हार मिली थी, तब भारतीय क्रिकेटर क्यों डांस कर रहे थे। मुझे समझ में नहीं आया।

कामयाब लड़की के पीछे भी कहीं न कहीं एक मर्द होता है

फिल्म दिल बेचारा में एक कैंसर से जूझती स्टूडेंट तो राष्ट्र कवच ओम में एक्शन करती एजेंट और अब धक धक में बाइक चलाकर आजादी का मतलब समझती लड़की, एक्ट्रेस संजना सांघी अपनी हर फिल्म में कुछ अलग करने की कोशिश कर रही हैं। उनकी हालिया रिलीज फिल्म धक धक कम प्रमोशन के चलते बॉक्स ऑफिस पर भीड़ भले न बटोर पाई, पर तारीफ पाने में कामयाब रही।

धक धक में आपका किरदार मंजरी बाइक राइडिंग के सफर में खुद को, अपने सपनों को खोजती है। संजना ने इस फिल्म से क्या अनुभव हासिल किया?

बहुत कुछ। धक धक मेरे लिए बहुत स्पेशल फिल्म है। हिंदी सिनेमा में चार ऐसी औरतों की कहानी, जो देश के अलग हिस्सों से आई साधारण औरतें हैं, उनकी कहानी बताना बहुत बहादुरी का काम है, क्योंकि ऐसी फिल्म कमर्शियल सिनेमा के किसी मानक पर फिट नहीं बैठतीं। इसमें न तो नाच-गाना है, न कोई बड़ा हीरो है। ये हम सभी एक्टर्स के लिए बड़ी बात है कि ऐसी कहानियां लिखी जा रही हैं और बन रही हैं। ये फिल्म करते वक्त मुझे बहुत खुशी और आजादी महसूस हुई। मेरे लिए खुद यह बड़ी लर्निंग रही। जब मैं, फातिमा और दीया बाइक चलाना सीख रहे थे तो हर रोज उसमें बेहतर होने के साथ एक आत्मविश्वास बढ़ता है। आप 15 साल की संजना से यह कहते कि आप बड़ी होकर एक फिल्म में पहाड़ों में बाइक चलाओगी तो मैं हंसती, क्योंकि कुछ चीजें असंभव लगती हैं, तो ये एक सीख रही कि कुछ भी हो सकता है।

इस फिल्म की निर्माता तापसी पन्नू का कहना है कि ऐसी फिल्मों को ज्यादा चुनौतियां झेलनी पड़ती है। बजट से लेकर फीस तक में बड़ा अंतर होता है। आपकी इस पर क्या राय है?

तापसी, दीया, ये ऐसी औरतें हैं जिनकी ओर हम देखते हैं। मैं अपने करियर के बहुत शुरुआती दौर में हूं लेकिन मेरी फिल्मों को लेकर अपनी एक सेंसिबिलिटी है और उसी वजह से मैंने धक धक जैसी फिल्मों को चुन रही हूं या कर रही हूं। हां, तापसी ने सही कहा ऐसी फिल्मों में चैलेंजेस ज्यादा होते हैं। पहले बनाने के लिए और फिर उस फिल्म को लोगों तक पहुंचाने के लिए कि उसकी मार्केटिंग वैसे की जाए जैसा फिल्म डिजर्व करती है। ये मुश्किल तो है लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि जो लड़ाइयां विद्या बालन, तापसी पन्नू, दीपिका पादुकोण या अनुष्का शर्मा ने लड़ी हैं, महिलाओं की कहानियां बताने के लिए, उसका कोई मतलब नहीं है। उन्होंने हम यंग फीमेल एक्टर्स के लिए दरवाजे खोले हैं। अब ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम उसे आगे ले जाएं क्योंकि अगर हम वो लड़ाइयां नहीं लड़ेंगे तो महिलाओं की स्टोरी बड़े पर्दे पर देखने को नहीं मिलेंगी।

आपको नहीं लगता कि धक धक को भी प्रचार का मौका कम मिला? ट्रेलर भी काफी देरी से जारी किया गया?

बिल्कुल कम रहा और मुझे नहीं लगता कि ऐसा पहले कभी हुआ है कि किसी फिल्म का ट्रेलर उसके रिलीज के सिर्फ तीन या चार दिन पहले आया हो। हमें पूरे सोशल मीडिया में भी यही प्रतिक्रिया मिली कि ट्रेलर इतना लेट क्यों रिलीज किया। लेकिन दुर्भाग्य से ये फैसले हम एक्टर्स के हाथ में नहीं होते। धक धक सच्ची और अच्छी फिल्म है। हमें बेशक मार्केट करने का मौका नहीं मिला पर ओटीटी पर लोग इसे देखेंगे।

आजकल ओटीटी पर कलाकारों के लिए बड़े अच्छे किरदार गढ़े जा रहे हैं। उस ओर आपकी कितनी रुचि है?

आपने सही कहा कि ओटीटी पर जैसी कहानियां बनाई जा रही हैं, जैसे किरदार लिखे जा रहे हैं, वो हर एक्टर के लिए बहुत ही एक्साइटिंग मौका है। मेरी पहली फिल्म दिल बेचारा उन शुरुआती फिल्मों में से थी, जो ओटीटी पर आई तो ओटीटी की पहुंच कितनी दूर तक है, मैंने खुद अनुभव किया है। मेरी अगली फिल्म कड़क सिंह, जो पंकज त्रिपाठी जी के साथ है, वो ओटीटी के लिए ही है। इसके अलावा, मैं लगातार वेब सीरीज के नैरशन भी सुन रही हूं पर उन पर वक्त बहुत देना पड़ता है तो जब तक ऐसी कहानी न मिले जो दिल को छू जाए तब तक मैं कोई शो नहीं ले रही हूं। लेकिन मैं ओटीटी को लेकर बहुत ही इंट्रेस्टेड हूं।

कभी लड़की होने की वजह से आपको कमतरी का अहसास करना पड़ा है कि किसी ने कहा हो कि तुम लड़की हो, तुम ये नहीं कर सकती या नहीं समझोगी?

ओह, हर रोज, वो तो हर रोज होता है। आप सेट पर हैं या एक कॉन्फ्रेंस रूम में ब्रैंड स्ट्रैटजी डिस्कस कर रहे हैं या होटल में जाकर रात को एक कमरा लेना चाहते हैं, हर सिचुएशन में एक लेवल पर भेदभाव होता है। यह एक सचाई है कि हम एक पितृसत्तात्मक समाज में रहते हैं। मेरा मानना है कि इस चीज को नजरअंदाज करने के बजाय कुबूल कर लेना बेहतर है। तभी हम उस पर सवाल उठा पाएंगे।

टाइगर 3 के लिए मेरी एक्शन की तैयारी कम से कम दो महीने की थी

वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स की पहली महिला जासूस, टाइगर फ्रेंचाइजी की कैटरीना कैफ उर्फ जोया, एक ऐसा किरदार है जिसे आदित्य चोपड़ा ने दिखाया है कि वह हर कदम पर एक आदमी के बराबर है। वह एक खतरनाक, बुद्धिमान और क्रूर जासूस है जो कार्रवाई के मामले में किसी से भी बराबरी कर सकती है। कैटरीना ने जोया को अपना बना लिया है और निर्माताओं ने लगातार टाइगर की हर फिल्म में उनके किरदार को एक पायदान ऊपर रखा है। अभिनेत्री को ऐसे अविश्वसनीय स्टंट और हाथों से किए जाने वाले एक्शन सेटों को करने में आनंद आया है जो पहले कभी किसी महिला ने स्क्रीन पर नहीं किया है। टाइगर 3 में, कैटरीना एक्शन के दायरे को और भी आगे बढ़ाएंगी और खुलासा करेंगी कि बड़े-से-बड़े एक्शन दृश्यों को करने से पहले उन्होंने लगभग 60 दिनों तक तैयारी की है! कैटरीना कहती हैं, टाइगर 3 दिखाती है कि जब अपने परिवार या देश या मानवता को बचाने की बात आती है तो ऐसा कुछ भी नहीं है जो एक महिला नहीं कर सकती। ज़ोया जैसा किरदार लोगों को यह बताने के लिए महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि लड़कियां पालन-पोषण करने वाली होने के साथ-साथ खतरनाक रक्षक भी हो सकती हैं। वह आगे कहती हैं, मुझे अच्छा लगता है कि कैसे वह अपने धैर्य और साहस से किसी की भी बराबरी कर सकती है। वह लड़ाई से पीछे नहीं हटती और जब कार्रवाई करने की बात आती है तो वह किसी पुरुष से बेहतर नहीं बल्कि उतनी ही अच्छी हो सकती है! जोया की एक्शन शैली भी अनोखी है और वह कुछ बहुत ही जटिल एक्शन दृश्यों को आसानी से कर सकती है, जैसा कि आप ट्रेलर में देख सकते हैं! ज़ोया का मुकाबला दुश्मनों की सेना से है और वह अकेले ही लड़ती है! कैटरीना को यह बात बहुत पसंद है कि वाईआरएफ ने हर फिल्म के साथ जोया के किरदार को और अधिक उग्र बना दिया है! वह कहती हैं, मुझे एक शैली के रूप में एक्शन पसंद है और एक जासूस की भूमिका निभाना एक सपने के सच होने जैसा है!

जान्हवी कपूर ने जूनियर स्टारर देवरा के लिए पूरा किया गोवा शेड्यूल

बॉलीवुड एक्ट्रेस जान्हवी कपूर ने कोराटाला शिवा द्वारा निर्देशित एनटीआर जूनियर की फिल्म देवरा- पार्ट 1 का गोवा शेड्यूल पूरा कर लिया है। एक्ट्रेस गोवा में को-स्टार्स एनटीआर जूनियर और सैफ अली खान के साथ शूटिंग कर रही थीं। जैसे ही गोवा शेड्यूल पूरा हुआ, जान्हवी कपूर ने अपने सोशल मीडिया पर देवारा टीम के प्रति अपने लगाव को साझा किया, साथ ही अपने किरदार थंगम का परिचय भी दिया। शेयर की गई तस्वीर में वह सिंपल ट्रेडिशनल ग्रीन और ब्लू कलर की साड़ी में नजर आ रही हैं। उन्होंने कैप्शन में लिखा है- सेट, टीम को मिस कर रही हूं और थंगम की भूमिका को अपना रही हूं। हैशटैग देवरा। देवरा युवासुधा आर्ट्स और एनटीआर आर्ट्स द्वारा निर्मित है, और नंदामुरी कल्याण राम द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जिसका पार्ट 1 पूरे भारत में 5 अप्रैल, 2024 को रिलीज होगा।

विवादित रैपर शुभ पर भड़की कंगना रनोट

कैनेडियन रैपर शुभनीत सिंह उर्फ शुभ फिर एक बार विवादों से घिर चुके हैं। कुछ दिनों पहले भारत का एक विवादित मैप दिखाने पर सुर्खियों में रहे रैपर ने अब लंदन में हुए एक शो में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या का महिमा मंडन किया है। जानकारी सामने आते ही एक्ट्रेस कंगना रनोट ने उन पर भड़कते हुए इस तरह की घटना को शर्मनाक बताया है। कंगना ने हाल ही में कैनेडियन रैपर शुभ के वीडियो को रीपोस्ट करते हुए लिखा है, एक बुजुर्ग महिला की उसी के रक्षकों द्वारा हुई कायरतापूर्ण हत्या का जश्न मनाना। जब किसी पर भरोसा किया जाता है कि वो भरोसे के साथ आपकी रक्षा करेगा, लेकिन वो भरोसे और विश्वास का फायदा उठाकर उसे आपको सुरक्षा देने की बजाए आपकी हत्या का हथियार बनाता है, तो ये बहादुरी का नहीं बल्कि कायरता का शर्मनाक कदम है। एक बुजुर्ग, निहत्थी और अनजान महिला, जिसे लोगों ने नेता के रूप में चुना था, उस पर इस तरह के कायरता भरे हमले पर हर किसी को शर्मिंदा होना चाहिए। इसमें महिला मंडन करने जैसा कुछ नहीं है शुभम जी। शर्म करो। कुछ दिनों पहले ही भारत-कनाडा विवाद के बीच रैपर शुभ ने भारत का एक विवादित मैप शेयर किया था। उनके सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किए गए भारत के मैप में पंजाब और जम्मू कश्मीर नहीं था। भारत का अपमान करने पर शुभ इतने विवादों में घिर गए कि 23- 25 सितंबर तक होने वाला उनका भारत टूर कैंसिल कर दिया गया। इसी के साथ बोट कंपनी ने भी शुभ के साथ अपना कॉन्ट्रैक्ट खत्म कर दिया।

बताते चलें कि कैनेडियन-इंडियन रैपर शुभ अपने बेहतरीन पंजाबी गानों के लिए जाने जाते हैं। उनका पूरा नाम शुभनीत सिंह है। उनके गाने वी रोलिंग, चेक, वन लव काफी फेमस हैं। जल्द ही कंगना रनोट पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जिंदगी पर बन रही बायोपिक इमरजेंसी में उनका रोल करती नजर आने वाली हैं।

डायरेक्ट ओटीटी पर रिलीज होगी ईशान खट्टर की पिप्पा

शाहिद कपूर के छोटे भाई ईशान खट्टर की अगली फिल्म पिप्पा का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। बड़ी बात यह है कि यह फिल्म अब डायरेक्ट ह्अ्अ्र पर रिलीज होगी। इससे पहले मेकर्स इसे थिएटर्स में रिलीज करने की तैयारी कर रहे थे पर अब यह 10 नवंबर को प्राइम वीडियो पर रिलीज होगी। फिल्म की कहानी भारत की 45वीं कैवेलरी रेजिमेंट के कैप्टन बलराम सिंह मेहता के इर्द-गिर्द बुनी गई है। कैप्टन बलराम ने अपने भाई-बहनों के साथ 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान ईस्ट फ्रंट पर लड़ाई लड़ी थी। 2 मिनट के इस ट्रेलर में वॉर एक्शन सीन्स को ज्यादा प्रेफरेंस दी गई है। इसके अलावा कुछ फैमिली इमोशंस सीन भी दिखाए गए हैं। फिल्म का टाइटल रशियन वॉर टैंक के नाम पर रखा गया है, जो घी के खाली डिब्बे (पिप्पा) की तरह पानी पर तैरता है। इस फिल्म को राजा कृष्ण मेनन ने डायरेक्ट किया है जो इससे पहले अक्षय कुमार स्टारर एयरलिफ्ट डायरेक्ट कर चुके हैं। फिल्म में ईशान खट्टर कैप्टन बलराम सिंह मेहता के किरदार में नजर आएंगे। उनके अलावा इसमें मृणाल ठाकुर, प्रियांशु पैन्यूली और सोनी राजदान अहम रोल में नजर आएंगे।

रवि तेजा की उपस्थिति मुझे डराती थी

रवि तेजा हाल ही में पैन-इंडिया फिल्म टाइगर नागेश्वर राव से अभिनेत्री गायत्री भारद्वाज ने अपना तेलुगु डेब्यू किया। जहां फिल्म को हर तरफ से अच्छी समीक्षा मिल रही है, वहीं ऑडियंस, इंडस्ट्री और क्रिटिक गायत्री के अभिनय और गांव की लड़की के लुक की प्रशंसा करने से नहीं रुक रहे हैं। जैसा कि वह खुद को मिल रहे प्यार से गदगद है, अभिनेत्री अपने सुपरस्टार सह-कलाकार के बारे में तारीफें करती नहीं थक रही हैं।

रवि तेजा के साथ पहली बार काम करने के अपने अनुभव को साझा करते हुए, गायत्री कहती हैं, अपने करियर में पहली बार, मैं किसी सुपरस्टार के साथ काम कर रही थी। यहां दक्षिण में उनका दबदबा कुछ अलग ही है। वह जब चलते हैं तो अपने साथ एक स्टारडम लेकर चलते हैं। जब भी वह सेट पर होते हैं तो वह अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। अभिनेत्री आगे कहती हैं कि सेट पर उनका दिन कैसा बीतता था,हमारी दिनचर्या यह थी कि वह अंदर आते थे और मेरे पास खड़े हो जाते थे और मुझे अपने डायलॉग बोलने पड़ते थे। उनकी उपस्थिति मुझे डराती थी क्योंकि वह एक लार्जर दैन लाइफ अभिनेता हैं। उनके साथ अभिनय करना मेरे लिए बेहद कठिन था। लेकिन उनकी स्वीकृति मेरे लिए बहुत मायने रखती है। पूर्व मिस इंडिया, गायत्री ने संगीत वीडियो के साथ शोबिज में कदम रखा। वह कॉल और पटोला जैसे गानों में नजर आईं। उन्हें अभिनय में ब्रेक भुवन बाम की डिजिटल सीरीज़ ढिंडोरा से मिला, जहां उन्होंने एक डॉक्टर और भुवन की प्रेमिका की भूमिका निभाई। वह इश्क एक्सप्रेस और हाईवे लव का भी हिस्सा थीं।

ऋतिक रोशन ने प्रेमिका सबा आज़ाद को बर्थडे विश किया

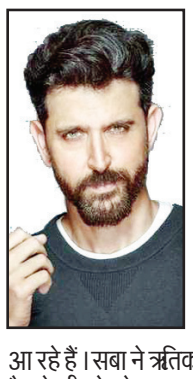

सबा आजाद बुधवार को 38 साल की हो गई हैं। बॉलीवुड स्टार ऋतिक रोशन ने अपनी प्रेमिका सबा आजाद को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। एक्टर ने तस्वीर के साथ अपनी प्रेमिका के लिए एक प्यारा सा नोट लिखा और कहा कि एक्ट्रेस-सिंगर के साथ घर जैसा महसूस होता है। ऋतिक रोशन ने बुधवार को इंस्टाग्राम पर एक प्यारी तस्वीर शेयर की। तस्वीर में दोनों एक सीढ़ी पर बैठे नजर आ रहे हैं। सबा ने ऋतिक का हाथ थामा हुआ है और दोनों कैमरे की ओर देखकर मुस्कुराते नजर आ रहे हैं। ऋतिक रोशन ने तस्वीर का कैप्शन लिखा, हम सभी उस जगह की तलाश में हैं, जहां आप खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। वह जगह जहां हम दोनों एक दूसरे के लिए अपनी फीलिंग्स शेयर कर सकते हैं। वह जगह जहां पर हम दोनों चिल्लाते हुए एक-दूसरे के लिए अपने प्यार का इजहार कर सकते हैं। इसके अलावा एक्टर ने आगे लिखा कि आपके साथ बिल्कुल घर जैसा महसूस होता है। हर नॉर्मल चीज को स्पेशल बनाना मैंने आपसे ही सीखा है। आप जैसे हो वैसे होने के लिए धन्यवाद। हम और एडवेंचर करने के लिए तैयार हैं। हैप्पी बर्थडे माय लव।